राजा पृथ्वीराज का सोकर उठना।

दूहा ॥ सुनी मत्त कनह नृपति। जगी संजोगि निवारि ॥
वीर रोस उठ्यौ न्रपति। मनु रजि रुद्र सार ॥ छं० ॥ १५६० ॥

पृथ्वीराज से सामंतों का कहना कि आप आगे बढ़िए हम एक एक करके पंग सेना को छेड़ेंगे।

कवित्त ॥ मिलिए सब्ब सामंत। बोल मांगहिति नरेसर ॥
आप मग्ग लग्गियै। मग्ग रष्षै इक इक्क भर ॥
इक इक्क जूझंत। दंति दंतन ढंढोरहि ॥
जिके पंग रा भीछ। मारि सारिन मुष मोरहि ॥
हम बोल रहै कल अंतरै। देहि स्वामि पारथ्थियै ॥
अरि असी लष्य की अंग मैं। बिना राइ सारथ्थियै ॥ छं० ॥ १५६१ ॥

सामंतों का कहना कि सत्तहीन क्षत्री क्षत्री ही नहीं है।

कहै सूर सामंत। सत्त छंडै पति छिज्जै ॥
पत्ति छिज्जत छिज्जंत। नाम छिज्जत जस छिज्जै ॥
जस छिज्जत छिज्जै सुगति। सुगति छिज्जत क्रम बढ्ढै ॥
क्रम बढ्ढत बढ्ढै अकिति। अकिति बढ्ढहि नूक दिज्जै ॥
दिज्जियै नूक कढ्ढन कुमति। करनी पति तै जान भर ॥
छिची निछित्ति सत गरुअ निधि। सत छंडै छची निगर ॥
छं० ॥ १५६२ ॥

सामन्तों का कहना कि यहां से निकल कर किसी तरह दिल्ली जा पहुंचो।

समद सेन पहुपंग। धार आवध नभ लग्गिय ॥
चढि वो हियथ्रत सामि। पंज लगि अंकिन मग्गिय ॥
स्वामि सुष्ष भुग्गियै। श्रित भुग्गै जु सुगति रस ॥
जगि जीरन प्रथिराज। गिल्यौ मष्षीज अंप जस ॥
मिष्टान पान भामिनि भवन। चूक कह्यौ जू उप्पनौ ॥

चहुआन नाथ जोगिनिपुरह। धर रष्षै बर अप्पनौ ॥
छं० ॥ १५६३ ॥

राजा का कहना कि मरने का भय दिखाकर मुझे क्यों डराते हो और मुझ पर बोझ देते हो।

मति घट्टी सामंत। मरन भय मोहि दिषावहु, ॥
जम चिट्ठी बिन कहन। छोड़ सो मोहि बतावहु ॥
तुम गंज्यौ भर भीम। तास ग्रब्बह मैमंतौ ॥
मैं गोरी साहाब। साहि मरबर साहंतौ।
मैरैंज सुरन हिंदू तुरक। तिहि सरनागत तुम करहु ॥
बुझिये न सूर सामंत हौ। इतौ बोझ अप्पन धरहु ॥ छं०॥१५६४॥

पृथ्वीराज का स्वयं अपना वल प्रताप कहना।

राव सरन रावत्त। जदहि धर पायै आवै ॥
राव सरन रावत्त। जदहि कछु पटौ लिषावै ॥
राव सरन रावत्त। काल दुकाल उबारहि ॥
राव सरन रावत्त। जदहि कोइ [1]अनिबर मारहि ॥
रावत्त सरन नित राव कै। कहा कथन काहावता ॥
संग्राम वेर मुझ्झै सुभर। राव सरन तदि रावता॥छं०॥१५६५॥
मैं जित्तौ गढ द्रुग्ग। मोहि सब भूपति कंपहि ॥
मोहि कित्ति नव षंड। पहुमि बंदी जन जंपहि ॥
मैं भंजै भिरि भूप। भिरवि भुजदंड उपारे ॥
छौंब कहा मुष कहौं। कौंन षग षत विथारे ॥
मैं जित्ति साहि सुरतान दल। मुहि अमान जानै जगत ॥
चहुआन राव इम उच्चरै। इं देष्यौ कव कौ भगत ॥छं०। १५६६॥

सामंतों का कहना कि राजा और सेवक का परस्पर का व्यवहार है। वे सदा एक दूसरे की रक्षा करने को बाध्य हैं।

बन राषै ज्यौं सिंघ। बिंझ बन राषहि सिंघहि ॥

(१) मो.-अनिवर।

धर रष्षै यौं भुअंग। धरनि रष्षैति भुअंगह ॥
कुल रष्षै कुल बधू। बधू रष्षैति अप्प कुल ॥
जल रष्षै ज्यौं हेम। हेम रष्षैति सब्ब जल ॥
अवतार जबहि लगि जीवनौ। जियन जम्म सब आवतह ॥
रावत्त तेहरा रष्षनौ। राजन रष्षहि रावतह ॥ छं०॥ १५६७ ॥

सामंतों का कहना कि तुम्हींने अपने हाथों अपने बहुत से शत्रु बनाए हैं।

तें रष्यौं रा भान। षान रष्यौ हूसेनं ॥
तें रष्यौ पाहार. सुरन किन्नर सो मेनं ॥
तें रष्यौ तिरहुंति। कहि तोंअर तत्तारी ॥
तें रष्यौ पंडुयौ। डंडि नाहर परिहारी ॥
रष्षनह ढोल ढिल्ली सुरह। गौर भान भट्टी मरन ॥
चहुआन सुनौ सोमेस सुअ। अरिन अब्ब दिज्जे मरन ॥छं०॥१५६८॥

सामंतों के स्वामिधर्म की प्रभुता॥

अति अग्गें हठ परहि। चोट चिहु रत्तन घल्लहि ॥
परे लेहि परि गाहि। दाह दुअननि उर सल्लहि ॥
पहु डोलंत पछै परंत। पाय अचल्ल चलहि कर ॥
अंत असन सिर सहहि। भाव भल पनति लहहि भर ॥
बरदाय चंद चिंतनु करै। धनि छत्री जिन ध्रंम मति ॥
मुक्कहि न स्वामि संकट परें। ते कहियै रावत्त पति ॥ छं०॥१५६९॥

पुनः सामंतों का कहना कि "पांच पंच मिल कीजे काज हारे जीते नाहीं लाज" इस समय हमारी कीर्ति इसीमें है कि आप सकुशल दिल्ली पहुंच जावें।

पंचति रष्षहि पास। पंच धरणी धन रष्षहि ॥
पंच पृच्छि अनुसरहि। पंच तत्त जिय लष्षहि ॥

पंच भीत वंचियै। पंच आदर अमनाइत ॥
पंच पंच धर तोन। करनि मंडियै वासन अति ॥
चहुआन राइ सोमस सुअ। इमग तेग बहुै सुकित्ति ॥
अनुसरिय लाज राजन रवन। सुनौ राज राजंन पति ॥
छं० ॥ १५७०

दूहा ॥ राज विमुष्यौ लोक सुनि। धुनि सामंत अनंत ॥
बंक दीह बंछै न को। सुर नर नाग [1]गनंत ॥ छं० ॥ १५७१ ॥

कवित्त ॥ तें रष्यौ हिंदवान। गंजि गोरी गाहंतौ ॥
तें रष्यौ जालौर। चंपि चालुक चाहंतो ॥
तें रष्यौ पंगुरौ। भीम भट्टी दै मथ्थै ॥
तें रष्यौ रनथंभ। [2]राय जहौं सै हथ्थौ ॥
इहि मरन कित्ति रा पंग की। जियन कित्ति रा जंगली ॥
पहु परनि जाई ढिल्ली लगै। तौ होइ घरघ्घर मंगली॥छं०॥१५७२॥
सुनौ सूर सामंत। सूर मंगल सुपत्ति तन ॥
लाज वधू मो पत्ति। राज सोपत्ति सूर घन ॥
कबि बानी सोपत्ति। जोग सोपत्ति ध्यान तम ॥
भिचापति सोपत्ति। पत्ति बंधै सो आतम ॥
इम पत्ति पत्ति न्रप जो चलै। तो पति इम [3]पुज्जै रली ॥
सा भ्रम जु पंज सामंत भर। रक्क पंगह मंजाली॥छं०॥१५७३॥

पुनः सामंतों का कथन कि मर्दों का मंगल इसी में है कि पति रख कर मरें।

सूर मरन मंगली। स्याल मंगल घर आयैं।
वाय [4]मेघ मंगली। धरनि मंगल जल पायैं ॥
क्रियन लोभ मंगली। दान मंगल कछु दिन्नै ॥
सत मंगल साहसी। मंगन मंगल कछु लिन्नै।
मंगली बार है मरन की। जो पति सयह तन षंडियै ॥
चढि षेत राइ पहु पंग सौं। मरन सनंमुष मंडियै॥छं०॥१५७४॥

(१) ए. कृ. को गावंत। (२) ए. कृ. को. सुई।
(३) ए. कृ. को.-पुरजै रली। (४) मो. मंगळ।

मरन दियै प्रथिराज। इसें छचिय कर [1]पट्टिहि॥
मीच लगी निय पाइ। कहैं आयौ घर [2]बैठहि॥
पंच पंच सौ कोस। कहै दिल्ली अस कथ्थैं॥
एक एक छुरिमा। पिष्षि बाइंते बथ्थैं॥
घर घरनि [3]परनि रा पंग की। पहुंचै इहैं बड्प्पनौ॥
जब लग्गि गंगधर चंद रवि। तब लगि चलै कविप्पनौ॥
छं०॥ १५७५॥

कहै राज प्रथिराज। मरन छिचिय सत लिद्धौ॥
जस समूह गुर सह। महिम करि मानन रिद्धौ॥
कथ समूह उच्चरै। चित्त कीजै कवि रूपं॥
कलस मरन मन चढ़त। पार पल में सो जूपं॥
छचीन मरन मारन सुरव। नथ्थि सु मिट्टन काल बर॥
जीरन्न अग्ग संदेस बल। ढिल्ली इंदे ढोल गिर॥ छं०॥ १५७६॥

राजा का कहना कि मैं तो यहां से न जाऊंगा रुक करके लडूंगा।

सुनौ सूर सामंत। जियन अहि डड्डु काल पुर॥
अधम अकित्ती मुष्ष। सा मनौ ग्रह दंड दुर॥
मोंह मंद बर जगत। भए विधि चिच चिताही॥
अचित होइ जिहि जीत। पुन्न जित देषि पिषाही॥
नन मोह छोह दुष सुष्ष [4]तन। तौ जर जीवन हथ्थ भुत॥
पहु पंग जंग मुक्कै नहीं। जौ जग जीवहि एक सत॥ छं०॥ १५७७॥

सामंतों का उत्तर देना कि ऐसा हठ न कीजिए।

दूहा॥ राजन मरन न इंछियै। ए अत बंछै नित्त॥
सिर सट्टै धन संग्रहै। सो रष्षै छच पत्ति॥ छं०॥ १५७८॥

कवित्त॥ तन बंटन दुष अपन। कित्ति बिय भाग न होई॥
पुच त्रिया सेवक सु। बंध कर भुग्गवै जोई॥

(१) ए. कृ. को.- बिट्टहि, पेंटाहि। (२) मो.- बट्टहि। (३) ए.- सरनि
(४) ए. कृ. को.- तत।

सुबर सूर सामंत। जीति भंजौ दल पंगं ॥
तुम समान छची न। भिरौ भारथ्थ अभंगं ॥
इन सुभर सूर पच्छै मरन। किती रस मुक्कै न न्रप ॥
रजपूत मरन संसार बर। अब बात बोलै न अप ॥छं०॥१५७९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि चाहे जो हो परंतु मैं यहां से भाग कर अपकीर्ति भाजन न बनूंगा।

बैर व्याह मंगलीय। बेह मंगल अधिकारिय ॥
मो कित्ती गर भग्गि। पच्छ भग्गौ जम भारिय ॥
बीर मात गावही। अप्पि प्रिय अच्छित उच्चारिय ॥
मुत्ति जुथानक भग्गि। करौ कानिन उहारिय ॥
कुट्टी प्रजंक जस मुगति किय। काम मुक्ति कित्ति सु मुकी ॥
जी भंग होइ निसि चीय करि। रखित मौन बर भ्रंम की ॥
छं०॥ १५८० ॥

जा कित्ती कारनह। मत्त मंग्यौ भीषम नर ॥
जा कित्ती कारनह। अस्ति दद्धीच देव बर ॥
जा कित्ती कारनह। देव दुर्जोधन मानी ॥
जा कित्ती कारनह। राम बनबास प्रमानी ॥
कारन्न कित्ति [1]दोलीप न्रप। सिंघ मंग गोदान दिय ॥
मम मुक्कि कित्ति हथ्थह रतन। सत्त बरष जीवैं न जिय॥छं०॥१५८१॥

सामंतों का कहना कि हठ छोड़ कर दिल्ली जाइए हम पंग सेना को रोकेंगे।

मरन दियै प्रथिराज। कित्ति भज्जै जु अप्प कर ॥
पंग कित्त सिंचवय। अषै बल्ली सु षट्ट बर ॥
जोगि बेस अच्चियै। छंडि मंगल करि मंगल ॥
एक एक सामंत। पंग रुइंत जाइ दल ॥
मानुष्ष देह [3]दुल्लह न्रपति। फुनि देह राजन्न मिलि ॥

(१) ऐ. कृ. को.-इछै। (२) मो.-दिल्लिय नपति। (३) मो.-दुल्लभ।

रजपूत द्रोह भज्जत लगै । इम हंधै निसि पंग 'बल ॥छं०॥१५८२॥

पृथ्वीराज का कहना कि यहां से निकल कर जाना कैसा और शरीर त्याग करने में भय किस बात का ।

अरे अमंत सामंत । मोहि भज्जंत लाज अल ॥
काम अग्गि प्रज्जरै । लोभ आधीन बाहु बल ॥
निस दिन चढ़े प्रमान । दुहुं कन्ना परि सुझ्झी ॥
इह लग्गी कल पंक । कहे जिहि जिहि वर बुझ्झी ॥
को राव रंक सेवक कवन । कवन न्रपति को चिक्करै ॥
ढिल्लीव दिसा ढिल्लिव न्रपति । पंग फौज धर उप्परै ॥छं०॥१५८३॥

दूहा ॥ सो सति सत न्रप उच्चरै । परें लभ्भ इह ग्रेह ॥
जिहि वर सुब्बर सोउ न्रप । फल भुग्गवै सु तेह ॥छं०॥ १५८४ ॥

चौपाई ॥ सुनी देह गत जीव प्रमानं । जीरन ज्यों बंसन फल मानं ॥
जीरन वस्त्र देह ज्यों छंडै । त्यों सह छंडि पर त्तिन मंडै ॥
छं०॥ १५८५ ॥

सामंतों का मन में पश्चाताप करना ।

कवित्त ॥ कहै सूर सामंत । राज इह वत्त न आइय ॥
जौ भ्रम सतु करि रिदै । बचन मद्धि मन जाइय ॥
कोट हरन द्रुग रंजन । चूक ककहु न नाइय ॥
जौ साम भ्रंम चलहीं । साम द्रोही नन पाइय ॥
अवरन्न ह्रदै धरि रंजै ज्यों । कह्नि बीर बंदै बचन ॥
ज्यों अनल डसन मानुन करै । यों प्रथिराज रन तत्त मन ॥
छं० ॥ १५८६ ॥

राजा का कहना कि सामंतों सोच न करो कीर्ति के लिये प्राण जाना सदा उत्तम है ।

सोच न करु सामंत । सोच भग्गै बल छत्रिय ॥
सामि द्रोह सो बंध । आहि बंधी तन रत्तिय ॥

सोच कियै बल भग्ग। भग्गि बल किंति न पाइय ॥
सुगति गये नर सब्ब। निडि ज्यों रंक गमाइय ॥
ज्यों उतर सूर पहरैं अरुनि। न्रिघति रंज नह द्रिग्ग हर ॥
सामंत सूर बोलंत बर। सुबर बीर वित्ते पहर ॥ छं० ॥ १५८७ ॥

पृथ्वीराज का किसी का कहना न मान कर मरने पर उतारू होना।

गाथा ॥ मिटयो न जाइ कहिनौ। कहनो कविचंद सूर सामंतं ॥
प्राची क्रम्म विधानं। ना मानं भावई गत्तं ॥ छं० ॥ १५८८ ॥
दूहा ॥ चिंति त्योंर सामंत सह। बहुरि सु रक्के थान ॥
इहै चित्त चहुआन की। कंचन नैन प्रमान ॥ छं० ॥ १५८९ ॥
मरन मंत प्रथिराज भौ। मरन सुमत सामंत ॥
इंद्रासन मत्ती' खहिय। डोलिय बोल कहंत ॥ छं० ॥ १५९० ॥

सामंतों का पुनः कहना कि यदि दिल्ली चले जांय तो अच्छा है।

कवित्त ॥सामि हथ्थ भर नथ्थ। नथ्थ भर साम हथ्थ बर ॥
और मंच छिन मंच। [2]मंच उर श्रम पिव सर नर ॥
प्रथम सनेह वियोग। विछुरि तीय पीय विच्छबर ॥
जीव सधन पुच विपछ। इष्ट [3]संकट अबुद्धि गिर ॥
सामंत सूर इम उच्चरै। बिरंग देष बंधेत नर ॥
प्रथिराज ग्रेह जौ जाइ बर। जम्म सुष्य बंधौत धर ॥
छं० ॥ १५९१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि मैं तो जैचन्द के साम्हने कभी भी न भागूगा।

चलै नौमेर निधाम। धूम्र डसै चसै अपु ॥
सत्त समुद जल घुटै। सत्त मरि जाहि काल वपु ॥

(१) मो-गत्ता (२) ए. कृ. को-मंत्र उर सम पाविस नर।
(३) ए. कृ. को.-संकष्ट।

चंद चंदायन घटै । बढै सूर औगुन अगा ॥
पच्छा पंग नरिंद । राज अग्गै नन भग्गा ॥
जं करौ सूर उप्पाइ बर । राज रहै रज रष्षियै ॥
कहुँ न बैन प्रथिराज अग । बार बार नन अष्षियै ॥

छं० ॥ १५९२ ॥

कविचन्द का भी राजा को समझाना पर राजा का न मानना ।

नह मन्निय मति राज । सब्ब सामंत सहित्तं ॥
बरजि ताम कविचंद । मन्न मन राजन बत्तं ॥
बहुरि दिन्न सामंत । गिरद रष्यौ फिरि राजन ॥
फिरे थत्य अप थान । बिंट [1]लिन्ने ते आजन ॥
बुल्यौ ताम जादव जुरनि । अष्षो कन्ह सुनि नाह नर ॥
न्त्रिप ब्याह राह चिंतौ सुचित । घर सु तरुनि तरुनिय सु घर ॥

छं० ॥ १५९३ ॥

जामराय जद्दव का कन्ह से कहना कि यह व्याह क्या ही अच्छा है ।

दूहा ॥ अवर ब्याह अनि मंगली । एह ब्याह [2]जुधराह ॥
तिन [3]रति ब्याह हरष्षियै । रयन मयन प्रथमाह ॥ छं० ॥ १५९४॥

*भुजंगी ॥ परी पंग पारस्स घन घोर कोटं । भए सूर सामंत सो सामि ओटं ॥
दिसा अट्ठ बीरं सुषं पंग साहे । गहे सामि ध्रम्मं अध्रम्मं न गाहे॥

छं० ॥ १५९५ ॥

व्यूह वद्ध सामंत मंडली और पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित ॥ दिसि बांई [4]उर अत्त । सूर हय अरुहि पंति फिरि ॥
सत्त पंच हय तेज । पच्छ उभ्भै पारस्स करि ॥

(१) ए. कृ. को.-लिल्ले । (२) ए.-जुद्धराह । (३) ए. कृ. को.-रतिवाह ।
* इस छन्द को ए. कृ. को. तीनों प्रतियों में चौपाई और मो. प्रति में अरिल्ल करके लिखा है।
(४) ए. कृ. को.-सुर ।

वर उज्जल सन्नाह । तेज चिहुं पास विराजै ॥
कै पसरी रवि किरनि । मेर विच लषि प्रथिराजं ॥
नग मुष्ष गढ़ी दुकल विधी । वीर वीच दंपति मयन ॥
सन्नाह सहित सुभ्भं सु न्त्रिप । रति तीरथ परतै मयन ॥
छं० ॥ १५९६ ॥

उक्त समय संयोगिता और पृथ्वीराज के दिलों में प्रेम की उत्कंठा बढ़नी ।

गाथा ॥ श्रम भौ वर संग्रामं । अभि लिष्षियं चिंतयौ बालं ॥
अब्बं भौ चहुआनं । नंदरीयं सेन पंगायं ॥ छं० ॥ १५९७ ॥

मुरिल्ल ॥ कुंचित न्त्रिप कल किंचित पायौ। नेह दिष्ट दंपति न सहायौ॥
छुटित लाज छिन छिन चढ़ि मारे । ज्यौं जोबन चढ़ि सैसव वारे॥
छं० ॥ १५९८ ॥

कन्ह का कुपित होकर जामराय से कहना कि तुम समझाओ जरा मानें तो मानें ।

कवित्त ॥ तब कहै कन्ह नर नाह । सुनहि जामान जादवर ॥
विरध राइ इल्लाइ । तुमहि बुझ्झौ सुभाव भर ॥
तुम समान नहि वीर । नेह सम सगुन सुधा रस ॥
तुमहि कहौ तिन राज । प्रेम कारन्न काम कस ॥
हम काज आज सिर उप्परें । षग्ग धार [1]टालौं सु षल ॥
पुज्जऔं राज ढिल्ली सु धर । दुभर सु भर भंजौं सु दल ॥
छं० ॥ १५९९ ॥

मे जान्यौ पहिलौं न । एह राजन क्रत काजन ॥
मरन पच्छ कैमास । मंत जानै नह ताजन ॥
भट्टकज्ज न्त्रप करिय । [2]सकल लोकह सो जानिय ॥
एह कथा पहिलौं न । मंन सन भई सयानिय ॥
[3]मत्यौ सु एह कारन प्रथम । पुर कमद्ध प्रथिराज किय ॥

(१) ए. कृ. को.-टालो । (२) ए. कृ. को.-सव्व ।
(३) ए. कृ. को.-मंत्यौ ।

षंडौ सु अब्ब अरि हर उक्कसि। लोक सु जित्तौ काज जिय॥

छं० ॥ १६०० ॥

जामराय जद्दव का राजा से कहना कि विवाह की यह प्रथम रात्रि है सो सुख सेज पर सोओ।

सुनिय बत्त राजंन। कन्ह मन रीस अप्प चित॥
पय लग्यौ नर नाह। धन्नि जंपी सु धन्नि हित॥
बलिय बास न अन अन्य। फिरत रोपिय सब संगिय॥
बंध वारि विथ्थारि। उड्ड चिंतान विलग्गिय॥
जंपयौ राज जद्दौ नमिय। प्रथिम रज इह व्याह रइ॥
खनिय सु ग्रेह प्रथमाइ यह। करहु सयन न्रिप सुष्ष सइ॥

छं० ॥ १६०१ ॥

दरबार बरखास्त होकर पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ शयन करना।

दूहा॥ संजोगिय भयननि निरषि। सफल जनम न्रप मानि॥
काम कसाये लोयननि। हन्यौ मदन सर तानि॥

छं० ॥ १६०२ ॥

सुधि भूली संग्राम की। भूलि अप्पनिय देह॥
जोन भयो बसि पंग दल। सो भयो वाम सनेह॥

छं० ॥ १६०३ ॥

नयन चरन करमुष उरज। विकसत कमल अकार॥
कनक वेलि अनु कामिनी। लचकनि बारन भार॥छं०॥१६०४॥
रवनि रवन मन राज भय। भयौ नैंन मन पंग॥
सूरन सौं संग्राम तजि। मँड्यौ प्रथम रस जंग॥ छं० ॥ १६०५ ॥
तब सु राज रवनिय निरषि। हसि आलिंगन दिठ्ठ॥
रचिय काम सयनह सुबर। दिय अग्या भर उठ्ठ॥ छं० ॥ १६०६ ॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का शयन से उठना सामंतों का उस

के स्नान के लिये गंगाजल लाना स्नान करके पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना।

पद्धरी॥ अग्गिय दीन अइवइ आम। रष्षहु जु सब्ब निष्ठाम ठाम॥
मंगयौ ताम प्रथिराज वारि। अंदोलि मुष्ष पय पान धारि॥
छं० ॥ १६०७

आवद्ध बद्ध सुष सयन कीन। सब दिसा अप्प बर बंटि लीन॥
सब फिरत थाइ सामंत दीन। पारस फिरंत सामंत कीन॥
छं० ॥ १६०८ ॥

दस हथ्थ मग्ग सीसइ सु चंद। बैठो सुचिंत चिंता समंद॥
निद्दुरइ राव जामान सथ्थ। बलिभद्र सिंघ पामार तथ्थ॥
छं० ॥ १६०९ ॥

सामलौ सूर दिसि पुब्ब पंच। रष्षनइ राइ राजेस संच॥
नर नाह कन्ह पामार जैत। उद्दिग्ग उदोत राष्षै सु भैत॥
छं०॥१६१०॥

हाहुलियराव हंमीर तथ्थ। जंघारराव भीमान पथ्थ॥
धन पत्ति दिसि राषै सु धीर। अप अप्प परिग्गह जुत्त बीर॥
छं० ॥१६११॥

बंधव बरन्न तोमर पहार। बघ्घेल सु लष्षन लष्ष सार॥
द्वै बंध हड्ड सम अप्प सूर। मइनसी पीप परिहार पूर॥
छं० ॥ १६१२ ॥

पच्छिम दिसाइ सजि धीर सार। भंजनइ मंत गय जूहभार॥
पवार सलष आजानबाह। चहुआन अत्त ताई उधाह॥
छं० ॥ १६१३ ॥

चालुक्क विंझ भोंहा अभंग। बग्गरी देव षीची प्रसंग॥
बारउह सिंह अनभंग भार। दष्छिन दिसाइ सजि जूह सार॥
छं० ॥ १६१४ ॥

---

(१) मो.-पुज्ज।

¹साहस्स एक सत एक सथ्य। सब भत्त हूंच नीचह उरथ्य॥
छं०॥१६१५॥

अप अप्प भत्य सामंत सन्न। पट्टुए काज अल पंग तन्न॥
कमधज्ज भत्य मध्ये वराह। आमयौ अप्प भेदेव ताह॥छं०॥१६१६॥

मुष पाय पानि अंदोलि वारि। अचयौ अप्प आतम अधारि॥
करि सुतन संति सामंत राज। चिंते सु दूह भर स्वामि काज॥
छं०॥१६१७॥

आवद्ध बंधि सजि बाजि सब्ब। आसन्न ताम अप्पह अथब्ब॥
उच्छंग भत्य कौ दै असीस। अस्तंमि षेट के षिन परीस॥
छं०॥१६१८॥

पारस्स बैठि पंगुरह सेन। गज्जें निसानहय गय गुरेन॥
चिंता सु चुंभि अति पंग राज। पारस्स फिरे चहुआन काज॥
छं०॥१६१९॥

प्रातः काल होते ही पुनः पंग दल में खरभर होना।

दूहा॥ चित्त अत्ति चिंता तपित। सज्जि राज कमधज्ज॥
जिके सुभट वर अप्पने। फिरै तब क्रित रज्ज॥ छं०॥१६२०॥
सेन संजोग प्रथिराज हुअ। बाजहि लाग निसान॥
काइर बिधु मन बंछही। सूरही बंछहि भान॥१६२१॥

प्रभात की शोभा वर्णन।

रासा॥ इसी राति प्रकासी। सर कुमुदिनी विकासी॥
मंडली सामंत भासी। किवन कल्लोल लासी॥ छं०॥१६२२॥
पारसं रज्जि चंदं। तारस्स तेज ²मंदं॥
कातरा क्रति बंधे। सूर सूरत्तन संधे॥ छं०॥१६२३॥
वियोगिनी रैनि लुट्टी। संजोगिनी लाज छुट्टी॥
*　*　*　।　*　*　छं०॥१६२४॥

(१) ए. कृ. को.-साहस।　　　(२) ए. कृ. को.-संदं।

चोटक ॥ छुटि छंद गिसा सुरसा प्रगटी । मिलि ढालनि माल रही सु घटी ॥
निसमान निसान दिसान हुश्रं । धुम्र धूरिन मूरिन पूरि पुश्रं ॥
छं० ॥ १६२५ ॥

नव निभ्भरयं बनयं बनयं । गज बाजत साज तयं घनयं ॥
निज कच्छरि मच्छरियं सदयं । करि रंजन मंज नयं जमयं ॥
छं० ॥ १६२६ ॥

करि सारद नारदयं मदयं । सिर सज्जन मज्जनयं सदयं ॥
निज निर्भय यं चहुआन मनं । किर निर्भर रज्जित सूर जनं ॥
छं० ॥ १६२७ ॥

गाथा ॥ सितभ किरनि समूरी । 'पूरयं रेनं पंग आयेसं ॥
जुग्गनि पति भर सूरौ । पारस मिलि पंग राएसं ॥ छं० ॥ १६२८ ॥

सुरिल्ल ॥ पारसयं पसरी रस कुंडलि । जानकि दैव कि सैव अपंडलि ॥
हालि हलाल रही चव कोदिय । दीह भयौ निस की दिसि मुंदिय ॥
छं० ॥ १६२९ ॥

प्रातः काल से जैचन्द का सुसज्जित हो कर सेना में पुकारना कि चौहान जाने न पावे ।

* कुंडलिया ॥ देषि चिरा उद्योत घन । चंद सु ओपम कथ्य ॥
दीपक विद्या जनु रचिय । द्रोन कि पथ भारथ्थ ॥
द्रोन कि पथ भारथ्थ । काम आये जै जरथं ॥
उभय घरी दिच्छतें । रुधि हरि चक्र विरथं ॥
दो प्रदीप गज तुरंग रथ । एक धनुष पाइक्क करग ॥
पावै न जानि पप्पीलिका । निसा दीह सम करि भिरग ॥
छं० ॥ १६३० ॥

कवित्त ॥ सहस पंच सम सूर । पास वर तिय निरमल कुल ॥
निज सरीर हथ देह । सज्जि सिर अग्गि राज बल ॥
तिन समथ्थ रा पंग । फिरत सब सेन अप्प प्रति ॥

(१) मो.-चूरयं सेन पंग आएसं ।
* वास्तव में यह डोढ़ा छन्द है परंतु इसकी बीच की दो पंक्तियां खो गई हैं। यह छन्द मो. प्रति में नहीं है ।

जिके सेन प्रथिसेव । कहै प्रथिराज रोह तति ॥
जिन जाय निकसि चहुआन ग्रह । ग्रहौ तास सब सेन हय ॥
[1]इम फेरत राज निज भ्रत्त प्रति । प्रथु सनमानित सब्ब रय ॥
छं० ॥ १६३१ ॥

जैचन्द का पूर्व दिशा से आक्रमण करना ।

करति अरति पहु पंग । फिरै सब सेन अप्प प्रति ॥
अग्गि तेज हुल्लास । झाल दुति भई दीह भति ॥
प्रथम पुब्ब दिसि राज । जथ हुं तह फिरि पारस ॥
तहं फिरि आइय राज । जाम जामनिय रहिय तस ॥
प्राचीय मुष्ष सजि राज गज । दिष्षि सोय कमधज्ज नमि ॥
नृप चढ़े तेव ट्रामंक करि । ग्रहन राज चहुआन तमि ॥
छं० ॥ १६३२ ॥

सुख नींद सोते हुए पृथ्वीराज को जगाने के लिये कविचन्द का विरदावली पढ़ना ।

पद्धरी ॥ सोवै निसंक संभरि नरिंद । पष्षरत पंग संक्यौ सुरिंद ॥
प्रथिराज काम रत सम सँजोगि । अवतार लियौ धर करन भोग ॥
छं० ॥ १६३३ ॥

जग्गवै कोन जालिम्म जोड़ । प्रेमनिय प्रेम रस रह्यौ भोड़ ॥
चव ग्राह मत्त [2]हीसैंकि कान । चंपि चुंग दिसनि रहि घुरि निसान ॥
छं० ॥ १६३४ ॥

[2]सिधूअ मारु झलक्यौ सु गान । सुनि सूर नद्द काइर कंपान ॥
पंचास कोस रुन्नी धरन्नि । मेलान मध्य चहुआन किन्न ॥
छं० ॥ १६३५ ॥

कवि किय किवार बुल्ल्यौ विरद्द । सिंघ जिंम अग्ग सुनि श्रवन सद्द ॥
छं० ॥ १६३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-इम फेर राजनित भृत पति ।　　　(२) ए. कृ. को.-हींसहि ।

पृथ्वीराज का सुख से जागनां।

दूहा ॥ बिरदावलि बोलत जग्यौ। औय संजोइय कंत ॥
कंदल रस रत्ते नयन। क्रोध सहित विहसंत ॥ छं० ॥ १६३७ ॥

गाथा ॥ इम सञ्जत सामंत। घटय रयनि तुच्छ संघरियं ॥
जग्गत न्रप चहुआनं। पयानं भान [1]प्रछ्ठानं ॥ छं० ॥ १६३८ ॥

दूहा ॥ सयन संधि मंडिय न्रपति। दुम्म यट्टी चरि येति ॥
मानि घात सामंत मन। तव उभ्भै करि नेत ॥ छं० ॥ १६३९ ॥

पृथ्वीराज का सैन से उठ कर संयोगिता सहित घोड़े पर सवार होना और धनुष सम्हालना।

चोटक ॥ न्रिप मंगिय राज तुषार चढ़े। कविचंद जयज्जय राज पढ़े ॥
परिपंग कटक्कत घेर घनं। दस पंचति कोस निसान सुनं ॥
छं० ॥ १६४० ॥

गज राज विराजित मध्य घनं। जनु बद्दल अभ्भ सु रंग बनं ॥
[2]परि पष्षर सार तुरंग घनी। जनु हल्लत बेल समुद्द अनी ॥
छं० ॥ १६४१ ॥

बर बैरष बंबरि [3]छच तनी। बिच माहिय स्याहिय सिंघ रनी ॥
[4]हरि पष्ष इमा उभ पीत बनी। जनु सज्जत रैनि सरद्द तनी ॥
छं० ॥ १६४२ ॥

भन नंकहि भेरि अनेक सयं। सहनाइय सिंधुअ राग लयं ॥
निसि सव्व न्रिपत्ति अनीन फिरै। जनु भांवरि भान सु भेर करै॥
छं० ॥ १६४३ ॥

दल सव्व सँभारि अरिन्न करी। जिन आइ निकस्सि नरिंद अरी ॥
गत जांम चिजाम सु पीत परी। जय सद्द अयासह देव करी ॥
छं० ॥ १६४४ ॥

कर चंपि नरिंद सँजोगि ग्रही। उपमा वर चारु सुभट्ट कही ॥
मनौं भोर दुझ्झारसि अग्गि तपी। कलिका गजराज कमोद झपी ॥
छं० ॥ १६४५ ॥

---

(१) ए. को.-प्रस्थानं। (२) मो.-परि पष्षर ताप सुरंग घनी।
(३) मो.-पच्चरती। (४) ए. कृ. को.-हरि पष्ष उमापति पीत पती।

पय चंपि रके बनि बाज चढ़ी । रबि बेलि किधौं गह काम बढ़ी ॥
नर तीन चमंकत पच्छ दिठी । जु मनों तन भांन 'मयूष उठी ॥
छं० ॥ १६४६ ॥

मुष दंपति चंद बिराज बरं । उदै अस्त ससी रबि रथ्थ परं ॥
भर न्नप्प सजे सु तरंग चढ़े । मनुं भान पयानति लोह कढ़े ॥
छं० ॥ १६४७ ॥

चहुआन कमानति कोपिलियं । मिलि भोहनि पंचि कसी सदियं ॥
सर छुट्टत पंषति सद्द 'सयं । मद गंध गयंदन मुक्कि गयं ॥
छं० ॥ १६४८ ॥

सर एक सु बिद्धत सत्त करी । दल दिष्पत नैंन ठठुक्क परी ॥
नरवारि हजारक च्यार परी । प्रथिराज लरंत न संक करी ॥
छं० ॥ १६४९ ॥

पंग सेना का व्यूह वर्णन ।

कवित्त ॥ उभै सहस गजराज । मद्द मुष्षह पंति फेरिय ॥
मारि गोर अंबूर । बान छुटि कहुंकि सु भेरिय ॥
पंग अग्ग कंद्रप कुआर । 'मीर गंभीर अभंगम ॥
ता अग्गे बन सिंघ । टांक बलिभद्रति जंगम ॥
केहरि कंठेरि अग्गें न्नपति । सिंह बिभग्गा सिंह रन ॥
उग्गयौ न भान पयान बिन । ' मथन मेर मच्यौ मदन ॥
छं० ॥ १६५० ॥

वीर ओज वर्णन ।

रसावला ॥ षग्ग वीरं षुलं, अंत दंतं रुलं । टंत दंती षुलं, लोहरतं मिलं ॥
छं० ॥ १६५१ ॥

बीर बीरं ठिलं, सार सारं झिलं।'चच रंसी षिलं, बीर अंगं ढिलं॥
छं० ॥ १६५२ ॥

(१) ए. कृ. को.-मझंष । (२) ए. कृ. को.-भयं । (३) ए. कृ. को.-मीर ।
(४) मो.-सथन । (५) ए. कृ. को.-चच्चरं चीषिलं ।

काइरं औ पुलं, बैन बहु बुलं। सिह 'चित्त डुलं, कम्म बंधं घुलं॥
छं० ॥ १६५३ ॥

सुगति मग्गं चलं, ईस सीसं रुलं। ढुंढि बंधं गलं, षग्ग मग्गं दलं
छं० ॥ १६५४ ॥

ढाल गज्जं मलं, देवलं अं ढुलं। घाइ घुम्मै घलं, अंग सोभै ललं॥
छं० ॥ १६५५ ॥

सीस हक्कै कलं, काइ रंजं ढलं। पिंड रत्तं पनं, षग्ग चित्तं तनं॥
छं० ॥ १६५६ ॥

हूर उट्ठै पनं, द्रोन नच्ची धनं। आयुधं झंझनं, नारदं रिझझनं
छं० ॥ १६५७ ॥

सूर्य्योदय के पहिले से ही दोनों सेनाओं में मार मचना।

कवित्त ॥ बिनइ भान पायाम। इदं कमधज्ज जुद्ध दुष्ष॥
सद्धौ न बोल संमुलै। षिरद पागार बज्ज मुष्ष॥
सुकल 'घोलि कल्हार। झ,कित कक्कौ झाराहर॥
बिनहि अबन उद्योत। अरुन उग्यौ धाराहर॥
पहु विन पुकार पहु उच्चरिग। सु ग्रह पहक फट्टी फहन॥
उद्दिग सुतन अरि वर किरन। मिलिव चक्क चक्की गहन॥
छं० ॥ १६५८ ॥

असिवर झर उघ्घरिय। चक्क चक्की अनंद मन॥
कुमुद मुदिग कमधज्ज। सेन संपुटिग सघन रिन॥
पंच जन्य संपत्त। सकल कुरु घरनि घरीयं॥
पसु कि मझ्झ मुष पंच। तिमिर किरनिनि निवरीयं॥
उडगन अचंभ कौतूहलह। अरु जु स्वामि किन्नौ गहरु॥
उद्दिग पगार सुत पंचनन। समर सार बुज्झौ पहरु॥
छं० ॥ १६५९ ॥

(१) मो.-बिर्त्तें। (२) ए. कृ. को.-कोल।

युद्ध वर्णन।

वृद्धनाराज ॥ हयग्गयं नरभ्भरं [1]रथं रथंति जुद्दयौ।
मनों नरिंद देव देव भ्भच्छरी सु बद्दयौ॥
किनंकही तुरंग तुंग जूह गज्ज चिक्करं।
जु लोह छक्कि मच्छि भोमि षेत मुक्कि मिक्करं॥ छं०॥ १६६०॥
बजंत घाय सद्दकं ननद्द नद्द मुद्दरं।
गरब्बि देषि अग्गि ज्यौं बिदोष मत्त जो दुरं॥
उठंत दिष्ट सूर की करूर अंषि राजई।
मनों कि सौकि बीय दिष्ट बंकुरौति साजई॥ छं०॥ १६६१॥
उभै सयन्न क्रम्म यंक को न भूमि छंडयं।
जु मज्झि झ कंक भज्जि कोन सार अंग षंडयं॥
बरंत रंभ रंभ भंति सार के दुझ्झारयं।
जुधं जुधं बजंत सूर धार धीर पारयं॥ छं०॥ १६६२॥
तुटंत श्रोन सीस द्रोन नंचि रीस हक्कयौ।
[2]रचंत भोम बिद्र कार बीर बीर भक्कयौ॥
परंत के उठंत फेरि मच्छ ज्यौं तरप्फई।
रनं बिधान धीर बीर बीर बीर जंपई॥ छं०॥ १६६३॥

अरुणोदय होते होते भोनिग राय का काम आना।

कवित्त॥ पहर एक असि एक। एक एकह निब्बर धर॥
धर धर धरनि निहारि। नाग धक्कयौ सु नाग सिर॥
हल हलि मिलि रट्ठौर। रीठ बज्जौ बज्जारह॥
कर क्रकस रस केलि। धार तुट्टिय लगि धारह॥
टुहुं दल पगार पागार गिरि। [3]भिरि भुअंग भूनिग तनौ॥
पहु फटिग घटिग सर्वरि समर। अमर भोह जम्यौ घनौ॥
छं०॥ १६६४॥

(१) मो.-रथं रथं सु। (२) ए- कृ. को.-चरंत भोम छिद्रकार। (३) मो.-भर।

अरुणोदय पर साषुला सूर का मोरचा रोकना।

अरुन वरुन उद्धयौ। अरग उहिग उहिग भुज ॥
सह सुप्परि सा मुक्कौ। षोलि षंडौ उग्गिग दुज ॥
हय गय नर आहरि सु। राइ बंबरि वर तोस्यौ।
सार सार [1]संभार। बीर बंबरि भंभोस्यौ ॥
पहुपंग समुद जरह[2]अध। हूर सार सारह हनिय ॥
दनु देव नाग जै जै करहिं। वरन रुद्र रुद्रह भनिय ॥
छं० ॥ १६६५ ॥

घरी एक दिन उद्दै। पंग आरुहिय सेन भिरि ॥
हय गय नर भर भिरत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर ॥
किन्नर वर [3]चैनेन। बीर पस पंच किलक्किय ॥
पंचम सुर जुग्गिनिय। बंधि नारद्द सु वक्किय ॥
हं हंत हंत सुर असुर कहि। जै जै जै प्रथिराज हुअ ॥
असि लष्ष पंग साइर उलटि। धनि नरिंद मंडेति भुअ ॥
छं० ॥ १६६६

एक घड़ी दिन चढ़े पर्य्यंत सामंतों का अटल हो कर पंग सेना से लड़ना।

परिग बीर बन सिंघ। रंग कामधज्ज सुरष्षिय ॥
वर सुरंभ घरि फेरि। तज्यौ वर प्रान सु लष्षिय ॥
ज्यौं मभ्भ्भ वर [4]अप्पि। जैन बंकुरि तिय लष्षिय ॥
बीनि रंभ दुहु हथ्थ। मरन जीव ते लष्षिय ॥
लष्षन प्रमान मभ्भ्भहिति रुष। रंभ अरंभन फिरि वरी ॥
तिहि परत सिंघ रषि रिंघ अप। पंग पंच हथ्थिय परी ॥
छं० ॥ १६६७ ॥

दूहा ॥ घरिय उदय उभ्भय दिवस। हकि हलक गज पंग ॥
सुभर सूर सामंत सुनि। टरिय न बीर अभंग ॥ छं० ॥ १६६८ ॥

(१) मो.-संसार (२) ए.-अस। (३) ए. कृ.को.- त्रैनेत्र। (४) कृ. को. अष्षि।

सामन्तों का पराक्रम और फुर्तीलापन ।

कवित्त ॥ जहं जहं संभरि वार । सूर सामंत बहिग वर ॥
तहं ति तेज अग्गरौ । फिरयौ करि बार करतु कर ॥
जहं तहं भय भागंत । सार सनमुष सिर सहयौ ॥
जहां जहां चहुआन । विहरि चंचल चित रहयौ ॥
तहँ तहं सु सार [1]सारंग लिय । विरचि बीर चंदह तनौ ॥
पहु पुच्छ तुरी रिंझवि रनह । तहं तहं करै निबच्छनौ ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

पङ्गराज की अनी का व्यूह वर्णन और चंदेलों का चौहानों पर धावा करना और अत्तताई का मोरचा मारना ॥

षोड़स गज पहु पंग । मीर सत सहस राज अगि ॥
अट्ठ अट्ठ गज राज । दिसा दच्छिन रु वाम मग ॥
षां पहार मोहिल्ल । महिद बंध राम ततारिय ॥
समर सूर चंदेल । बंध मिलि बाग उपारिय ॥
बर बंध बहन अल्हन उभै । अत्तताइ अवरत्त बर ॥
दिसि मुक्कि वाम दच्छिन परिग । हाइ हाइ आरत्त भर ॥
छं० ॥ १६७० ॥

रसावला ॥ हलके हलक्कं, गिरं जानि बक्कं । छुटी मद पट्टं, वपं मेर घट्टं ॥
छं० ॥ १६७१ ॥

चढ़ी जम्म भल्ली, गिरं झान हल्ली । सर क्कित्त मद्दं, घटं जानि भद्दं ॥
छं० ॥ १६७२ ॥

दियै दंत भारी, सनंना सयारी । [2]कबी बक्क अष्षं, झमै मेघ पष्षं ॥
छं० ॥ १६७३ ॥

धयै तेज अस्सं, जपं कंक कस्सं । [3]सरं नाव कस्सं, पनु रंत अस्सं ॥
छं० ॥ १६७४ ॥

कुकं कोपि हल्ली, उपम्माति भल्ली । नदी नंद पायौ, रुपी पान धायौ ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

---

(१) ए.- सा मंगलिय । (२) मो०-कबी चक्र अष्षं । (३) ए० कृ. को.-रसं ।

पतू रत्त असं, अपं कंक कसं। मुषं मोर आनं, उपम्मा न आनं॥
छं० ॥ १६७६ ॥

इतने में पृथ्वीराज का दस कोस बढ़ जाना परंतु हाथियों के कोट में घिर जाना ॥

कवित्त ॥ चढ़ि पवंग प्रथिराज। कोस दस गयौ ततच्छिन ॥
परत कोट चिहुकोद। घेरि करि लियौ गयंदनि ॥
इम जंपै जैचंद। भग्गि प्रथिराज जाइ जिन ॥
सोइ रावत रजपूत। सूर तिहि गनौं अथंगनि ॥
[1]कंमान कठिन कविचंद कहि। दुहु भुव बल कर तानियौ ॥
लग्गौ सु बान जयचंद हय। तब दल फिरि दुहु मानयौ ॥
छं० ॥ १६७७ ॥

पृथ्वीराज का कोप करके कमान चलाना।

इसौ देषि प्रथिराज। सहस ज्वाला जक जग्गिय ॥
मनों गिरवर गरजंत। फुट्टि दावानल अग्गिय ॥
अप्प अप्प विप्फुर्यौ। करिय ज्वाला क्रम लग्गिय ॥
मनु पावक मझि बीज। आनि अंतर गन जग्गिय ॥
हिरनाल फाल कट्टिन सकै। दावा नल भट्टह तयौ ॥
कनवज्ज नाथ असिलष्ष दल। जन जन अग्गि झपट्टयौ ॥
छं० ॥ १६७८ ॥

एक प्रहर दिन चढ़ते चढ़ते सहस्त्रों योद्धाओं का मारा जाना।

सत विंध्यौ चहुआन। पंग लग्गौ अभंग रन ॥
सु बर सूर सामंत। जोति झलहलिय उंच घन ॥
जांम एक दिन चढ्यौ। रथ्थ षंच्यौ किरनालं ॥
ब्रह्म चौंति फुनि परिय। देषि भारथ्थ विसालं ॥
पूतंनि ताम देवन्न कर। धरे ग्रब्भ दस मास बर ॥
जोगवै जतन पन निम्मइय। तिन मरत न लग्गत पल सुभर ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. लैकर कमांन कविचंद कहि।

गाथा ॥ इहं समाइ सरिसं । निमुष निमुष बंधनं तनहं ॥
तिहुं जोग प्रमानं । तं भंजयौ सूर निमिषाई ॥ छं० ॥ १६८० ॥

दूहा ॥ रन रुंध्यौ संभर धनी । पंग प्रमानत घेरि ॥
निमुष सु रष्यौं बर न्रपति । ज्यौं पतिभान सुमेर ॥ छं० ॥ १६८१ ॥

जैचन्द का कुपित होकर सेना को आदेश करना ।

कवित्त ॥ लष्षै नैन सु पंग । बान रत्तौ रस बीरं ॥
हथ्थ रोस विथ्थुरै । मौंह मुक्कत्ति सरीरं ॥
गइ गह्लाह उच्चार । भार भारथ्थ सपंतं ॥
बंधन वर चहुआन । भीम दुस्सासन रतं ॥
सावंग अंग चित पंग कौ । ध्रत्त[1] सोज प्रथिराज रस ॥
सामंत होम भारथ्थ कस । बीर मंच अदि होइ बस ॥ छं० १६८२ ॥

घनघोर युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ परे पंच बीरं, म्रदेलष्य भीरं । परे बंद मत्ती, समंदं हरत्ती ॥
छं० ॥ १६८३ ॥
मथे बीर भीरं, जुजंतं सरीरं । उड़ै छिंछ षग्गं, लगे अंग अग्गं ॥
छं० ॥ १६८४ ॥
नगं रत्त जैसं, जरे हेम तैसं । लगे लोह तत्ती, सहं बीर पत्ती ॥
छं० १६८५ ॥
सुन्यौ बीर नहं, बहै बग्ग हद्दं । बही अंघ जारी, विजू यों संभारी ॥
छं० ॥ १६८६ ॥
[2]धुसी लग्गि बीरं, बरं मंत पीरं । [3]गढ़ ढाहि नीरं. दँती कड्ढि बीरं ॥
छं० ॥ १६८७ ॥
कन्हं कंस तीरं, कँधं नंषि भीरं । घयं वार पारं, रुधी धार धारं ॥
छं० ॥ १६८८ ॥
जयं कांन रायं, षलं छुट्टि बायं । सिरं तुट्टि पारं, रुधी छुट्टि धारं ॥
छं० ॥ १६८९ ॥

(१) मो०-ध्रत्त । (२) ए. कृ. को.- छुछी (३) ए. कृ. को.- गजं ।

नभं होम लग्गी घृतं होम षग्गी। घटं घट्ट धारं, दिवी घट्ट भारं॥
छं० ॥ १६६० ॥

झले षग्ग जग्गी, तिने लोक लग्गी। जिवं मुक्ति भट्टं, षली बंधि षट्टं॥
छं० ॥ १६६१ ॥

षरं धार चट्टं, षगं मग्ग षट्टं। सस्त्र वीर झारं, जुधं लीन भारं॥
छं० ॥ १६६२ ॥

मरं मार [1]मारं, पँगं बीर बारं। * * छं० ॥ १६६३ ॥

पृथ्वीराज के सात सामंतों का मारा जाना और पंग सेना का मनहार होना परंतु जैचन्द के आज्ञा देने से पुनः सबका जी खोलकर लड़ना।

कवित्त ॥ परिग पंग भर सुभर। राज रजपूत सत्त परि॥
लोथि लोथि पर चढ़ी। बीर बट्टीति कोट करि॥
परिग सूर जै सिंह। गौर गुज्जर पहार परि॥
परिय नन्द अरु कन्ह। अमर परि नाभ अमर करि॥
बग्गरी परिग रनधीर रन। रनरूँ धिग रिन मल्ल परिग॥
इन परत सूर [2]सत्तौ तिरन। पंग सेन ढट्टु कि करिग॥ छं० ॥१६६४॥

भुजंगी ॥ ठठुक्के सुसेनं मनं मीर मिल्लै। डरं [3]विहूरी सेन सब्बें निकल्लै॥
बरं बैर राठौर चहुआन [4]झल्लै। तबै लाष्षियं पंगु रा नेन लल्लै॥
छं० ॥ १६६५ ॥

तिंन उप्पजी रोस उर अम्म अग्गी। उतं निक्करे न्रिपनि कै नैन मग्गी॥
तिनं लुंविय नैन दीसै दिसानं। तबं चंपियं राज नें चाहुआनं॥
छं० ॥ १६६६ ॥

तिनं उप्पजी संष धुनि सिंगिधारं। तिनं बज्जियं नद्द नीसान भारं॥
लयं लग्गियं कन्न राजं संजोई। तिनं अप्पियं कंत कौवंड जोई॥
छं० ॥ १६६७ ॥

तिनें सुमरियं चित्त गंध्रब्ब सद्दं। उतं जोइयं मुष्ष सामंत हद्दं॥

(१) मो.-झारं, कृ.- कारं। (२) ए.- मत्तौ। (३) को.- विझ्झरी। (४) ए. कृ. को.- हल्लै।

बचनं सु सहं कवी चंद बोल्यौ। तवै भंजियं कन्ह सों सौ अबोलौ॥
छं० १६६८॥

तवें लग्गियं भान रायंति रायं।[1]उनं देषियं आज कौतूह चायं॥
तवै कोपियं वीर विजपाल पुत्तं। तिनं आवधां भारि झमझालि दुत्तं॥
छं०॥ १६६६॥

सवं संहरी सेन सौन्नह दीहं। इसौ नौमि तिथि थान प्रथिराज सीहं॥
तिनं राजसं तामसं बे प्रगट्टं। भरं मुक्कियं सब्ब सातुक्क बट्टं॥
छं०॥ १७००॥

सरं सार संपत्ति पेत्तति रच्छं। मनो आवधं इंद्र रुद्रानि कच्छं॥
बरं निडुरी ढाल गय पत्ति मत्तं। तबै उट्ठियं सूर सामंत रत्तं॥
छं०॥ १७०१॥

उतं भूमि भर धरनि ढहि ढरि सुपथ्थं। तिनं अथ्थि बिय हथ्थ प्रथिराज सथ्थं॥
बढे वीर सामंत सा बीर रूपं। जिसै सैल संदूर संदेस जूपं॥
छं०॥ १७०२॥

उड़ै विग्रवानै सुमानै उदंता। जिसें आरक फल फूटि होतें अनंता।
ततें कंपियं काइरं लोह दुत्तं। मनों अनिल आरंभ प्रारंभ पत्तं॥
छं०॥ १७०३॥

इसौ जुद्ध आवद्ध मध्यान हूअं। रहे हारि हथ्थं जु जूवारि जूअं॥
छं०॥ १७०४॥

दूसरे दिन नवमी के युद्ध के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त॥ तिथि नौमी सनिवार। मेष संक्राति सिंघ ससि॥
गंज नाम बर जोग। चित्त जोगिनी वाम बसि॥
दिन नछित्त रोहिनी। जांम मंगल बुध तीजौ॥
के इंद्री गुर देव। भान ससि राह सुभीजौ॥
बर द्रष्टि येह ग्रह दान रन। नवमि जुद्ध [2]अवद्ध वजि॥
पहुपंग बीय सुमुह ढरी। चावद्दिसि रथ्थै सु सजि॥ छं० ॥१७०५॥

(१) ए. कृ. को. तिनं। (२) ए. कृ. को.- अवरत्ति।

जैचन्द की आज्ञा से पंग सेना का कोप करना और चौहान की तरफ से पांच सामंतों का मोरचा लेना। इन्हीं पांचों के मरते मरते तीसरा पहर हो जाना।

तद्दिन रोस रट्ठौर। चंपि चहुआन गहन कहि ॥
सौ उप्पर सैं सहस। [1]बीह अगनित्त लष्ष दहि ॥
छुटि डुंगर थल भरिग। फुदि जल थलति प्रवाहिग ॥
सह अच्छरि अच्छहि। विमान सुर लोक बनाइग ॥
कहि चंद दंद दुंहु दल भयौ। घन जिम सिर सारह झरिग ॥
हरि सैस ईस ब्रह्मानि तनि। तिहुं समाधि तद्दिन टरिग ॥ छं० १७०६ ॥

पंग बीर गंभीर। हुकम अप्पौ जु गहन बर ॥
बर हैवर बर रम्य। दुग्ग देवत्त जुद्ध भर ॥
चित चषु भुज भर दंद। गोर सूरंत नषत हर ॥
चावहिसि चहुआन। हक्कि कड्ढी असिवर भर ॥
दल मुररि मुररि मोहिल मयन। नयन रत्त बोलिग सुभर ॥
जुग्गिनि पुरेस निंदरि चलिय। अबल होत उप्पर सुधर ॥
छं० ॥ १७०७ ॥

गाथा ॥ विपहुर [2]पहुरति परियं। हय गय भार सार [3]नथ्थेनं ॥
रह रंग रोस भरियं। उट्ठियं बीर बिबेनं ॥ छं० ॥ १७०८ ॥

कवित्त ॥ सुनिग माल चंदेल। भान भट्टी भुआल बर ॥
धनू बीर धवलेस। उट्ठि न्रिब्बान हक्कि बर ॥
तमकि सूर सामलौ। सार झल्लिय पहार भर ॥
पंच पंच तिय पंच। पंच पंचंत पंच बर ॥
दैवान जुद्ध पंचै भिरिग। भिरि भारथ्थ अपुब्ब बर ॥
बजि घरी पहर तीसर उठौ। [4]ज्यौं अगनि धुंम संजुत्त धर ॥
छं० ॥ १७०९ ॥

---

(१) मो.-बीरह। (२) ए' कृ. को महुगति।
(३) मो.-सथ्थेनं। (४) मो.-ज्यौं अगनि धुंमर जुत्त भर।

वीर योद्धाओं का युद्ध के समय के पराक्रम और उनकी वीरता का वर्णन ।

बाघा ॥ परि पंच जुद्ध सु बीर । बजि सस्त्र बज्जि सरीर ॥
भर अग्गि भंजन भीर । झुझझ्झी षग्गनि नीर ॥ छं० ॥१७१०॥
तुटि सस्त्र बस्त्र सरीर । मनु [1]तरनि सोभि करीर ॥
नरपत्ति षाहत बीर । तिन किलकि ओगिनि तीर ॥ छं० ॥ १७११॥
तजि सबन यों अन बीर । षग मिलिग झलिग सरीर ॥
दल मथत दल्लन अधीर । जनु समुद याहत कीर ॥ छं०॥१७१२॥
बर बरै अच्छरि बीर । जिन मुष्ष झलकत नीर ॥
तुटि अंत दंतन तीर । त्रिन्नाल मन कढि नीर ॥ छं०॥१७१३ ॥
बजि षग्ग नद्द निनद्द । [2]गज गजत सोरस मद्द ॥
गज रत्त रत्त जु ढाल । षग लगत भज्जत हाल ॥ छं० ॥ १७१४ ॥
सद व्रत्त जनु गहि दीन । तिन ईस सीस जुलीन ॥
घट उट्ठि धरियत अद्ध । चंदेल माल विरुद्ध ॥ छं० ॥ १७१५ ॥
सिर हथ्थ साहि प्रमान । कर नंषि दिसि चहुआन ॥
बर [3]पंग है गै बीत । भारथ्थ दस गुन गीत ॥ छं० ॥ १७१६ ॥

उक्त पांचों वीरों की वीरता और उनके नाम ।

कवित्त ॥ परे पंच बर पंच । सुभर भारथ्थह षुत्ते ॥
उंच हथ्थ करतूति । उंच बड़पन बड़ जुत्ते ॥
तिल तिल तन तुट्टयौ । [4]पंग अगनित दल भंजिय ॥
पंच पंच मिलि पंच । रंभ साहस मन रजिय ॥
दिन लोक देव आनंद कर । बर बर कहि कहि झग्गरैं ॥
इन परत पंग जो गति बुझी । षिझत फिरी पारस परैं ॥
छं० ॥ १७१७ ॥
पन्यौ माल चंदेल । जेन धवली धर गुज्जर ॥
पन्यौ मान भट्टी । भुआल थट्टा धर अग्गर ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सरनि । (२) ए. कृ. को.-गज गजत सोरह मद्द ।
(३) ए. कृ. को.-पंच । (४) ए.-अंग ।

यर्‍यौ छूर मामखौ। जेन बानै मुष मच्छइ॥
इ सै तेन पांवार। जेन विरदावल अच्छइ॥
न्त्रिब्बान बीर धावर धनू। [1]इनुय नरिंद अनेक बल॥
इन परत पंच भय बिप्पहर। अगनित भंजि असंष दल॥
छं० ॥ १७१८ ॥

पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये जैचन्द की प्रतिज्ञा।

चढ्यौ सूर मध्यान्ह। पंग परतंग गहन किय॥
[2]सुरनि षेह षह मिलिय। श्रवन इह सुनिय सुलीय लिय॥
तब नरिंद अंगलिय। कोह कढ्ढौ सु वंकि असि॥
धर धूमिलि धुम्मरिय। मनहु, दल मझ्झि दुतिय ससि॥
अरि अरुन रत्त कौतिक कलस। भयौ न भय सुभिरंत भर॥
सामंत निघट पंचह परिग। नृपति सपिट्ठिय पंच सर॥
छं० ॥ १७१९ ॥

साटक॥ इक्कं तोन सकट्ठियं कर धरं, पंचास [3]वर्द्धासने।
उत्तारे सहसं सु बीय उडनं, लष्षं चलष्षं त्रियं॥
सब्बं पारि इमंच क्रित्त जनकं, पत्तं च धारायनं॥
एवं बाहु, सु बाह बान धरियं, द्रोनाहि पथ्थं जया॥ छं० ॥१७२०॥

जैचन्द का अपनी सेना की आठ अनी करके चौहान को घेरना और सेना के साथ राजकुमार का पसर करना। उक्त सेना का व्यूहबद्ध होना। मुख्य योद्धाओं के नाम और उनके स्थान।

कवित्त॥ अष्ट फौज पहु, पंग। परिस चहु, आनह फेरिय॥
मीर धीर धरवान। षान असमानह केरिय॥
क्रोध परिग गजराज। सत्त मुर मह मीष बर॥
तिन मझ्झै मल्हन महेस[4]। बंसीति सहस भर॥
ता अग्ग केत कुंअर कंद्रप। दस सहस भर सु भर सजि॥

(१) ए. कृ. को.-इनिय। (२) ए. कृ. को.-सुरनि।
(३) मो.-पंचास वर्द्धाननें। (४) "सर" पाठ अधिक है।

ता अग्गै न्नपति [1]बज्जौल सजि । पंच सत्त गज मुष्ष गजि ॥
छं० ॥ १७२१ ॥

ता अग्गै तिरहुति नरिंद । बीर केहरि कंठेरिय ॥
बिच जद्दौं रा भान । देव दष्षिन भ्रम भेरिय ॥
ता अग्गै अंगोल । देव दहिया तत्तारिय ॥
मोरी रा मइनंग । बीर भीषम पंधारिय ॥
ता अग्ग सींह बल अंग बल । सजि समूह ब्रह्मह संयन ॥
प्रथिराज सेन दिष्षत गिम्मं । सुकविचंद बंटहि नयन ॥ छं०॥१७२२॥

वीर रस माते योद्धाओं का ओज वर्णन ।

रसावला ॥ पंग रा सेनयौ । रत्त आनी नयौ ॥
आइ संछुट्टियं । [2]दिट्टयं तुट्टियं ॥ छं० ॥ १७२३ ॥
बीर जं विप्फुरं । जोर अम्मं भुरं ॥
सस्त्र वाहं बरं । बज्जतं सिप्परं ॥ छं० ॥ १७२४ ॥
सस्त्र छुट्टं नियं । बघ्य जुध्यं लियं ॥
जुद्ध अद्धं मयं । बज्जि जुद्धं मयं ॥ छं० ॥ १७२५ ॥
क्रूर सूरं अरी । जानि मत्ते करी ॥
पाइ बज्जे घटं । बीर बोले भटं ॥ छं० ॥ १७२६ ॥
कूक मच्ची घरं । सार सारं भरं ॥
अंत रष्यं बरं । देव रष्यं घरं ॥ छं० ॥ १७२७ ॥
बोल जे जं बरं । फूल नंषे सिरं ॥
देव जुद्धं ननं । सूर बंटै धनं ॥ छं० ॥ १७२८ ॥
अंत गिद्धी कुड़ी । अंतरिछं उड़ी ॥
मम्म मुष्षं घरं । रष्य छक्के डरं ॥ छं० ॥ १७२९ ॥
कंम सत्तं बरं । द्रोन नंचै धरं ॥
थोर थोरं थनी । [3]अप्प ढुंढै धनी ॥ छं० ॥ १७३० ॥
चंद जीहं करी । गौ पथं उच्चरी ॥
गज्ज ढालं ढरी । दंत दंती परी ॥ छं० ॥ १७३१ ॥

(१) मो.-बज्जानि । (२) ए. कृ. को.-धावतं दिठियं । (३) ए. कृ. को.-अथ्थ ।

सोमि मुक्क करी। अस्स पंषी परी ॥
* * * । * * छं० ॥ १७३२ ॥

लड़ते लड़ते दोपहर हो जाने पर संभरी नाथ का कुपित हो हाथ में कमान लेना।

कवित्त ॥ दिनयर सुभ दिन जुद्ध। जूह चंपिय सामंतन ॥
भर उप्पर भर भर । परिहि उप्पर धावंतन ॥
दल दंतिन बिच्छुरहि। हय जु हय हय किन नंकहि ॥
[1]अछरि बर हर हार॥ धार धारन भ्रन नंकहि ॥
जय जया सद्द जुग्गिनि करहि। कलि कनवज दिल्लिय बयर ॥
सामंत पंच षित्तह षपिग। भिरत पंच भये [2]विप्पहर ॥
छं० ॥ १७३३ ॥

रन रत्तौ चित रत्त। [3]वस्त्र रत्तंत षग्ग रत ॥
हय गय रत्तै रत्त। मोह सौं रत्त बीर रत ॥
धर रत्त [4]पत रत्त। रुक रत्ते विरुझानं ॥
रत्त बीर पलचर सु रत्त। [5]पिंड रत्तौ हिय सानें ॥
विप्फुरे घाइ अघ्घाय फुट। पंग ठट्ट चंपे सु भर ॥
दैवत्त जुद्ध चहुआन वर। षिजि कमान लीनी सु कर॥ छं० १७३४॥

घनघोर युद्ध का वाकचित्र दर्शन।

मोतीदाम ॥ रजे रविरथ्थ रहस्सिय व्योम। धमक्किय बज्जिय गज्जिय गोम॥
जग्यौ रस तांम स पंगह पूर। गहग्गह राग [6]वज्यौ सम सूर ॥
छं० ॥ १७३५ ॥

नवम्मिय क्रत्यकसूर सु अम्म। घटी दह अठ्ठ सु [7]गव्वह दिम्म ॥
नयौ सिर आनि सु डुंगह देव। गह्यौ पहु जंगल सूर समेव ॥
छं० ॥ १७३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-कच्छर। (२) ए. कृ. को.-दुप्पहर।
(३) मो.-वस्त्र रत्ते सु। (४) ए. कृ.-पर।
(५) ए. कृ. को पिंड रत हिये न साने।
(६) ए. कृ. को.-मच्यौ। (७) ए. कृ. को.-गत्तह।

भुवन्नइ राज सु अंगइ अग्ग। कढ़ी करनट्टिय सिंघ सु बग्ग॥
तुरंगम पंति पयद्दल सक्क। जु सज्जिय अग्गइ सद्द सरक्क॥
छं० ॥ १७३७ ॥

धमक्किय धीम निसानन नद्द। झनंक्किय कातर सिंधु अमद्द॥
घट्टं मंडि सिंधुअ हूंपुर रेन। गद्दग्गह बद्ध कम्यौ सब सेन॥
छं० ॥ १७३८ ॥

उलट्टिग सिंधु सपंतिन अप्प। उरब्बिय सा जनु अंत कलप्प॥
मुरक्किय बग्ग सु अंगल राज। प्रगट्टित कोप '"धुअ" वर गाज॥
छं० ॥ १७३९ ॥

चढ़ चढ़ं चंब तरं रन तूर। सु रब्बर संघ सजे घन सूर॥
मिले पहु अंगल सेन सुपंग। मनौं मिलि सागर संग सु गंग॥
छं० ॥ १७४० ॥

जगे रस तामस नग्गिय षग्ग। मनौं रस हारि जु आरिय लग्ग॥
झरभ्भर बज्जिय धारनि धार। मनौं ससि झकस्सि तुट्टिय तार॥
छं० ॥ १७४१ ॥

लगे मुष नाग सकत्ति न झेरि। मनौं गजराज बजावत भेरि॥
हयद्दल पैदल दंतिय एक। लगे कर आवध सावध केक॥
छं० ॥ १७४२ ॥

झरभ्झर सेन झनक्किय झार। धरझ्झर लुथ्थि 'ढरें धर भार॥
'काढी चहुआन कमान सु बंक। मनौं षह सेन सु बीय मयंक॥
छं० ॥ १७४३ ॥

पृथ्वीराज की कमान चलाने की हस्तलाघवता।

दूहा॥ कढि कमान असमान घन। मझ्झि चमंकिय बीज॥
मनौं काल की जीभ ज्यौं। झकि कढ्ढी करि षीजि॥
छं० ॥ १७४४ ॥

तमकि तेज कोवंड लिय। अंगल वै जुध बान॥
असी लष्प दल तुच्छ गनि। न्याइ बंध्यौ सुरतान॥ छं० ॥१७४५॥

(१) ए. कृ. को.-घुअंमर। (२) ए. कृ. को.-धेरै। (३) ए. कृ को.-चढी।

पृथ्वीराज का जैचन्द पर वाण चलाने की प्रतिज्ञा करना और संयोगिता का रोकना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनहि संयोगि सु [1]लष्षिन ॥
आज हनों जैचंद। दंद ज्यौं मिटै ततष्षिन ॥
पिता मरन सुनि डरिय। करिय अरदास जोरि कर ॥
मोहि पंग बग सीस। कंत किज्जै सु प्रेम धर ॥
मन्नेव बचन संयोगि तव। चल्यौ राज अग्गे विमन ॥
कलहंत नारि जानिय सु चित। मिटै न गंभ्रव कौ बचन ॥
छं० ॥ १७४६ ॥

पृथ्वीराज के घोड़े की तेजी।

दूहा ॥ असी लष्ष दल उप्परै। नंषि वाजि प्रथिराज ॥
धरनि फट्टिकै गगन तुटि। भरकि सु कायर भाजि ॥ छं० ॥ १७४७ ॥

चहुआन की तलवार चलाने की हस्तलाघवता।

चोटक ॥ [2]चहुआन कमानति कोपि करं। पघनं पघनं प्रिथिराज बरं ॥
जिहि लष्ष असी दल तुच्छ करी। दल गाहि नरिंद जु मंझ फिरी ॥
छं० ॥ १७४८ ॥

बहि बान कमान धुंकार बजी। कि मनों बर पुब्बय मेघ गजी ॥
सर फुट्टि सनाहन भेदि परी। नर हथ्थ तरंगनि जुद्ध [3]तरी ॥
छं० ॥ १७४९ ॥

चहुआनति मुष्षहि बीर चढ़ी। सर नंषि तवां किरवान कढ़ी ॥
लगि राज उरं किरवान कटी। कि मनों हरि पै तड़िता विछुटी ॥
छं० ॥ १७५० ॥

चहुआन वही किरवान वरं। सु परे अरिषंड विषंड धरं ॥
[4]अरि ढाहि परे गजराज मृषं। सु वहै तिन बान कमान रुषं ॥
छं० ॥ १७५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-लच्छिन। (२) यह पंक्ति मो.प्राति में नहीं है।
(३) मो.-करी। (४) मो.-नित।

कटि मुंडि सु मेनम दंत कटी । सु मनों तड़िता घन मद्धि छुटी ॥
सु परे धर बीरति पंग भरं । प्रथिराज जयज्जय चंपि बरं ॥
छं० ॥ १७५२ ॥

सुकरी अरि [१]अप्प विडारत गज्ज । मनों बन जारिन जानि धनज्ज॥
उठे गज ढाल सु भंडहि भार । मनों फल भारह तुट्टिय डार ॥
छं० ॥ १७५३ ॥

ढहौ घन घाव सु डुंगह देव । भुवन्नह राव पर्यौ घह घेव ॥
भरक्किय सेन सु भग्गिय पंति । परे दह तीन सहस्सह दंति ॥
छं० ॥ १७५४ ॥

परे धर बीर सु पंग भरं । प्रिथीराज जयज्जय चंपि बरं ॥
छं० ॥ १७५५ ॥

सात घड़ी दिन शेष रहने पर पंगदल का छिन्न भिन्न होना देख कर रयसलकुमार का धावा करना।

कवित्त ॥ घरिय रस्स रवि सेष । भयौ कलहंत ताम भर ॥
वज्र घात सामंत । अग्गि लग्गी सु षग्ग भर ॥
हलहल्लंत दल पंग । दंग चहुआन जाम [२]भय ॥
तब आयौ रयसल्ल । बिरद भैरूं सु भूत रय ॥
हाकंत हक्क बर उव्वरिग । अतुल पान आजान हुअ ॥
कमधज्ज लग्गि कमधज्ज छल । बीर धीर विजपाल सुअ ॥
छं० ॥ १७५६ ॥

पृथ्वीराज के एक एक सामंत का पङ्ग सेना के एक एक सहस्त्र वीरों से मुकाबला करना ।

दूहा ॥ सहस बीर भर अप्प बर इक इक रष्षै रिंघ ॥
संभरि जुध सामंत सम । मनों लग्गि सम सिंघ ॥ छं०॥१७५७॥

घमासान युद्ध वर्णन ।

(२) ए. कृ. को.-अप्प । (३) ए.-कृ.-को. भुव ।

पद्धरी ॥ लग्गे सु सिंघ सम सिंघ धाइ। बहुआन सूर कमधज्ज राइ ॥
हाकंत मत्त भारंत तेक। इम संत रत्त हलि चलन एक ॥
छं० ॥ १७५८ ॥

गय नभ्भ सूर रुधि रत्त भौन। पसरै मरीच नह मभ्भि तौन ॥
संचार कन्न सद्दौ न व्योम। धुंधरिग धाम दह दिग्ग धोम ॥
छं० ॥ १७५९ ॥

पावै न मध्य गिद्धी पसार। भिद्दै न अन्य षह अड्ड धार ॥
[1]देषंत सूर[2]कौतिग्ग सोम। नारद्द आनि अध निरषि व्योम ॥
छं० ॥ १७६० ॥

षह चरह सुद्ध सुभ्भै न कंक। घन घुरह षेह पूरित पलंक ॥
अच्छरिय रथ्थ रुद्धंत सीस। पावै न बरन इच्छंत ईस ॥
छं० ॥ १७६१ ॥

पत्तौ सु काल रयसन्न रूप। गह गह चवंत बहुआन भूप ॥
भौ तिमिर धुंध सुभ्भै न भान। प्रगटै न अप्प द्रिग अप्प पान ॥
छं० ॥ १७६२ ॥

दिष्षहि न सूर सामंत राज। संग्रहौ सह दल सकल साज ॥
सह्यौ सु कन्ह सामंत हह। हो जैत राव जामानि जह ॥
छं० ॥ १७६३ ॥

निद्धुरह सिंघ सुनि अत्त ताइ। सुभ्भै न ईस सौधौ सु राइ ॥
वंध्यौ सु सूर चौरंगि नंद। लध्यौ सु राज अरि लष्ष वृंद ॥
छं० ॥ १७६४ ॥

वंध्यौ सु कन्ह धुअ गेन धार। गय पंग ढारि बंधौ सु पारि ॥
कम्यौ सु श्रवन सुनि अत्तताइ। भौंहा सु धीर धरि तौन धाइ ॥
छं० १७६५ ॥

हलकंत सथ्थ सामंत तार। मानहु क्रमंत हरि दंत भार ॥
विहथंत कोपि वाहंत कोन। भिद्दंत सिंधु उड्डंत श्रोन ॥
छं० ॥ १७६६ ॥

प्रगटंत भाक पावक [3]धोम। किलकंत घुंटि संठी सु व्योम ॥

(१) ए. कृ. को. देषन्न। (२) मो.-कौतिक्क। (३) ए. मो. धोम।

धमकंत नाग धर असि उसंध । धड्कंत कंध क्रूरंभ बंध ॥
छं० १७६७ ॥

घर तुट्टि धरनि पल पलनि पंक । तन खन श्रवन ब्रह्मान संक ॥
गय ढार मार सुषमत्त भार । प्रगटंत मझि दुष्ष दल पगार ॥
छं० ॥ १७६८ ॥

रखंत पारि पंगुरह सेन । निरषंत स्वामि सामंत नेन ॥
* * * * * * छं० ॥ १७६९ ॥

नवमी के युद्ध का अंत होना ।

दूहा ॥ संझ सपत्तिय न्रप तिरन । बिय पारस पर कोट ॥
रहै सूर सामंत जकि । देषि न्रपति तन चोट ॥ छं० ॥ १७७० ॥
दोइ बर अश्रवनि पष्षरह । दुअ न्रप इक संजोइ ॥
इह अवस्थ अंषन लषी । इम जीवन न्रप तोइ ॥ छं० ॥ १७७१॥

सामंतों का कहना कि अब भी जो बचे हैं उन्हें लेकर दिल्ली चले जाओ ।

इह कहि न्रप लग्गे चरन । सांई दिष्षत अंषि ॥
[1]जाहु सुजीवत जानि घर । पंच सु बीसह नंषि ॥ १७७२ ॥
जीत हारि न्रप होत है । अरु हांसी दुज्जन लोग ॥
जुरि धर अद्ध निरद्ध किय । अब जंगल वै भोग ॥ छं० ॥ १७७३ ॥

नवमी के युद्ध में तेरह सामंतों का मारा जाना ।

सविता सुन दिन जुद्ध बर । भौ रस रुद्र [2]समंत ॥
होत संझ नवमिय दिवस । परे तेर सामंत ॥ छं० ॥ १७७४ ॥

मृत सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ परे रेन रावत्त । राम रिम जंग अंग रस ॥
उठत इक धावंत । पंच वाहंत बीर दस ॥
बलि बारड मोहिल । मयंद मारुअ मुष मध्ये ॥
आरेनो अरि लंघि । पंग पारस दल बद्धे ॥

(१) ए. कृ. को.-जाह सु जीवत ।　　(२) ए.-समात ।

नारेन वीर बंधव बरन। दिव देवान [1]भी देवरी ॥
कलहंत बीज सामंत मृत्र। रष्यौ स्वामि सिर सेहरी ॥छं०१७७५॥

संध्या का युद्ध बंद होना।

दूहा ॥ संझ सपत्तिय रत्ति भर। फुनि सज्जै दल पंग ॥
चलिग पंति [2]पहु पंग मिलि। जुद्ध भरनि किय जंग ॥
छं० ॥ १७७६ ॥

पंग सेना के मृत रावतों के नाम।

कवित्त ॥ कमधज्जह रयसल्ल। बिरद भैरू सु भूत गहि ॥
कर नाटिय किय सोर। राग सारंग यद्द यहि ॥
सु पहु गुंड सु ग्रीव। राव बघ्घेल सिंघ बर ॥
मोरी [3]का सु मुकंद। पुट्ठि भौमेह पंति धर ॥
न्रप कन्ह राव मरहट्ठ वै। हरिय सिंघ [4]हयनेव पर ॥
नरपाल राव नेपाल पति। राइ सल्ल क्रमि लै सभर ॥
छं० ॥ १७७७ ॥

नवमी के युद्ध की उपसंहार कथा।

विज्जुमाला ॥ नवमिय [5]सूरन सूर। बज्जिग विषम तूर ॥
गहन [6]गट्टन पंग। बज्जिग सज्जिग जंग ॥ छं० ॥ १७७८ ॥
तरनि सरनि सिंधु। धरनिति मिर धुंध ॥
संचार गौ मय बानि। झलकि सज्जित जानि ॥ छं० ॥ १७७९ ॥
सघन जुग्गन जूप। प्रगटित पहुमि रूप ॥
सज्जित सु चहुआन। करषि कर कम्मान ॥ छं० ॥ १७८० ॥
रजति रामठि संक। मनहु लेयन लंक ॥
घुट्टि छुग्गुन कंन। बहिया तुरंग [7]तंन ॥ छं० ॥ १७८१ ॥
पष्षर सब्बर सार। प्रगटि उरनि पार ॥
सनमुष पंग सेल। सहित सूरन ठेल ॥ छं० ॥ १७८२ ॥

---

(१) ए. कृ. को. गयौ। (२) ए. कृ. को-पहुपंति।
(३) मो.-पाम। (४) मो. हथनेर। (५) मो.-सूअन।
(६) ए. कृ. को.-गन। (७) ए. कृ. को.-छंन।

बड्डिग बिष्षम सार । प्रगटि उरनि पार ॥
धार धार लगि झार । धरनि धर सुट्टार ॥ छं० ॥ १७८३ ॥
रयसल्ल लष्षिय राज । क्रमि गहनं भु साज ॥
लषि सम रज धाय । आइ लगि अततोइ ॥ छं० ॥ १७८४ ॥
'हय हौय सिंगी झार । नष्षौ सु पूर पगार ॥
उद्दिग क्रमि सु सूझ । मंडि गज सिंघ 'रूझ ॥ छं० ॥ १७८५ ॥
रयमल्ल परे पिष्षि । क्रमे गह राज रिष्षि ॥
मिलौ कन्ह अत्ता ताइ । रिषि रन रुक्कि राय ॥ छं० ॥ १७८६ ॥
परे दह सत्त घाइ । सघन घइ अप्प आइ ॥
परे अन्न भूय पिषि । भोग सेन सब लषि ॥ छं० ॥ १७८७ ॥

पंग सेना का पराजित होकर भागना तब शंखधुनी योगियों का पसर करना ।

दूहा ॥ भगे सेन विजपाल न्रप । लषि भै तामस राइ ॥
सहस एक भर संब धर । कहि हय छंडि रिसाइ ॥ छं० ॥ १७८८॥
बाते संष बिरद्द धर । बैरागी जुध धीर ॥
सूर संष न्रिप नामि सिर । भर पहु मज्जन भीर ॥ छं०॥१७८९ ॥

शंखधुनी योद्धाओं का स्वरूप वर्णन ।

कवित्त ॥ पवंग मोर पष्षरह । मोर ग्रीवत गज गाहिय ॥
मोर टोप टट्टरी । मोर मंडित संनाहिय ॥
मोर माल उर संष । संक छंडिय भय भग्गिय ॥
धार तिथ्थ आदरिय । पंग सेवहि वैरागिय ॥
तिहि डरनि डारि घल्लै । तिनहिं नित राज अग्गे रहै ॥
हल हलत सेन सामंत भय । मुक्कि मुक्कि अप्पन कहै ॥छं०॥१७९०

पृथ्वीराज का कवि से पूछना कि ये योगी लोग जैचन्द की सेवा क्यों करते हैं ।

दूहा ॥ रिषि सरूप संषह धुनिय । अति बल पिथ्थ कहंद ॥
बैरागी माया रहित । किमि सेवै जयचंद ॥ छं० ॥ १८९१ ॥

(१) मो.-हय हाय संगे झार ।　　(२) ए. कृ. को.-सूअ ।

कविचन्द का शंखधुनियों की पूर्व्व कथा कहना।

कहत चंद प्रथिराज। ए सब रिषि अवतार॥
मुनि नारद [1]परबोध भौ। कथ्थ सुनहु विस्तार॥ छं० ॥१७९२॥

तैलंग देश का प्रमार राजा था उसके रावत लोग उस से बड़ी प्रीति रखते थे।

कवित्त॥ सहस एक सुधवंस। सहस एकह धर सोहै॥
सेवा करत तिलंग। लष्य दस सरस अरोहै॥
एक सहस बाजिच। समुद तट सेवा सझै॥
वपु सु वज्र चित वज्र। एक निरलेप अरझै॥
सब एक जीव तन भिंन भिंन। बंस छत्तीस अषाढ़ सिध॥
पामार तिलंग हरि सरन हुअ। कुल छतीस धर दान दिध॥
छं० ॥१७९३॥

उक्त प्रमार राजा का छत्तीस कुली छत्रियों को भूमि भाग देकर बन में तपस्या करने चला जाना।

न्टप केहरि कंठेर। राइ सिंधुआ पाहारं॥
रा पह्वार परताप। पत्त डंडौर सु धारं॥
राम पमार तिलंग। जेन दिन्निय वसुधा दन॥
उज्जैनिय चक्कवै। करै सेवा तिलंग अन॥
सह सेक सुभट सब एक सम[2]। जब तिलंग परलोक गय॥
छचीन दान दिन्नौ तबहि। सहस सु भट बनवास लय॥
छं० ॥ १७९४॥

दिय दिल्ली तोंवरन। दई चावंड सु पट्टन॥
दय संभरि चहुआन। दई कनवज कमधज्जन॥
परिहारन मुर देस। सिंधु बारड़ा सु चालं॥
दै सोरठ जद्दवन। दई दच्छिन जावालं॥

(१) मो. परमोद। (२) ए. कृ. को.-मन।

चरना कच्छ दीनी करग । भट्टी पूरब भावही ॥
बन गए न्नपति बंटै धरा । गिरिजापति माला गही ॥छं०॥१७९५॥

राजा के साथी रावतों का भी योग धारण कर लेना ।

दूहा ॥ एक सहस रिष रूप करि । अजपा जपै सु नाम ॥
बन षंडह विश्राम किय । तप तप्पत तिन ठाम ॥छं०॥१७९६॥

ऋषियों का होम जप करते हुए तपस्या करना ।

पद्धरी ॥ रिषि मंगि आइ सुर धेन ताम । दीनी सु इंद्र बर होम काम ॥
रिषि तास दूध [1] बर करै होम । सच पत होइ तिन सुरभ धोम॥
छं० ॥ १७९७ ॥
अध्याय अधिन आजंन जप्प । रिषि करै सब्ब उन कष्ट तप्प ॥
तहं करत दैत्य बहु विघन [2] नित्त । भष्षी सु गाव बच्छी सहित्त ॥
छं० ॥ १७९८ ॥

एक राक्षस का ऋषि की गाय भक्षण कर लेना और ऋषियों का संतापित होकर अग्नि में प्रवेश करने के लिये उद्यत होना ।

विअष्षरी ॥ रिषि तहां बसै उभै सत वर्षं । राक्षस तहां धेन बछ भष्षं ॥
कोपवंत रिषि हुए सु भारी । सब मिलि अगनि प्रवेस विचारी ॥
छं० ॥ १७९९ ॥
इह उतपात चिंति नारद रिषि । आयौ तिन आश्रम समह सिषि॥
अरघ पाद सब्बह मिलि किन्नौ । मुनि सुष पाइह औ आधिन्नौ ॥
छं० ॥ १८०० ॥

नारद मुनि का आना और सब योगियों का उनकी पूजा करना ।

दूहा ॥ रिषि आवत नारद्द म,नि । लग्गे सब्बह पाइ ॥
फनपत्ती से दिष्षि करि । चरन पषालै आइ ॥ छं० ॥ १८०१ ॥

(१) ए. दूम ।　　(२) मो. वित्त ।

नारद मुनि का योगियों को प्रबोध करना।

दूहा ॥ मुनि प्रबोध मुनिजन कियौ । प्रति राक्षस कृत साप ॥
सो तुमकों लग्यौ सबै । तब रिष लग्गे ताप ॥ छं० ॥ १८०२ ॥

नारद का कहना कि तुम जैचन्द की सेवा करो वहां तुम युद्ध में प्राण त्याग कर साक्षात मोक्ष पावोगे।

विअष्षरी ॥ नारद रिषि उच्चरै सु बत्तं । सुनौ सबै इह इक करि चित्तं ॥
फिरि रिषि राज सु आयस दिद्धं । करौ तपस्या साधक [1]सिद्धं ॥
छं० ॥ १८०३ ॥

वरष बीस तुम तप्प सु तप्पे । एक चित्त करि अजया जप्पे ॥
तुम हौ छत्री जाति सबैं मुनि । तिहि आचरौ धार तीरथ फ,नि॥
छं० ॥ १८०४ ॥

और तप्प बहु काल अभ्यास । इंद्री ड,लै सबैं भ्रम नास ॥
धार तिथ्थ आदरै जु पत्री । सुष में पावै मुगति तुरत्ती ॥
छं० ॥ १८०५ ॥

धार तिथ्थ पहिलै छत्री धम्म। भू पर सबै और जानौ भ्रम ॥
कहौ कौन हम सों जुध आवै । देषत दूरिहु तें जरि जावै ॥
छं० ॥ १८०६ ॥

जग मध्ये जयचंद कमंद न्रप । अवनी उप्पर तास महा तप ॥
मानों इंद्र सरूप बिचारं । आयौ प्रथी उतारन भारं॥छं०॥१८०७॥
ता रिपु एक रहै चहुआनं । अवर सबैं न्रप सेवा मानं ॥
संभरि वै दिल्ली पति रज्जं । सौ सामंत सेव तिन सज्जं ॥
छं० ॥ १८०८ ॥

सो ढुंढा अवतारी भारी । ते तुम संमुह मंडै रारी ॥
जाउ तुम सेव जयचंद प्रति । एक लष्ष गढ़ तिन घर सोहति ॥
छं० ॥ १८०९ ॥

(१) ए. कृ. को.-चित्तं।

लष्ष असी तोषार पलानै । जग मध्ये तीनूं पुर जानै ॥
रषि सुनि बैन सबैं सुष पायौ । अच्छौ गुर उपदेस बतायौ ॥
छं० ॥ १८१० ॥

कवि का कहना कि ये लोग उसी समय से जैचन्द की सेना में रहते हैं।

दूहा ॥ रिषि आयस मंन्यौ सु रिष । संष चक्र धरि साज ॥
दिन प्रति सेवै गंग तट । सुनि विजपाल सु राज ॥ छं० ॥ १८११ ॥
मोर चंद्र मध्यै धरिय । जटा जूट जट बंधि ॥
संष बजावत सब्ब भर । सेवैं आइ कमंध ॥ १८१२ ॥

नारद ऋषि का जैचन्द के पास आना और जैचन्द का पूछना कि आपका आना कैसे हुआ।

बिअष्षरी ॥ धुज्जै भूमिरु अंबर गज्जै । तीन लष्ष वाजिच धुनिज्जै ॥
तुट्टि अकास तीन पुर भग्गै । जोग मायथौ जोगिनि जग्गै ॥
छं० ॥ १८१३ ॥

है षुर रज ढंकियैं सु अंबर । चढ़ै कमंध करि मेघाडंबर ॥
लष्ष पचास पड़ै हय पष्पर । हुअ मैदान मेर से भष्पर ॥
छं० ॥ १८१४ ॥

अग्गै जल पच्छै मिलि पंकं । सर वर नदी लादि सौं ठंकं ॥
पानी थान षेह उड्डै बहु । अंत कलष्प दूसी सुनियै कहु ॥
छं० ॥ १८१५ ॥

दस दिगपाल परैं भंगानं । मानव संस देव संकानं ॥
इन आडंबर चढ़ि कमधज्जं । आतपच ढंक्यौ उडि रज्जं ॥
छं० ॥ १८१६ ॥

यौं जयचंद तपै तट गंगा । नाम सुनंत होइ अरि पंगा ॥
नारद मुनि आये तिन ठामं । पंग उट्ठि तब कीन प्रनामं ॥
छं० ॥ १८१७ ॥

कुसल पुच्छि बहु सुष रिष किन्नं । चरन सु रज मस्तक न्रप दिन्नं ॥
किन कारन आए पुच्छै न्रप । भाग अज्ज मो नगर आय अप ॥
छं० १८१८ ॥
रिष्य कहै संभलि न्रप राजं । सावधान मन करे समाजं ॥
* * * । * * * छं० ॥१८१९॥

नारद ऋषि का शंखधुनी योगियों की कथा कह कर राजा को समझाना कि आप उनको सादर स्थान दीजिए।

दूहा ॥ नाद सु नारद जंपि इह । मुनि जैचंद विचार ॥
सहस एक षिची सु तन । सेवक तिलंग पंवार ॥छं०॥१८२० ॥
जीव एक देही उभय । अवतारी रजपूत ॥
जब पवांर परलोक गय । गह्यौ भेष अवधूत ॥ छं० ॥ १८२१ ॥
सागर तट तप सह्यौ । बरष उभै सित एह ॥
होम धेन राक्षस हतो । तिन डर डरो सु देह ॥ छं०॥१८२२॥
सब मिलि मरन विचारयौ । अगनि प्रवेस कुमार ॥
उभय भाग रिषि राज सुनि । हूं आयौ तिन बार ॥ छं० ॥१८२३॥
दहन बरज्यौ बोध दै । धारा [1]तिथ्थ सु सत्ति ॥
बेद पुरान प्रमान जुग । दस अट्ठह [2]संम्रत्ति ॥ छं० ॥१८२४ ॥

श्लोक ॥ जीविते लभ्यते लक्ष्मी । मृते चापि सुरांगणा ॥
क्षणं विध्वंसिनी काया । का चिंता मरणे रणे ॥ छं० ॥१८२५ ॥

कवित्त ॥ मुनि प्रबोध मन मानि । रिष्षि आये तुम पासं ॥
धारा तीरथ आदि । तहां साधन किय आसं ॥
मोर पंष जट मुगट । सिंगि संग्राम सु धारै ॥
मोह देह सब रहित । मरन दिन अंत विचारै ॥
कलहंत वार मिलकंत न्रप । संष नाद पूरंत सर ॥
जैचंद सेव आये सबै । [3]एक जीव उमया सु हर ॥छं०१८२६॥

(१) ए. कृ. को. तीरथ । (२) मो.-सुमृत्त ।
(३) मो.-" एक जीव उरभया सुहर" ।

नीसानी ॥ बषत बड़े कनवज्ज राय रिषि तेग गहाई।
संषधुनी सहसेक न्रप हुये जु सहाई॥
जब चल्लै संष सद्द दै गिरि मेर ढहाई।
लष्य असी मधि देषियै नारद बरदाई॥
ए अवतारी मुनी सबै पूरब पुनि पाई।
जब कोपे करि वार लै पुर तीन ढहाई॥
ए पराक्रमी सूरिमा हर उमया जाई॥ छं० ॥ १८२७॥

कवि का कहना कि तब से जैचन्द इन्हें अपने भाई के समान मान से रखता है।

दूहा ॥ राज पंग पय लग्गि करि। सब रष्षे निज पास॥
लष्य एक देही लहै। पुज्जै द्वादस मास॥ छं० ॥ १८२८॥
अति बर न्रप आदर करै। जेठा बंधव जोग[1]॥
तिनहि राज रष्षह रहै। ते छुटि अज जुध भोग॥
छं० ॥ १८२९॥

जैचन्द की आज्ञा पाकर शंखधुनियों का प्रसन्न होकर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ न्रिप केहरि कंठेर। राय परताप पट्ट चढ॥
सिंधुअ राय पहार। राम षम्मार थट्ट थढ॥
कट्ठिय आस सुकाज। पत्त गुडीर नरत्ता॥
पह परवत पाहार। रहै सांषुला सुमत्ता॥
अनेक सेव पति संष धर। सहस एक बिन मोह मत॥
अग्या सुपंग किल क्रंत क्रमि। अप्प अप्प मुष उप्परत॥
छं० ॥ १८३०॥

शंखधुनियों का पराक्रम।

हय हय हय आयास। केलि सज्जी सुब्योम सिर॥
किल किलंत का मंकि। डक बज्जी सुहंस हर॥

(१) मो.-जोग।

ओर राह पति संघ । हकि असि तारीय तत्ते ।
मनहुं पात त्रिघघात । पत्ति सामंत सुसत्ते ॥
इम संत सेन अम्भय उभय । चाहुआन कमधज्ज कस ॥
उच्चरिग आन अप अप्प मुष । रुकि धार रत्त सुरस ॥
॥ छं० ॥ १८३१ ॥

युद्ध की शोभा और वीरों की वीरता वर्णन ।

विज्जुमाल ॥ पैदलह मंत रत्त । जु गुर सुलह जुत्त ॥
बंचित सुचंद छंद । विज्जूमालवि वंद ॥ छं० ॥ १८३२ ॥
विमल सकल व्योम । रजति सिरनि सोम ॥
[1]प्रगटि ताम सपंग । हलि मिल्लि झिल्लि गंग ॥ छं० १८३३ ॥
सुरत सेन सुलष्षि । निरषि परषि पिष्षि ॥
विहसि द्रिग्ग करूर । बाजित बिंब तूर ॥ छं० ॥ १८३४ ॥
मुंछति निरति भौंह । भौंह दु कुंतल सोंह ॥
दल सु समुद दूप । अचवन अगस्ति रूप ॥ छं० ॥ १८३५ ॥
हाकंत संघ सुधार । वहत विषम सार ॥
धार धार लगि धार । भररंत तुट्टी भार ॥ छं० ॥ १८३६ ॥
किननंत सिर निसार । अचल मनु आधार ॥
हवकि हवकि संग । अनी अनी लगि अंग ॥ छं० ॥ १८३७ ॥
विहल कराल कूप । क्रिषित काल सरूप ॥
बानैत संघ समंत । अरिग सूकर अंत ॥ छं० ॥ १८३८ ॥
सु वचि सामंत राज । अप अप इष्ट साज ॥
सुमिरंत बीर मंत । आइग सब सुनंत ॥ छं० ॥ १८३९ ॥
एकित सु तोन धारि । कड्ढिग सिरनि सार ॥
धरनि सु धर धोर । हक हाक बजि भार ॥ छं० ॥ १८४० ॥
नंचित चीर षंग । थह थेई थंग ॥
घन नंक सघन घंट । किलकंत [2]गोम कंट ॥ छं० ॥ १८४१ ॥
गिधिय अंत गहेस । अंत सु लगिय तेस ॥

(१) ए कृ. को-प्रगटित ताम संग । (२) मो.-मोम ।

मनों बल बाला रंग। उचरंत चारु चंग॥ छं०॥ १८४२॥
सु रचि जट्ठर सार। अद्धध उद्ध विहार॥
फार फार टरे फेफ। परति [1]पंषी रेफ॥ छं०॥ १८४३॥
हकित सिर बिकंध। नचित धर कमंध॥
नचित रचि जटाल। संचि सिरनि माल॥ छं०॥ १८४४॥
सकति अघाइ घोर। बजि राग घंट रोर॥
रमित रम सभंद। आनंद चिल्हय व्रंद॥
चुंगल ग्रहंत पल। चुंच बल लै कमल॥ छं०॥ १८४५॥

शंखधुनी योगियों के साम्हने भौंहा का घोड़ा बढ़ाना।

दूहा॥ बजत संष दह सत्त। सघन नीसान धुनक्किय॥
पावस रिति आगमन। सिषर सिषि जानि निरत्तिय॥
तिन अमित्त पौरष्ष। सहस सामंत बिअप्पिय॥
निठ्ठुर जैत नरिंद। स्वामि अग्गौ धपि द्दिप्पिय॥
हहकारि सीस भौंहा सु भर। गहि अकास नंष्यौ स हय॥
उड़ मंडल उत्त निरष्षयौ। मनो बाज पंषी सु भय॥छं०१८४६॥

मांसभक्षी पक्षियों का बीरों के सीस ले ले कर उड़ना।

दूहा॥ रुंड मुंड पल षंड [2]भुअ। मचि योगिनि बेताल॥
चिल्हनि भष जंबुक गहकि। हर गुंथी गल माल॥ छं०१८४७॥
लै चिल्ही धम्मिय सु भर। हैं हर मिट्टी रूप॥
बीर सीस चुंगल चंपे। गय [3]ग्रधन्न अनूप॥ छं०॥ १८४८॥

एक चील्ह का बहुत सा मांस ले जाकर चील्हनी को देना।

कवित्त॥ लै चिल्हन सिर बीर। बीर भारथ्थ देषि भर॥
को तर पर तिह थान। विषम प्रब्बत सु रंग बर॥
उंच हच्छ बट अति सु रंग। पंष [4]घूंसल अध विच्चं॥

(१) ए. कृ. का.-पंर्या। (२) ए. कृ. को.-हुअ।
(३) ए. कृ. को.-ग्रहधन्न। (४) ए. कृ. को.-घूंसन।

तिहिं सु तट्ट चौसट्ठि। देषि आरंभन रघ्घं ॥
जिम जिम सु मौस भष्षन कियौ। तिम तिम सुभष्षै तीम भुष्ष ॥
पल भष्षत छुड भष्षित सकल। आनंदी पंषी सुनिय॥छं०॥१८४९॥

चील्हनी का पति से पूछना यह कहां से लाए।

दूहा ॥ आनंदी पंषी सकल। चिल्हानी पुछि कंत ॥
कहि कहि गल्ह सु रंग बर। सुष दुष जीवन अंत ॥छं०॥१८५०॥
चिल्हानी बुल्लि पत्ति सों। [1]जमंती बरअंत ॥
बड़ गुरजन बत्ती सुनी। सो दिट्ठी दिषि कंत ॥ छं० ॥ १८५१ ॥

चील्ह का कहना कि जैसा अपने पुरुषों से प्राचीन कथा सुनता था सो आज आखों देखी।

कवित्त ॥ पुब्ब सुन्यौ बर कंत। जुड बलि राइ इंद्र बर ॥
तिपुर युद्ध संकरि विरुद्ध। भारथ्थ पंड भर ॥
चंद जुद्ध तारक्क। कन्ह समिपाल लंक रघु ॥
जरासिंध जदवनि। दक्ष नंदी जु जगी अघु ॥
हरि जुड बीर [2]बीत्यौ असुर। पुब्ब सेन जंप्यौ मुनिय ॥
दिट्ठौ सु कंत भारथ्थ मैं। पुब्ब पच्छ अब नह सुनिय ॥१८५२॥

चील्हनी का पूछना किस किस में और किस कारणवश यह युद्ध हुआ।

श्लोक ॥ कस्यार्थे कंत भावीति। वरणं कस्य सुंदरी ॥
कस्य वैर विरुद्धं सौ। कस्य कस्य पराक्रमं ॥ छं० १८५३ ॥

चील्ह का सब हाल कहना।

जय्य वैर विरुध्धंसौ। बरनं कृत्य रंभयौ ॥
प्रथीभारो पंगराजो। जोधा जोधंत भूषनं ॥ छं० ॥ १८५४ ॥

चील्ह का चील्हनी से युद्ध का वर्णन करना और उसे अपने साथ युद्ध स्थान पर चलने को कहना।

(१) ए. कृ. को उमंती। (२) मो.-चित्यौ।

चौपाई ॥ [1]जुथ्यो जुथ्थि पुलथ्थि प्रमानं । भर बजि गज्जि बीर लुटि थानं॥
हेरे संमर रंभ हकारी । कहो कंत मो पन उचारी ॥छं०१८५५॥
दूहा ॥ सुनि विवाद चिल्लो सु बर । धुनि सुनि वर भारथ्थ ॥
उमा कंति चौसट्ठि दिय । रहि ससु पुच्छिय कथ्थ ॥छं०॥१८५६॥
पद्धरी ॥ [2]उत्तरी चिल्ह भारथ्थ कथ्थ । चौसट्ठि सुनौ सुनि कंत तथ्थ ॥
नर भिरै जुद्ध देवनि मसान । उत मंग गुरें हकि सौस थान ॥
छं० ॥ १८५७ ॥
सुनि दिव्व दिव्व जुद्धह सयंन । षग षगति जुद्ध बन निसवंन ॥
रथ रथनि रथ्थ गज गजन जुट्ट । बाजीन बाजि नर नर अहुट्टि॥
छं० ॥ १८५८ ॥
वर सुन्यो देवि भारथ अपुव्व । उद्दित्त बीर देषत सब्ब ॥
इह रित्त सब्ब बाजित्त सार । तन सिद्धि दिंत जोगिनि सु तार ॥
छं० ॥ १८५९ ॥
डमरू डक्क बज्जै [3]अजूप । तुंमर पिसाच पल चर अनूप ॥
गावंत गीत जुग्गिनिय [4]थान । आदत्त जुद्ध चक्कै न भान ॥
छं० ॥ १८६० ॥
नारद नद वैताल [5]डक्क । वर बैर रंभ फिरि वरै चुक्क ॥
नच्चै कमंध हकंत सौस । पीसंत दंत बंभनी रीस ॥ छं०॥१८६१॥
आचिज्ज जुद्ध जो दिषत तथ्थ । उड़ि चलौ कंत चौसट्ठि सथ्थ ॥
*   *   *   *   ।   *   छं० ॥ १८६२ ॥
कवित्त ॥ सुनत कंत आनंद । बीर आनंद चवसठी ॥
लै चिलहनि चलि सथ्थ । जुद्ध पिष्षन दिवि उठी ॥
उठे सूर बल ग्रंह । बान अरजुन जिम विद्धत ॥
एक भार उभझार । एक संमुष [6]षग संधत ॥
तेगां अचंभ सुभझै [7]सपत । चाहथ्यौ प्रथिराज दिषि ॥

(१) मो.-छोयी छोभि । (२) को. उत्तरी ।
(३) मो.-अनूप । (४) ए. कृ. को.-गान ।
(५) ए.कृ.को रुक्क । (६) मो.-मग । (७) ए. कृ. को सपनु ।

मोहिनि संजोग पहुपंग सुर। भेंन रम्न चहुआन लिषि ॥
छं० ॥ १८६३ ॥

शंखधुनी योगियों के आक्रमण करने पर महा कुहराम मचना।

दस हजार बर मीर। पंग आयस फिरि अप्पिय ॥
छुटिय बान कम्मान। मेछ चावद्दिसि धप्पिय ॥
सबर सूर सामंत। बीर बीरं बिरझानं ॥
गज्ज जिमी बर पत्त। पत्त झंकुरिआ थानं ॥
आवद्ध बीर प्रथिराज बर। असम सिंह आहुत्त बल ॥
लगि पंच बान उप्पर सु धपि। अगनित दल भंजै सु षल ॥
छं० ॥ १८६४ ॥

बड़ी बुरी तरह से घिर जाने पर सामंतों का चिंता करना और पृथ्वीराज का सामंतों की तरफ देखना।

दूहा ॥ दुतिय बेर सामंत फिरि। देषि श्रोन धर धार ॥
मन चिंता अति चिंतवन। ढिल्ली ढिल्ली पार ॥ छं०॥१८६५॥

कवित्त ॥ बान श्रोन प्रथु बीर। बाल देषो अग्गी हुअ ॥
समन बीर बिच राज। बान उड़गन जु मद्धि धुअ ॥
इसी लोह विप्फुरै। जानि लग्गै बिय अग्गा ॥
फिरि नंष्यै है राज। सूर साही न्रप बग्गा ॥
मोरे सु मीर मोहिल परिग। षग्ग मग्ग वोहिथ्थ रिन ॥
बर कन्ह सलष भोंहा न्रपति। फेरि न्त्रिपति दिष्यौ सु तन ॥
छं० ॥ १८६६ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का भी जी खोल कर हथियार चलाना।

सूर पत्त दित संझ। सूर चिंती रस मग्गा ॥
बन कट्ठी जल जलनि। राज अग्गा नन अग्गा ॥
अल्हन कुंअर नरिंद। कनक बड़ गुज्जर बीरं ॥
न्रप अम्बंबन चली। राज अप्पौ लिय तीरं ॥

संजोगि पीय दंपति दुहनि । सुष व्यालस आलस भिरिगि ॥
रवि मुदित चंद उग्गनि परह । फेरि पंग पारस फिरिग ॥
छं० ॥ १८६७ ॥

पृथ्वीराज का कुपित हो कर तलवार चलाना और बान बर्साना।

भ,कित पंग प्रथिराज । गहिय कर वार चंपि कर ॥
रोस मुट्ठि निस्तरिय । दंत बाही सु कुंभ पर ॥
धार मुत्ति आदरिय । पंति लग्गिय सुभ चीरहि ॥
मनहु रोस गहि षग्ग । ढाहि धारा धर नीरहि ॥
मनु दुतिय चंद बद्दल बिचै । पंति लग्गि उड़गन रहिय ॥
धर धुकत मंत इम दिष्पियै । मनहु इंद्र बज्जह बहिय॥छं०॥१८६८॥
दूहा ॥ पंग डंस चहुआन बर । मंच संजोगि सु भार ॥
संझ पार सम्हौ अरै । अरि पंचन रिपुचार ॥ छं० ॥ १८६९ ॥
कवित्त ॥ परी निस्सि ससि उदित । सूर सामंत पंति फिरि ॥
उतरि न्रपति प्रथिराज । लघु अनिस्संक अभंग करि ॥
उभै तुषार [१]तुषार । बान छुट्टै कमह बर ॥
उभै बीर सम्हौ नरिंद । सोभै सु रंग भर ॥
लग्गौ सु नैंन त्रिकुटी बिबिच । टोप फट्टि कंठं[२] सु भगि ॥
प्रथिराज सु बल संभरि धनी । जै जै जै आये सु लगि ॥
छं० ॥ १८७० ॥
दूहा ॥उभै दिवस बित्ते सकल । गत घाटिका निसि अग्ग॥
जो पुच्छै दिवि सकल तू । सुनि भारथ्थ [३]समग्ग ॥ छं० ॥ १८७१ ॥

इसी समय कविचन्द का लड़ने के लिये पृथ्वीराज से आज्ञा मांगना।

तीर तुबक सिर पर बहत । गहत नरिंद गुमान ॥
बरदाई तहां लरन कों । हुकम मांगि चहुआन ॥

(१) ए. कृ. को. निहार। (२) मो.-सुमग्ग। (३) ए. कृ. को.-लगि।

पृथ्वीराज का कवि को लड़ाई करने से रोकना।

हम झुझत रजपूत रिन। जंपत संभरि राव ॥
अमर किंत्ति सामंत करन। बरदाई घर जाव ॥ छं० ॥ १८७२ ॥

कविचन्द का राजा की बात न मान कर घोड़ा बढ़ाना।

किंत्ति करन गुन उद्धरन। जल्हन पच्छ सु लज्ज ॥
मोहि न्रिपति आयस करौ। ईस सीस द्यौ अज्ज ॥ छं० ॥ १८७३॥
बिन आयस प्रथिराज कै। धाय नंषयौ बाज ॥
कौ रष्षै सुत मल्ह कौ। ब्रूर नूर मुष लाज ॥ छं० ॥ १८७४ ॥

कविचन्द के घोड़े की फुर्ती और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज ॥ कविंद बाज नष्षयं। नरिंद चष्ष दिष्षयं ॥
मनों नछिच पातयं। ब्रू अंकि मझ्झि राजयं ॥ छं० ॥ १८७५ ॥
पवंन बेग पाइसं। तुरंग कब्बि रायसं ॥
न्रपत्ति अप्प पारषं। बियौ न कोइ आरिषं ॥ छं० ॥ १८७६ ॥
नचंत वै किसोरयं। हरै गुमान मोरयं ॥
धरा ऐराक ठौरयं। लियौ सु बप्प तोरयं ॥ छं० ॥ १८७७ ॥
दियौ चुहान मौर को। समुद्द की हिलोर को ॥
जराबयं पलानयं। अमोल पिठु ठानयं ॥ छं० ॥ १८७८ ॥
मनो कि रथ्थ भानयं। कविंद जाचि आनयं ॥
सु भंत अग्रकान के। मनों भलक्क बान के ॥ छं० ॥ १८७९ ॥
हरन्न सचु प्रान के। करे बिरंच पानि के ॥
हुती उपंम जोरयं। चिया सुमेन कोरयं ॥ छं० ॥ १८८० ॥
कि भोर चित्त हेत को। गरब्भ फाफ केतको ॥
प्रफुल्ल चंद मौजयं। कि पंषुरी सरोजयं ॥ छं० ॥ १८८१ ॥
पवन्न हीन पिष्षयं। कि दीप जाति सिष्षयं ॥
तमं दरिद्र भंजनं। पतंग ब्रूम दभ्भनं ॥ छं० ॥ १८८२ ॥

सुभंत केस वालयं। सरित्त ज्यौं सेवालयं ॥
सबद्ध कंध वक्र कौ। सगोल पुट्ठि चक्र कौ ॥ छं० ॥ १८८३ ॥
गिरद्द देत घुम्मरं। पलं इलंत भुम्मरं ॥
षुरं चमक्क उज्जलं। मनों घनंम विज्जुलं ॥ छं० ॥ १८८४ ॥
बरन्न गात भौंर सौ। इलंत पुंछ चौंर सौ ॥
करतं फौज हौसयं। दिष्यौ कनोज ईसयं ॥ छं० ॥ १८८५ ॥
षुरं रजं तुरंगयं। उड़ंत जोर जंगयं ॥
किरन्न सूर मंदयं। छुट्टंत तीर हद्दयं ॥ छं० ॥ १८८६ ॥
बजै निसान नद्दयं। गरज्ज ज्यौं सुमुद्दयं ॥
बहंत गज्ज मद्दयं। करंत सद्द रद्दयं ॥ छं० ॥ १८८७ ॥

कविचंद का युद्ध करके मुसल्मानी आनो को विदार देना और सकुशल लौट कर राजा के पास आजाना।

उठै रनं रवद्दयं। सुनंत भट्ट सद्दयं ॥
कमद्ध पंग उट्ठयं। सुमेर जेम दिट्ठयं ॥ छं० ॥ १८८८ ॥
करै हुकम्म पट्ठयं। गँभीर भीर श्रट्ठयं ॥
हुसैन षां कमालयं। षलील षां जलालयं ॥ छं० ॥ १८८९ ॥
पिरोज षां हुजावयं। फरीद षां निबाजयं ॥
अजव्व साज बाजयं। धरंत जुद्ध लाजयं ॥ छं० ॥ १८९० ॥
कुलं जरं गरिट्ठयं। भुजा तिनं बलिट्ठयं ॥
द्रिगं सु [१]घात रत्तयं। मनो गयंद मत्तयं ॥ छं० ॥ १८९१ ॥
लरंत मोर भट्टयं। छुटै हथ्यार थट्टयं ॥
करंत घाव घट्टयं। नचंत जेम नट्टयं ॥ छं० ॥ १८९२ ॥
अरी घटा दवट्टयं। कि विज्जुलं लपट्टयं ॥
परंत चट्ट पट्टयं। पिशाच अोन चट्टयं ॥ छं० । १८९३ ॥
सनद्ध हथ्थ भट्टयं। उभै सु मीर कट्टयं ॥
हयग्गयं सु अंगयं। कलंत श्रोन पंकयं ॥ छं० ॥ १८९४ ॥

(१) ए. कृ. को. -गात रत्तयं।

कृपान हथ्थ चंदयं। सु रग्गदेव बंदयं ॥
भरंत मीर अंगयं। निकट्ट तट्ट गंगयं ॥ छं० ॥ १८९५ ॥

घटं सु धाव घुम्मयं। परे सु मीर झुम्मयं ॥
लगे तुरंग अंगयं। संपूर लोह जंगयं ॥ छं० ॥ १८९६ ॥

घटं सु घाव घुम्मयं। परे सु मीर झुम्मयं ॥
लगे तुरंग अंगयं। संपूर लोह जंगयं ॥ छं० ॥ १८९७ ॥

फिर्यौ सु चंद तन्नयं। करन्न राज कन्नयं ॥
लगे न घाव गातयं। सहाय दुग्ग मातयं ॥ छं० ॥ १८९८ ॥

कवि का पराक्रम और राजा का उसकी प्रसंशा करना।

दूहा ॥ कुंजर पंजर छिद्र करि। फिरि बरदाई चंद ॥
तिन अंदर जिहनि भ्रमत। ज्यौं कंदरा मुनिदं ॥ छं० ॥ १८९९ ॥

कवित्त ॥ लरत चंद बरदाइ। करत अच्छरि बिरदावलि ॥
भरत कुसम गयनंग। धरत गर ईस मुंडावलि ॥
करत घाव कवि राव[1]। पिसुन परि बथ्थ पछौरत ॥
भरत पच कालिका। भूत बेताल उकारत ॥
जहं तहं ढरंत गज बाज नर। लोह लपटि पावक लहर ॥
मुष वाह वाह प्रथिराज कहि। कटक भट्ट किन्नौ कहर ॥
छं० ॥ १९००

कवि का पैदल हो जाना और अपना घोड़ा कन्ह को देना।

भयौ पाज कविराज। तंग रुक्यौ दल सायर ॥
कर कृपान चमकंत। कंपि थर हर कर काइर ॥
साज बाज रुधि भीज। किस्यौ छर हर गति नाहर ॥
भूमि तुरंग परंत। मुष्ष जंपिय गिरिजा हर ॥
कविचंद पयादौ हाइ करि। न्रप बिरदावलि आपू पढ़ि ॥

(१) मो.-कविराज।

बिलहान कन्ह चहुआन कौ। बगसि भट्ट सिर नाइ चढ़ि॥छं०॥१६०१॥

नवमी को एक घड़ी रात्रि गए जैचन्द के भाई का मारा जाना।

दूहा ॥ नौमी निसि इक घटि चढ़ी । बंधि परत षिझि पंग ॥
धाइ परे चहुआन पर । ज्यौं अगि मज्झर दंग ॥ छं०॥१६०२ ॥

जैचन्द का अत्यन्त कुपित होकर सेना को ललकारना। पंग सेना के योद्धाओं का धावा करना। उनकी वीर शोभा वर्णन।

भुजंगी ॥ धाए पंग राजं महा रोस गत्तं । सुनौ सावधानं रसं बीर बत्तं ॥
चले तीर तत्तं कहें मेघ बुट्टं । अले पंष पंषी तिते भज्जि छुट्टं ॥
छं० ॥ १६०३ ॥

कछू [1]पंष हीनं [2]तनं जान पायं । जिते वान मानं सरीरं बँधायं॥
महा तेज सूरं बरच्छी भ्रमायं । तहां बहु कब्बी उपम्माति पायं ॥
छं० ॥ १६०४ ॥

फलं उज्जलं सोभिते स्याह डंडं । मनों राह चंदं छडूडंत मंडं॥
बजे लोह लोहं बरं सूर रुट्टै । मनों इंद्र के हथ्य तें बज्र छुट्टै ॥
छं० ॥ १६०५ ॥

गदा लग्गि सीसं फुटे टूक टोपं । फुटी जानि भानं मयूषं अनोपं॥
[3]भिर तंनु दीसै न दीसै गुरंतं । तुटी सीस दीसं बलं जा अनंतं॥
छं० ॥ १६०६ ॥

पियं राग [4]सिंधू श्रवन्नं न [5]बट्टं । द्रवै सूर बीरज्ज अंगं उलट्टं ॥
तिनं कन्ह सूरं बलं जा [6]अमन्नं । तनं कि क्रमं रूप धावै दिवन्नं॥
छं० ॥ १६०७ ॥

बहै तेग वेगं गजं सीस धारं । दुहं अंग छंछं रुधी धार पारं ॥
कबीचंद मत्ती उपम्मा जु पट्टी । उपै बद्दलं जानि भारथ्थ कट्टी ॥
छं० ॥ १६०८ ॥

(१) मो.-पंग ।　(२) को.-तिनं, मो.-ननं　(३) ए. कृ. को.-भिरंजानि ।
(४) मो.-सोधें ।　(५) ए. कृ. को.-बट्टं ।　(६) मो.-अनन्तं ।

सुभै स्याम [1]फुंदा सनाहं मि जक्की। चलै रुद्ध धारं दुहुं अंग बक्की॥
उभै पंति बंधू ससी भौंर बीचं। उरं चंद मानो चलै चंद सीचं॥
छं० ॥ १९०९ ॥

करी बज्र बीरं न हल्लै हलाई। बधू बाल जैसें बधू ज्यौं चलाई॥
हसं हंस हंसं हसं पंच पंचे। उड़ै पंच पंचे भगी देह संचे॥
छं० ॥ १९१० ॥

सुनै सूर दिल्ली सु सोभै सु देहू। फ़ूले जानि सोभै मधू माधुकेहू॥
भये छिन्न छिन्नं सनाहं निनारी। मनों ग्रेह रज्जं मंडी जानि जारी॥
छं० ॥ १९११ ॥

दिषै देवि आई मुषं एक मोरं। कहै कोनं तो [2]सौज भारथ्थ जोरं॥
परे सीस न्यारे विरुभ्भाइ उट्ठे। विना सीस दीसै असं तंज छुटै॥
छं० ॥ १९१२ ॥

करै सीस हक्कै धपै दो निनारे। मनों केत ते राह दूनों हकारे॥
कही बत्त चिल्ही कहं ए सु जीयं। बनी नाहि जीहं सुकै कोटि कीयं॥
छं० ॥ १९१३ ॥

सामंतों का बल और पराक्रम वर्णन।

साटक ॥ छत्री जे पहपंग जुग्गिनि पुरं लोयंत धारा धरं॥
दुत्ती बज्जन बीर धीर सुभटं आलुथ्थि अलुथ्थनं॥
अंती अंत रुरंति भंजिति धरं धारं रुधिं पारयौ॥
चिल्ही जंभर बीर भारथ बरं जो गीव जत्ती गतं॥ छं० ॥१९१४॥

चिल्हनी का युद्ध देख कर प्रसन्न होना।

दूहा ॥ इह सुनि कर भारथ्थ गति। उद्दि चिल्ही चवसद्दि॥
सो भारथ्थ न दिट्ठयौ। पंषिन अंषिन दिट्ठ॥ छं० ॥ १९१५ ॥

कवित्त ॥ उठें एक धावंत। सहस रुद्दा अगिनित बल॥
क्रोध कियै दस होइ। सहस दसमध्य जूह पल॥
वाहंतै मुरपंच। लष्य सम्हौ उच्चारं॥
रुधिर पारसह हौंसु। पलह अगनित उभ्भारं॥

(१) ए.-फंदा। (२) ए. कृ. को.-तो सुज।

उच्चरै चिल्ह अस्तुति करी । साषि भरै सामंत दल ॥
भारथ्थ देवि मन उल्हसी । चिल्ह पंषि दिष्यौ सकल॥छं०॥१९१६॥

केहरि कंठीर का पृथ्वीराज के गले में कमान डाल देना ।

केहरि रा कंठेरि । स्वामि सिगिनि गर घत्तिय ॥
बरुन पास निय नंद । लोक पालह पति पत्तिय ॥
हसि हलकि हक्कारि । पंग पुत्तिय आनन पन ॥
तात अग्य संबरिय । राज राजन आनी धन ॥
चहुआन रथ्थ सथ्थह चढ़िय । नंषि बथ्थ कमधज्ज बर ॥
अब देषि बाल लालन सु पर । सुतन हाल बिच्चै सु बर ॥
छं० ॥ १९१७ ॥

संयोगिता का प्रत्यंचा काट देना और पृथ्वीराज का केहरि कंठीर पर तलवार चलाना।

दूहा ॥ गुन कढ्ढिय रमनिय सु वर । डसनह पंग कुंआरि ॥
असि बर झर प्रथिराज हनि । सूर हथ्थ नर वारि ॥छं०॥१९१८॥

तलवार के युद्ध का वाक् दृश्य वर्णन ।

चोटक ॥ निर वारि सु कढ्ढिय कंठ तनं । धर ढारि धरद्धर भार घनं ॥
झर लग्गिय झार उझार भरं । कटि मंडल षंड विहंड धरं ॥
छं० ॥ १९१९ ॥

लगि हक्कि सु धार सु बीर सुअं । कढिया किकरिम्मर धार धुअं ॥
असि रुंड सु मुंडन झुंझ पयट्ठ । मनों सुक कूटि कवारिय कट्ठ ॥
छं० ॥ १९२० ॥

जु क्रमे बर केहरि चंगल चंपि । ग्रहे कर पाव(१) उडंत उझंपि ॥
धरे सम जंगल पुच्छ सरोह । सनंषत मंडल उंडल सोह ॥
छं० ॥ १९२१ ॥

फिरक्कन आय धरप्पर धुक्क । किलक्कति चष्ष विलग्गिय कुक्क ॥
विभच्छह रस्स सु रच्चिय सेन । हयग्गय लुथ्थि तहीं पर श्रेन ॥
छं० १९२२ ॥

(१) ए-उर्डपि ।

धर ष्परि संष धरं सय मत्त । मुरक्किय सेन सु पंगु रषत्त ॥
मनो भगि धूर अधूर नरिंद । मुदंत मरीच अथंगय चंद ॥
छं० ॥ १६२३ ॥

नवमी की रात्रि के युद्ध का अवसान। सात सौ शंखधुनियों का मारा जाना।

दूहा । तिथ नौमी सिर चंद निसि । बारह सुत्त रविंद ॥
सुत चौरंगी संष धर । कहर कलह कविचंद ॥ छं० ॥ १६२४ ॥
संष धुनिय परि सत्त सय । मुर रामौ कमधज्ज ॥
अति सु अरिष्ट विचारयौ । जाय कि संभर रज्ज ॥ छं० ॥ १६२५ ॥

नवमी की रात्रि के युद्ध की उपसंहार कथा और मृत योद्धाओं के नाम।

कवित्त ॥ निसि नौमी सिर चंद । इक्क बज्जी षावद्दिसि ॥
भिरि अभंग सामंत । वारि वरषंत मंच असि ॥
अयुत जुड आवद्ध । इष्ठ आरंभ सत्ति बर ॥
एक जीव दस घटित । दसति ठेलै सु सहस भर ॥
दिठै न देव दानव भिरत । जूह रत्त रत्तिय सु षग्ग ॥
सामंत सूर सारह परिग । मोरे पंग अभंग दल ॥ छं० ॥ १६२६ ॥

भुजंगी ॥ भए राय दुअ कंक इक्कै समानं । परे सूर सोलह तिनं नाम आनं ॥
पस्यौ मंडलौ राव मारहनहंसौ । जिनै पारिया पंग रा सेन गंसौ ॥
छं० ॥ १६२७ ॥

पस्यौ जावलौ जाल्ह सामंत भारे । जिनै पारिया पंग षंधार सारे ॥
पऱ्यौ बग्गरी बाघ वाहे दुहथ्थै । भिरै षग्ग भग्गौ मिल्यौ हथ्थ बथ्थै ॥
छं० ॥ १६२८ ॥

पस्यौ बीर जादौं बली राव बामं । जिने नंषिगा गैंन गय दंत पानं ॥
पऱ्यौ साह तौ सर सारंग गाजी । दुहुं सथ्थ भष्षा भलौ हथ्थ माजी ॥
छं० ॥१६२६॥

पर्यौ पड्डरौ राव परिहार राना। पुले सेल साजै पुलै पंग बाना॥
'अबै उप्पटौ पंग आवड्ड नीरं। तबै सांपुला सिंह भुज'भानि भीरं॥
छं० ॥ १८३० ॥
पर्यौ सिंधुआ सिंधु सादूल मोरी। लगे लोह अंगं लगी जानि होरी॥
भिरैं भोज भग्गं मह्हीं सार भग्गं। पर्यौ मत्तह मानों मद्दौ जूह लग्गं॥
छं० ॥ १८३१ ॥
पर्यौ राव भौंहा उभै चंद साषी। इकै कुसुम नंषे इकै किति भाषी॥
जिसी भारथं षोहनी अट्ठ होमी। तिसी चैत सुदि रारि मिसी एक नोमी॥
छं० ॥ १८३२ ॥

कवित्त ॥ तब नायौ 'रयपाल। जहां ढिल्ली संभरि वै॥
मुहि सांई लगि मरन। चंद रु सूर साषि दुऐ॥
सार सिंगि सिर परत। फुट्टि सिर चिहुं दिसि तुट्टौ॥
धर धायौ असमान। अंत पय 'पय भर षुट्टौ॥
हटक्यौ सु कटक किन्नौ चटक। सब दल भयौ भयावनौ॥
अग जेठ भ्रुभ्भिभ्म धरनौ पर्यौ। अच्छरि 'करिहि वधावनौ॥
छं० ॥ १८३३ ॥

दूहा ॥ पहु पचार रट्ठौर रिन। जिहि 'सिंगिनि गुर कौन॥
भुज'भुअंग सामंत कय। गही संष धर लौन॥ छं० ॥ १८३४ ॥
तुरंग विछिं डिग षंडि तसु। करिग सु सस्त्र विसस्त्र॥
रुधिर धार धर उड्डरिय। भरिग उमा पति पत्र॥ छं० ॥ १८३५ ॥
राज पयंप्यौ भिरन भर। आज कहौं हिय छोह॥
भौंहा भौंह पराक्रमह। कुल चंदेल न हाहि॥ छं० ॥ १८३६ ॥

कवित्त ॥ जिनै सेष धर संष। पूर पूरत भुअ कंपिय॥
जिनै संष धर संष। भूमि डारत भर चंपिय॥
जिनै संष धर संष। राज गर सिंगिनि घत्तिय॥
सो संषद्धर असि समेत। आयास मपत्तिय॥

(१) ए. कृ. को.-वजै। (२) मो. जानि। (३) ए. कृ. को.-रजपाल।
(४) ए. कृ. को.-पथ, पथ्थ। (५) ए. कृ. को.-करिरहि।
(६) मो.-सिंगिन गर। (७) ए. कृ. को.-भुनंग।

धनि बीर बीर बीरम्म सुत्र । सु कज वारि अवधारितें ॥
सामंत सूर सूरन हनहि । सुकल किति विसतार तैं ॥छं० ॥ १९३७॥
दिट्ठी द्रुग्ग नरिंद । कासि राजा जुर अग्गिय ॥
राय हनों लंगूर । गोठि करनं कर भग्गिय ॥
पंग राय परतष्षि । जंग रष्षन रन सार्ई ॥
निसि नवमी ससि अस्त । गस्त [1]गौअर गहि पाई ॥
हकंत दंत चंप्यौ न्रपति । सामंतन असि बर बहिय ॥
भग पर्यौ सत्त आयंत कौ । कहिग सब्ब गहियन गहिय ॥
छं० ॥ १९३८ ॥

दूहा ॥ सिंधु जस्ति कमधज्ज दल । [2]विवरि अनी अन लष्ष ॥
दिय आयस कर उंचकरि । [3]कनक राइ परतष्ष ॥ छं० ॥ १९३९ ॥
एक लष्ष सेना सुभर । बाजि बज्ज रसबीर ॥
अनिय बंधि आषाढ़ नभ । बरषि बूंद घन तीर ॥ छं० १९४० ॥

युद्ध वर्णन ।

चोटक ॥ सजि सेन मनों मिलि मत्त जलं । मिलि उप्पर पुट्टि कमद्ध दलं ॥
घन नंकिय घंट सु बीर घुरं । भर निर्म्मल स्वामि सु नेह धुरं ॥
छं० ॥ १९४१ ॥
मिलि सेन उभै भर आतुरयं । हुअ नारि सु कातर कातरयं ॥
लगि लोह उभै भर संकरयं । असि पावक झाक बढी झरयं ॥
छं० ॥ १९४२ ॥
हय भार ढरै धर धार मुषं । किननं कहि धुक्कहि दुट्ट दुषं ॥
करि तुट्टहि संड सु सीस ढुरै । पय तुट्ट पुलै चक चीह करै ॥
छं० ॥ १९४३ ॥
भर सामंत जुद्ध अयास लगै । जय स्वामि सु अप्पह अप्प मगै ॥
निज दृष्ट सु सूरनि संभरियं । सुनि आइ सबै सोइ संधरियं ॥
छं० ॥ १९४४ ॥

(१) मो.-गौवर । (२) ए. कृ. को.-विचार । (३) ए. कृ. को.-कैचन राउ ।

भय बीर भयानक रुद्र रसं। धर नच्चि धरप्पर सीस कसं॥
जु कियं कर असि जुधं अधयं। दिठि दिट्ठि सुमीन सु सा जुधयं॥
छं० ॥ १९४५ ॥

[1]भय धुंधर रुक्क किलक्क बजं। गज तुट्टिय ढाल सु नेज धजं॥
भय सामंत जुद्दह सद्धरयं। जुरि जुद्दहि रुद्दमि सुद्धरयं॥
छं० ॥ १९४६ ॥

भ्रम छल [2]अछत्त सु राज भयं। जय आस उभै भर बीर गयं॥
छं० ॥ १९४७ ॥

सामंतों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ धनिव सूर सामंत। जीव लगि जतन न कीनौ॥
धनिव सूर सामंत। सबद जंपत पुर तीनौ॥
धनिव सूर सामंत। घाय दुज्जन संघारे॥
धनिव सूर सामंत। देष पिष्षौ रिन पारे॥
इतनौ सु कियौ प्रथिराज छल। कहत चंद उत्तिम हियौ॥
संदेह देवि पय लग्गि करि। तबहि गंग मज्जन कियौ॥छं०॥१९४८॥

अत्तताई का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ *चौरंगी नन्दन सुभर। अत्तातांइ उतंग॥
समरि ईस आनंद न्रप। धरि चिल्लल जुरि जंग॥ छं०॥१९४९॥

अत्ताताई की सजावट और युद्ध के लिये उसका ओज एवं उत्साह वर्णन।

पद्धरी ॥ जुरि जंग सूर चौरंगि नंद। धकि दंत मंत उप्पर मयंद॥
जा गिनिय पच लै [3]सजिय संग। उल्हास ईस आनंद अंग॥
छं० ॥ १९५० ॥

(१) ए. कृ. को.-धर। (२) ए. कृ. को.-असत्त।
* दिल्ली के राजा अनंगपाल तूंअर के प्रधान चौरंगी चहुआन जिनका बेटा अताताई था।
(३) ए. कृ. को. चलिय।

उत्तंग तोषि चिसूल बीर । गज्यौ गगन गल काल कंठीर ॥
पर सर पयट्ट मधि मत्त दंति । उभ्भारि कमल घग ढिग सु पंति॥
छं० ॥ १९५१ ॥

अखढोहि सु अख बीरत्त रत्त । भंजी सु पारि अरि अनिय मत्त॥
जय जय सु कित्ति जंपै अघाइ । नच्चै सु ईस भर रुंड पाइ ॥
छं० ॥ १९५२ ॥

प्राहार लत्त औरत्त एक । है गै तुटंत नर ताम तेक ॥
घन रुहिर भाक रंगिय सकत्ति । तन रत्त रुद्र रत्त ज्यौं अरत्ति॥
छं० ॥ १९५३ ॥

उठ्ठी तुरंग मुषि लग्यौ धाहि । चिसूल भारि धर धरनि ढाहि॥
जसवंत कमध कोपै करार । आयौ सु साज सह यट्ट सार ॥
छं० ॥ १९५४ ॥

प्राहार कियौ चहुआन जाम । [1]संग्रह्यौ हक्क कंठह सु ताम॥
असि घाइ सीस उप्पर उभार । प्राहार अवरि अवनी सु ढारि॥
छं० ॥ १९५५ ॥

रुहिरै सु पूर पावस प्रवाह । जल रत्त गंग भिलि भयौ [2]नाह॥
भग्गो सु सेन न्रिप पंग जाम । आइयौ हनू लंगूर ताम ॥
छं० ॥ १९५६ ॥

अत्ताताई पर मुसल्मान सेना का आक्रमण करना ।

दूहा ॥ तत्तारिय तमि पंग भर । करि उप्पर द्रिग बीर ॥
अत्ताताई उप्परै । आइ परक्कै मीर ॥ छं० ॥ १९५७ ॥

अत्ताताई का यवन सेना को विदार देना ।

कवित्त ॥ अततार्इ बर बीर । सेन रुंध्यौ तत्तारी ॥
छोह सामि तजि मोह । कोह कढ्ढी कट्टारी ॥
गहह अष्षि आभंग । वज्जि नंध्यौ बर बाही ॥
जाम समंत विप्फुरे । पंग सेना सब गाही ॥

(१) ए. कृ. को.-संग्रह्यौ कंठ हासिहक्क ताम । (२) ए. कृ. को.-ताह ।

तोषार [1]तुंग पष्वर सहित। परिग भीर गंभीर भर॥
पहु पंग फेरि पारस परिय। घटिय तीय घट्टी पहर॥
छं०॥ १९५८॥

अत्ताताई का अतुलित पराक्रम वर्णन।

अततार्इ बर बीर। स्वामि लद्धौ न पार बल॥
तीय पहर बाजिग्ग। बज्र बिच परे जूह पल॥
धर समुंद परमान। बह मेल्यौ देषी जुअ॥
धुअ प्रमान पै मंडि। धूम की नौत अप्प भुअ॥
धर परत धरनि उट्ठै भिरन। इक्कि सीस तिहि ईस बर॥
अंपरे बीर धरनी सु बर। बरन रंभ बंटेति भर॥ छं०॥ १९५९॥

बरन रंभ बंटयो। भरन पिष्षै पौरिष बर॥
बरन सु बर किय चित्त। सूर रंछिय रन चित्त भर॥
रंभ कहत्तिय आदि। सूर उर बसि उर मंडं॥
अममत्तौ जिन अंनि। बंद छंडे जिन छंडं॥
संभरी बोल तम बर बरी। भ्रित्त छंछ इच्छौ सु बर॥
नन बरे बरहि रहि सुबर। बन्यौ न को रवि चक्रतर॥
छं०॥ १९६०॥

कोपि चाइ चहुआन। तट्ठि तर सूर उपारिय॥
सिंगी नाद अनंद। इष्ट करि इष्ट संभारिय॥
सुधिर सत्त सामंत। रुधिर पष्वर लष संगह॥
रहसि राइ लंगूर। ग्रीव चंप्यौ आभंगह॥
जै सद्द बद्द जोगिनि करिय। अत्ताताइ उतंग सिर॥
भरि हरिय पंग पंगुर सयन। गंग सु रंगिय रंग ढरि॥ छं०॥ १९६१॥

अत्ताताई के युद्ध करते करते चहुआन का गंगा पार करना।

दूहा॥ ढरत सु धर चहुआन कौ। मद्धि गंग वै माहि॥
जय जय सुर जंपिय सु भर। धनि धनि अत्ताताइ॥ छं०॥ १९६२॥

(१) मो.-तुंगः।

गंधर्वों का इन्द्र से कहना कि कन्नौज का युद्ध देखने चलिए और इन्द्र का ऐरावत पर सवार होकर युद्ध देखने आना।

पद्धरी ॥ गंध्रब्ब सुग्ग[1] पत्ते सु जाम। आनंद उग्र उप्पनौ ताम ॥
आदर सु इंद्र दीनौ विश्राम। मेलयौ जुद्ध भल कौन काम ॥
छं० ॥ १९६३ ॥
गंध्रब कहै सुनि सुग्ग देव। सामंत जुद्ध पिष्षन स टेव ॥
जस करौ रथ्थ ऐराय इंद्र। देषनह जुद्ध कमधज्ज दंद ॥
छं० ॥ १९६४ ॥
सजि चले देव अन्नेक सथ्थ। सोभंत [2]रंग अनेक रथ्थ ॥
अपछर अनेक चालंत सुग्ग। अनेक सुभट लेपंत मग्ग ॥
छं० ॥ १९६५ ॥
गंगह दुकूल ढाहंत सेन। रेलयौ कटक सरिता प्रवेन ॥
अन्नेक करी वहता सु दीस। बेहाल मुष्ष पारंत चीस ॥
छं० ॥ १९६६ ॥
चंपे लंगूर अतताइ अब्ब। बंधेव तोम संकर गरब्ब ॥
सा बह बेध लाघव्व सार। मारंत सेन संगह प्रहार ॥ छं० ॥ १९६७ ॥
सामंत सज्जि चव ओर ओर। अनेक सेन बिच करत सोर ॥
रोपयौ बीच सित सकस षंभ। गज गाह बंधि देषत अचंभ ॥
छं० ॥ १९६८ ॥
पच्चास कोस रिन षेत रुध्ध। कीनौ सु जुद्ध सामंत धुध्ध ॥
* * * * ॥ * * छं० ॥ १९६९ ॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से अत्ताताई की कथा पूछना।

दूहा ॥ अत्ताताइ अभंग भर। सब पहु प्राक्रम पेषि ॥
लगी टगटगी दुष्ष दलनि। न्त्रिप कवि पुच्छि विसेष ॥ छं० ॥ १९७० ॥
अतुलित बल अतुलित तनह। अतुलित जुद्ध सु विंद ॥
अतुलित रन संग्राम किय। कहि उतपति कविचंद ॥ छं० ॥ १९७१ ॥

(१) ए. कृ. का.-सर्ग। (२) ए. कृ. को.-तठव।

कविचन्द का अत्ताताई की उत्पत्ति कहना कि तूअरों के मंत्री चौरंगी चहुआन को पुत्री जन्मी और प्रसिद्ध हुआ कि पुत्र जन्मा है।

कवित्त ॥ चौरंगी चहुआन । राज मंडल आसापुर ॥
तूंअर धर परधान । सु बर आनै इत्तासुर ॥
(१)धर असंष धन धरिय । एक नारिय सुषि धाइय ॥
तिहिं उर पुत्री आइ । पुत्र करि कही बधाइय ॥
करि संसकार दुज दान दिय । अत्ताताइय कुल कुंअर ॥
त्रिप अनँगपाल दीवान महि । पुत्र नाम अनुसरइ सर ॥
छं० ॥ १९७२ ॥

पुत्री का यौवन काल आने पर माता का उसे हरिद्वार में शिवजी के स्थान पर लेजाकर शिवार्चन करना।

अति तन रूप सरूप । भूप आदर कर उट्ठहि ॥
चौरंगी चहुआन । नाम कीरति कर पट्ठहि ॥
द्वादस बरष सु पुत्र । मात गोचर करि रष्यौ ॥
राज काज चहुआन । पुत्र कहि कहि करि भष्यौ ॥
हरद्वार जाइ बुल्ल्यौ सु हर । सेव जननि संहर करिय ॥
नर कहै रवन (२)रवनिय पुरुष । रूप देषि सुर उद्धरिय ॥
छं० ॥ १९७३ ॥

दूहा ॥ जब चिय अंग प्रगट्ट हुअ । तब किय अंग दुराइ ॥
अद्ध रयन लै अनुसरिय । सिव सेवन सत भाइ ॥ छं०॥ १९७४ ॥

शिवस्तुति।

विराज ॥ स्वयं संभु सारी । समं जे सुरारी ॥
उरं विष्य धारी । गरल्लं विचारी ॥ छं० ॥ १९७५ ॥
ससी सीस सारी । जटा जूट धारी ॥
सिरं गंग भारी । कटिं ब्रह्मचारी ॥ छं० ॥ १९७६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-धन। (२) ए. कृ. को.-नवनिय।

मया मोह कारी। अपंजा विडारी ॥
गिरिज्जास पारी। उछंगं सु नारी ॥ छं० ॥ १९७७ ॥
धरी वज्र तारी। चयं नाउंकारी ॥
प्रलै अहि झारी। करे नेन कारी ॥ छं० ॥ १९७८ ॥
अनंगं प्रहारी। मतं ब्रह्मचारी ॥
धरै सिंग सारी। विभूतं अधारी ॥ छं० ॥ १९७९ ॥
जुगं तत्त जारी। छिनं जे निवारी ॥
सुभ्रं सार धारी। [1]भुगत्तं उधारी ॥ छं० ॥ १९८० ॥
इसौ सिंभु राया। न दिष्यौ न माया ॥
तिनं किति पाया। जगत्तं न चाया ॥ छं० ॥ १९८१ ॥
चढ़े द्रब्य सीसं। विभूती वरीसं ॥
मनों क्रम्म रब्बी। अपं जोध सब्बी ॥ छं० ॥ १९८२ ॥
दूहा ॥ मात पिता बंधव सकल। तजि तजि मोह प्रमान ॥
दस कन्या बर संग लै। गायन गौ सुरथान ॥ छं० ॥ १९८३ ॥

कन्या का निराहार वृत कर के शिवजी का पूजन करना।

ईस जप्प दिन उर धरति। तजि संका सुर [2]बार ॥
सो बाली लंघन किये। पानी पत्र अधार ॥ छं० ॥ १९८४॥
पंच धनं पुज्जंत सिव। गहि गिरिजा तस पांनि ॥
चिय कि पुरुष इवि संभु कहि। विधि कलि बंध प्रमान ॥
छं० ॥ १९८५ ॥

शिवजी का प्रसन्न होना।

एक दिवस सिव रीझ कै। पूछन इछन लीन ॥
सुनि सुनि बाल विसाल तौ। जो मंगै सोइ दीन ॥ छं० ॥ १९८६॥

कन्या का बरदान मांगना।

मुझ पित जुग्गिनिपुर धनिय। अनंगपाल परधान ॥
पुत्र पुच [3]कहि अनुसरिय। जानि वितङ्कुर मानि ॥ छं० ॥ १९८७॥

(१) ए. कृ. को.-भुगत्त। (२) ए. कृ. को.-बाल। (३) ए. कृ. को.-कर।

कवित्त ॥ [1]विदित सकल सुनि चपल । सतीअ लंपट विन कपटे ॥
भगत उधव अरविंद । सीस चंदह दिषि झपटे ॥
गीत राग रस सार । सुभर भासत तन सोभित ॥
काम दहन जम दहन । तीन लोकह सोय लोकित ॥
सुर अनँग निद्धि सामँत गवन । अरि भंजन सज्जन रवन ॥
मो तात दोष बर भंजनह । तुअ बिन नह भंजै कवन ॥
छं० ॥ १९८८ ॥

शिवजी का बरदान देना ।

दूहा ॥ जयति जुवति संतोष घन । संचहि यासी आव ॥
सुबर बाल नन आइयै । सो विह लघ्यौ सु पाव ॥ छं० ॥ १९८९ ॥
पुच लिषिनि पुन्नैं कहौं । देउ सु ताहि प्रमान ॥
जु कछु इंछ बंछै मनह । सो अप्पौ तुहि ध्यान ॥ छं० ॥ १९९० ॥

शिवजी का बरदान कि आज से तेरा नाम अत्ताताई होगा और तू ऐसा वीर और पराक्रमी होगा कि कोई भी तुझ से समर में न जीत सकेगा ।

पद्धरी ॥ बोलेति सिंभ बालह प्रमान । आघात कियौ देवलनि आनि ॥
आना नरिंद बेताल हक्कि । डर करै नाथ बाला प मुक्कि ॥
छं० ॥ १९९१ ॥
षट मास गये बिन अन्न पान । दिघ्यौ सु चिंत निह कपट मान ॥
चल चलइ चित्त तिन लोइ होइ । पावै न देव तप झूठ कोइ ।
छं० ॥ १९९२ ॥
निश्चलह चित्त जिन होइ बीर । पावै जु सुर्ग सुष मद्धि कीर ॥
जगि जग्गि निसा तज्जिय बिजाम । सपनंत ईस दिघ्यौ [2]प्रमान ॥
छं० ॥ १९९३ ॥
अततांइ नाम तो धरौं बीर । पावैब राज राजन सरीर ॥
ना लषै पुत्त तुअ तात ग्रेह । तजि नारि रूप धरि ब्रम्म देह ॥
छं० ॥ १९९४ ॥

(१) ए. कृ. को.-दिवस तरल । (२) ए. कृ. को.-पनाम ।

जं होई सब्ब भारथ्थ काल। भंजै न तूअ तिन अंग साल ॥
किरनेव किरन फुट्टत प्रकाल । भंजैं सु षलह लुकि अग्ग धार ॥
छं० ॥ १९९५ ॥

भारथ्थ रमन जब होइ काल । मरअंत काल बाल हति बाल ॥
तुअ अंग जंग 'पुज्जै न जुद्ध। मानुच्छ कोन करिहै बिरुद्ध ॥
छं ॥ १९९६

जिन मध्य होइ अततांइ भान । कट्टिहै तिमिर दुज्जन निधान ॥
झलकंत कनक दिष्यौत बाल। जग्गयौ बीर तिन मध्य काल ॥
छं० ॥ १९९७ ॥

लच्छि कच्छि बंधी सु थाल । पावहि सु बीर बीरह बिसाल ॥
इह कहिरु बीर गय अप्प थान । विभ्भूत चक्र डोंरु प्रमान ॥
छं० ॥ १९९८ ॥

मालाति अरत्त दीसै उतंग । सिव रूप धरिग मन दुति अनंग ॥
सिर नेत दीन सुष्षम थान। इह काल करिग आयौ सु पान ॥
छं० ॥ १९९९ ॥

साटक ॥ जुत्तं जो सिव थान अनगति वरं, कापाल भूतं बरं ॥
डोंरु डक्कय नह नारद बलं, बेताल बेतालयं ॥
तूं जीता रन बारुनैत्र कमलं, जै जै अततांइयं ॥
ख्यातं मंचय छिति्त तारन तूही, पुज्जै न कोई बलं ॥ २००० ॥

कवि का कहना कि अत्ताताई अजेय योद्धा है।

दूहा ॥ नागति नर सुर असुर मय । असुर चित्त परमान ॥
तो जित्तै अततांइ जुध । सो नह दिष्षिय आन ॥ छं० ॥ २००१ ॥

अत्ताताई के वीरत्व का आतंक।

कवित्त ॥ अत्तातांइ उतंग । जुद्ध पुज्जैन भीम बल ॥
थुति धावत करै देव । चक्र वक्रैत काल कल ॥
गह गह गह उच्चार । मध्य कंपै मघवा भर ॥

(१) ए. कृ. को.-पुच्छै ।

अह कंपै हगपाल। काल कंपै सु नाग नर॥
उच्छाह तात संमुह करिय। जाय सपत्तह पुत्त पह॥
लभ्भै सु कोटि कोटिह सु नन। सो लभ्यौ [1]सत्ती सु दहि॥
छं० ॥ २००२ ॥

दूहा ॥ तूं तारन कल ऊपज्यौ। अत्ताताइ उतंग॥
जिन हुकंम कल कल करिय। करै सु रनह अभंग॥
छं० ॥ २००३ ॥

रन अभंग को करै तुहि। तूं बढ़ देवह थान॥
चाव दिसि सो भिंटई। हरत पान गुन मान॥ छं० ॥ २००४ ॥

उस कन्या के दिल्ली लौट आने पर एक महीने में उसे पुरुषत्व प्राप्त हुआ।

इक मास षट दिवस बर। रहि नृप दिल्ली थान॥
सु बर बीर गुन उप्पजिय। सुनि संभरि चहुआन॥ छं० ॥ २००५ ॥
भाई सोई पय सु लहि। बंछि जनम सँघ नाव॥
दुसतर जुग ने तीर ज्यौं। छुटै न बंधव पाव॥ छं० ॥ २००६ ॥
नर चिंता पाच तलभै। जौ परषन सुष्याइ॥
तौं बंधन छुट्टै परी। जौ सुद्धी जग्गाइ॥ छं० ॥ २००७

इस प्रकार से कवि का अत्ताताई के नाम का अर्थ और उसके स्वरूप का वर्णन बतलाना।

कवित्त ॥ सिव सिवाह सिर हथ्थ। भयौ कर पर समथ्थ दै॥
सु बिधि राज आदरिय। सत्ति स्वामित्त अथ्थलै॥
बपु विभूति आसरै। सिंगि संग्राह धरै उर॥
चिजट कथं कंठरिय। तिष्षि तिरसूल धरै कर॥
कलकंत बार किलकंत क्रमि। जुग्गिनि सह सथ्थै फिरै॥
चौरंगि नंद चहुआन चित। अततांइ नामह सरै॥ छं० ॥ २००८॥

(१) ए. कृ. को.-छत्ती।

आयौ तब ढिल्ली पुरह। ले चहुआन सु भार ॥
कोट सबै सामंत भय। अत्तताइ [1]हम नार ॥ छं० ॥ २००९ ॥
नमसकार सामंत करि। जब जब दिष्षहि ताहि ॥
तब तब राज बिराज में। रहैं भूप मुष चाहि ॥ छं० ॥ २०१० ॥
ढिल्ली सह सामंत सह। अमर सु क्रत ढिग थान ॥
[2]समर सिंघ रावल सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन ॥ छं०॥२०११ ॥
इह बत्ती कविचंद कहि। सुनिय राज प्रथिराज ॥
जुद्ध पराक्रम पेषि कैं। मंन्यौ सब क्रत काज ॥ छं० ॥ २०१२ ॥

अत्ताताई के मरने पर कमधुज्ज सेना का जोर पकड़ना और केहरि मल्ल कमधुज्ज का धावा करना।

कवित्त ॥ अततादृय धर पऱ्यौ। बाग उप्परी पंग भर ॥
गहन हुकम किय राज। बीर पंगुरा सुभर भर ॥
सस्त्र बीर प्रथिराज। दिसा केहरि करि मिल्लं ॥
हुकम बीर कमधज्ज। सस्त्र [3]ओडन सब भिल्लं ॥
कम्मान सीस धनि न्रपति गुन। कढ़ी रेष नरपत्ति बर ॥
सामंत सूर तीरह निकसि। करिग राज उप्पर सु भर ॥
छं० ॥ २०१३ ॥

पंग की कुपित सेना का अनेक वर्णन।

भुजंगी॥कहै चंद कव्वी कह्यौ ज्यों फुनिंदं।वरं चार चारं भुजंगी सुछंदं ॥
ससो सोम सूरं करूरं जु धायं। गिरि पंग सेनं छिनं भेह लायं ॥
छं० ॥ २०१४ ॥
करी बीर दूनं दुहम्नं दुहाइ। दुहुं अग्गि सिंगी दुहुं नैन नाई ॥
दोऊ बीर रूपं बिरूभझ्झाय धाई। मनों घोटरं टक्करं एक छाई ॥
छं० ॥ २०१५ ॥
अनी सों अनी अंग अंगी धरक्की। मनों भौंन भानं दुहुं बीच बक्की॥
मिलौ मंडली फौज पहूपंग घेरी। कियं क्रोध दिट्टी चहूआन हेरी॥
छं० ॥ २०१६ ॥

(१) ए. इम। (२) मो. अमर सिंह। (३) मो. ओड़त।

सवै सस्त्र मंतं श्रवतं ज सूरं । भरै दिष्ट वैरी लगै जे करूरं ॥
दिसा धुंधरी पंच विम्मान छायौ।किधों फेरि बरिषा जु आषाढ़ आयौ॥
छं० ॥ २०१७ ॥

गजै मार धारं निसानं प्रमानं । फिरै पंति दंती घनं सेस मानं ॥
बजै सद्द झिंगूर [1]उद्दंद क्रूरं । पढै भट्ट बीरं समं जानि [2]सूरं ॥
छं० ॥ २०१८ ॥

धजा सेत नीलं सु मतं फिरंती । मनों सुक्क मालं बगं पच्छ जंती॥
उडै सार धारं [3]किरवान तथ्थं।उड़ै झिंगनं जानियै बिज्ज सथ्थं ॥
छं० ॥ २०१९ ॥

उडै सार सारं असी बंक भारं।मनों अभ्भि[4]सरन बाल बज्यौ सवारं॥
भयं अंग रत्तं ढरै रुड्डि हल्ली। मनों हथ्थ पायं नदी जानि चल्ली॥
छं० ॥ २०२० ॥

कहै रंभ लेयं नहीं हथ्थ आवै । तिनं सार धारं सु मंगल्ल गावै॥
रही अच्छरी हारि मनोरथ्थ पुट्टै।मनो बिरहिनी हथ्थ तें पीउ छुट्टै॥
छं०॥ २०२१ ॥

ढलं ढाल ढालं सु रत्ती फिरंती । गुरं गज्ज छंडै चढ़ै पंष पंती॥
परे पंच सूरं जु भारथ्थ भारै । जिनं पंग सेनं सबं पग्ग भारै॥
छं० ॥ २०२२ ॥

दूहा ॥ पंग राव चहुआन बर । सब बित्ते कविचंद ॥
देवासुर भारथ्थ [5]नन । नन ब्रित्ते सुर इंद्र ॥ छं० ॥ २०२३ ॥

कवित्त ॥ परत पंच भारथ्थ । चंपि चहुआन अरुझि्झय ॥
डररि सब्ब सामंत । मुत्ति लड्डन मन सुझ्झिय ॥
धर धारव चंपिय सु । पंग पारस गहि नंषिय ॥
जियन जुद्ध तुछ कीय । कित्ति कीनी जुग सष्यिय ॥
कलहंत केलि लग्गी विषम । [5]तन सुरत्त बर उम्मरिय ॥
मनों पुहप हथ्थ बंधन पलह । अमर अप्प पूजा करिय ॥
छं० ॥ २०२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-उअंत । (२) मो. मूरं । (३) मो.-किरवान ।
(४) ए. कृ. को.-सन । (५) मो.-नन ।

युद्ध स्थल की पावस से उपमा वर्णन।

बर माधव पहुपंग। सार उत्तयौ सस्त्र भार॥
बज्जौ बर प्रथिराज। सोर मंडै अड्डै गिरि॥
सस्त्र तेज उट्ठाय। [1]सांम लगियन सु बंद असि॥
घरी एक धर धरे। सार बुट्टंन छूर धसि॥
अवरत्त बीय बज्जे विषम। भगि अष्यौ नर छूर विव॥
प्रथिराज दान घन दीय सस्त्र। ग्रहन राइ अरि भजन रवि॥
छं० ॥ २०२५ ॥

दूहा॥ छिनक उसरि बद्दलति दल। छच पंग सिर भास॥
हेम दंड चलि उद्दै सय। ग्रह चंपे रवि रास॥ छं० ॥ २०२६॥

पंगराज के हाथी की सजावट और शोभा।

कवित्त॥ रत्ति ढाल ढलंकति। रत्त अम्मरिय पीत धज॥
सेत मंत गज झंप। रत्त मंडत्त सहस गज॥
मनों राइ रवि व्योम। भोम चढ़ि पिष्षि दल त्ययं॥
सज्जि सेन कमधज्ज। अग्य दीनी अरि छिंबं॥
तिम चढ़त घटत किरनाल कर। भै अभंत चतुरंगिनिय॥
तन कढ्ढि करषि कायर धरषि। सुमरि सोम वासर गनिय॥
छं० ॥ २०२७॥

पंगराज की आज्ञा पाकर सैनिकों का उत्साह से बढ़ना। उनकी शोभा वर्णन।

दूहा॥ इन भज्जै संजोगि ग्रह। जीय संपतौ राज॥
अजुत जुड्ड रिन जित्तही। पंग सु भर [2]किहि काज॥छं०॥२०२८॥

रसावला॥ पंग कोपे घनं। लोह बज्जे झनं॥
ओड मंडे ननं। बीर बज्जै [3]रनं॥ छं० ॥ २०२९॥
चच्चरं चंगनं। चंपि पुत्ते मनं॥
बान रोसं भनं। अंत [4]तुट्टै घनं॥ छं० ॥ २०३०॥

---

(१) ए. कृ. का.-स्याम। (२) ए. कृ. को--कहि।
(३) ए. कृ. को. ननं। (४) ए. कृ. को.-लुट्टै

लज्ज बीरं अनं। बीर नंचै छिनं ॥
दंत दंती तनं। सीस चड्डी फनं ॥ छं० ॥ २०३१ ॥
माहि भेलं मनं। जोत दिष्षे कनं ॥
सोर लग्गो तिनं। जक्क जे संमनं ॥ छं० ॥ २०३२ ॥
सिंघ देषे तिनं। अब्ब मेरं मनं ॥
कोटि तप्पं तनं। षग्ग पावं छिनं ॥ छं० ॥ २०३३॥
सीस हक्के फनं। द्रोम नंचे घनं ॥
सूर दिष्षे छिनं। जानि कीयं ननं ॥ छं० ॥ २०३४ ॥
लज्ज पंकं षुतं। ढोरि षत्रं [1]जुतं ॥
लोटि घंनं मनं। किंत्ति बंधं तनं ॥ छं० ॥ २०३५ ॥

पृथ्वीराज की तरफ से हाड़ा हम्मीर का अग्रसर होना।

कवित्त ॥ हाड़ा राव हमीर। राय गंभीर बिबंधौ ॥
लष्यौ ना तोषार। लष्य जर जीन सहंदौ ॥
राज अग्ग फेरि यहि। जाहि जंगल पति जानहि ॥
चहुआन चामर नरिंद। जोगिनि पुर थानहि ॥
असि द्रुग्ग द्रुग्ग दल सों जुरिग। सामंतति सत्तह चढ़िग ॥
आलोह सेन लागन बिषम। [2]बलीदानं बामन बढिग ॥
छं० ॥ २०३६ ॥

पंग सेना में से काशिराज का मोरचे पर आना।

दूहा ॥ कासिराज सज्ज्यौ सु दल। फुनि अग्या दिय पंग ॥
गाजे भीर अभीर रनि। बाजे बिषम सु जंग ॥ छं० ॥ २०३७ ॥

काशिराज के दल का बल।

कवित्त ॥ कासिराज दल बिषम। मद्धि जानु तार बिछुट्टिय ॥
मिरिनि हार जुध धार। अद्ध अद्धह लिय बंटिय ॥
निघनि घात तन बात। घात हय घात अघानिय ॥
जनों जिहाज सायरिय। तिरन तुंगत तिहि बानिय ॥

---

(१) ए. कृ. को. मुतं। 　　(२) "मनों" पाठ अधिक है।

बल बंधि बलपति बत्त तिन। छिन छिनदा कमधज्ज दल ॥
भूचाल भूमि ऊथल पथल। इम सु छचि पहुपंग दल ॥
छं० ॥ २०३८ ॥

काशिराज और हाड़ा हम्मीर का परस्पर युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ हले पंग छत्रं, न छित्रं निधानं। उवं हड्ड हम्मीर गंभीर बानं॥
[1]हलं हाल भग्गी सु जग्गी जुआनं। रुधी धार उद्धार भूमी भयानं॥
छं० ॥ २०३९ ॥

समं सेल संदेह अंदेह गानं। हयं तानि छंडै न छंडे परानं ॥
बके राइ पंगे बद्दे पीलवानं। नभं गोम गज्जे व अंजीर थानं ॥
छं० ॥ २०४० ॥

निमा एक मेकं समेकं छियानं। दिमा धूरि धुंधी उड़ीगै[2]गिधानं॥
भिरै बीर सामंत तत्ते उतानं। महा भार भुत्ते सु सोई सु तानं ॥
छं० ॥ २०४१ ॥

दोनों का द्वंद युद्ध और दोनों का मारा जाना।

कवित्त ॥ हाड़ाराय हलक्कि उत। कासिराजह कर वर कसि ॥
जोगिनि पुर सामंत। बहत कनवज्ज बीर रस ॥
बियौ बीर आहुरिय। धरिय दंतह्लर आवध ॥
नामि बीर निज्जुरिय। करिय केहरि कुस रावध॥
उड़ि हंस मंस नंसह सुहर। कुहरति सा बांज्जय सुहर ॥
जग्गयौ नाग तब नाग पुर। होम दुरग धामंक धर ॥छं०॥२०४२॥

दूहा ॥ हाड़ा राय सु हथ्थ धरि। गंभीरा रस बीर ॥
कासिराज दल सम जुरिग। कुल उद्धारिय नीर ॥ छं० ॥ २०४३ ॥
न्टप अलसिग अलसिग सुभर अलसिय पंग नरिंद ॥
विलसित काल करंक किय। सह सति तीस गनिदं ॥ छं० ॥२०४४॥

नवमी का चन्द्र अस्त होने पर आधी रात को दोनों सेनाओं का थक जाना।

कवित्त ॥ निसि नवमी ससि अस्त। घटिय मुर बीय स उप्परि ॥

(१) ए. कृ. को.-हथं थाल। (२) मो.-निधानं।

थकिय हथ्थ सामंत । थकिय पंगुर दल उप्परि ॥
रुधिर सरित परहरिय । गिद्ध [1]गोमाय अघाइय ॥
ईस सीस गत दरिद्द । बीर बेताल नचाइय ॥
आसुर सु उप्पटि थट भट रहिग । पंग फेरि सज्जिय सुभर ॥
करि सीस रीस पुच्छिय सुबर । कहिय गहन आयास चर ॥
छं० ॥ २०४५ ॥

पृथ्वीराज का पंग सेना के बीच में घिर जाना ।

बर बिषहर निसि पंग । क्रोध बिष बीर साम सब ॥
जीभ लोह दिढ साव । जरिय साहस्स तत्त तब ॥
चित वामंग गारुरी । अमी अंचल चित मंतं ॥
दिष्ट अछित उच्चारि । हंकि कढ्ढिग विष [2]गत्तं ॥
[3]अप्पइ जु षल सार सु गरुर । [4]रुद्रमि बेंन सज्जै मिसह ॥
जे चिच रेष चिची सु बर । सिष संजोग आसा सिगइ॥छं०॥२०४६॥

आर्या ॥ पन्नगो ग्रमित सामुद्रं । त्यों पंग सेन ग्रिसतो [5]रायं ।
श्रित सुश्रित आहुद्रं । नवमी निसो अद्ध उपायं ॥ छं० ॥ २०४७ ॥

मुरिल्ल ॥ पिष्षि जुद्ध [6]कंदल दिव धाया । लग्गे सह दसों दिसि आया ॥
तक्किग रहि गंनि साजत बीरं । भग्गिय जुद्ध ग्रह पति धीरं ॥
छं० ॥ २०४८ ॥

रात्रि को सामंतों का सलाह करना कि प्रातः काल राजा को किसी तरह निकाल ले चलना चाहिए ।

कवित्त ॥ रेनि मत्त चिंतयौ । प्रात कढ्ढौं प्रथिराजं ॥
प्रा रष्यौ चहुआन । जाय जुग्गिनिपुर साजं ॥
जब लगि अरि तन बढै । कढै न्रप कूह प्रमानं ॥
च्यार बीस षग पुट्ठि । अप्पौं सामंत [7]जघोनं ॥

(१) ए. कृ. को.-गोमय । (२) ए. कृ. को.-गत्रं ।
(३) को.-अप्प षलगु सार सु गरुर । ए.-अप्पह जु षज्ज लज्ज सार सु गरुर
(४) ए. कृ. को.-सद्रसि । (५) मो.-रयं । (६) ए.-कद्दल । (७) मो.-सघानं ।

जो चढ़ै सामि पह,पंग कर। तौ सब किंत्ति समप्पनौ ॥
जब लग्गि न्रपति हम हथ्थ है। तब लगि बल सामंत नौ ॥
छं० ॥ २०४९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि तुम लोग अपने बल का गर्व करते हो। मैं मानूंगा नहीं चाहे जो हो।

सुनिय बयन प्रथिराज। रोस बयननि उच्चारिय ॥
ततो होइ तिन बेर। मंत बहु बहु बक्कारिय ॥
तुम सु ग्रब्ब सामंत। मंत जानौ न अमंतं ॥
में भग्गा ग्रिह पंग। लियं ढिल्लौ धर अंतं ॥
सै सामि होइ सिरदार भल। तौ काइर बल राह जित ॥
जौ हथ्थ जीय होइ अप्पनौ। सुरब सेन अरियन्न कित॥ छं०॥ २०५०॥

सामंतों का कहना कि अब भी न मानोगे तो अवश्य हारोगे।

दूहा ॥ सुनि सामंत उचारि न्रिप। बिय दिन जुड्ड उमाह ॥
अब जीतै प्रभु हारिहै। जौ नहि चल्लै राह ॥ छं० ॥ २०५१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो भाग्य में लिखा होगा सो होगा।

तब जंगलवै (१) बोलि इह। रे भावी समरथ्थ ॥
जौ पैसै लष पंजरै। अंत चढ़ै जम हथ्थ ॥ छं० ॥ २०५२ ॥

दिशाओं में उजेला होना और पंग सेना का पुनः आक्रमण करना।

चौपाई ॥ सामंत सूर उच्चरि चहुआनं। अचल चित्त अति धीर सु ध्यानं॥
धनि नरिंद सोमेसुर जायौ। मंडी अंमर पंग बर धायौ ॥
छं० ॥ २०५३ ॥
रहि घटि सर निसि बढ़ि तत मानं। चिनदा चरम रही घन पानं॥

(१) ए. कृ. को.-बालि।

बजि दल दुंदुभि पंग निसानं । रत चित सूर हेस रेति मानं ॥
छं० ॥ २०५४ ॥

जैचन्द के हाथी की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ दिसि पुब्बह पहुपंग । बीर ठट्टौ रचि सेनं ॥
सेत केत गज झंप । सेत दुरि चौर समेनं ॥
सेत धजा आसही । सेत सिंदूक सु हल्ली ॥
सेत अस्व पष्षर प्रमान । नाग मुषी रहि पुल्ली ॥
उज्जल सनाह अस बरन बर । सेत धजा कमधज्ज सब ॥
ओपमा चंद सस्त्रन किरन । कै विगसी सु कलेसु रवि ॥
छं० ॥ २०५५ ॥

सामंतों का घोड़ों पर सवार हो कर हथियार पकड़ना ।

चौपाई ॥ मतौ मंडि सामंत सूर भर । जिहि उपाय संकम्म जतन नर ॥
न्रिप अन जग्गत सबै तुरंग चढ़ि। भान पयान न होत लोह कढ़ि॥
छं० ॥ २०५६ ॥

चहुआन के सरदारों के नाम और उनकी सज धज का वर्णन

कवित्त ॥ चावद्दिसि पहुपंग । बंधि बन बीर सु ठट्टै ॥
रत्त धजा मारूफ । बंधि वामं दिसि गट्टै ॥
पीत धजा दल स्याम । सोह रट्टौ बर कन्हं ॥
सेत धजा पहुबंध । बीर उब्भौ पहु नन्हं ॥
चौबिहि फौज चावद्दिसा । बीर बीर बर बिट्टरै ॥
चिंतयौ भान पयान बर । लोह पयानत बिस्तरै ॥ छं० ॥२०५७॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का जागना ।

दूहा ॥ सुष्य सयन प्रथिराज भौ । तम घटि तम चर बार ॥
घरी एक निसि मुदित हुअ । बजत घरी घरियार ॥ छं०॥२०५८॥

पंगराज का प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ घरिन बजत घरियार । पंग परतंग सु बाहिय ॥

कै तन छंडि तर धरीं। जीति दुरजन दल साहिय॥
उभै उभै दिसि फौज। साजि चतुरंग चलाइय॥
चावद्दिसि चहुआन। चाव चतुरंग हलाइय॥
पायान भान बरज्जित अरि। लोह पयानन मोह भलि॥
दिसि रत्त उत्त धररत्त व्है। सिध समाधि जरद्द धुलि॥छं०॥२०५९॥

प्रातः काल की चढ़ाई के समय पंग सेना की शोभा।

भुजंगी॥ लगी बज्र ताली बजे लोह धुम्मी। घरी एक सिद्धिं समाधिं स भुम्मी॥
किधौं इन्द्र वेतासुरं जुद्ध बीयं। किधौं तारका जुद्ध सुर मस्सि कीयं॥
छं०॥२०६०॥

कहै देव देवाइयं जुद्ध देषी। इसौ बीर अत्तीत भारथ्थ पेषी॥
भयं कब्बि चंदं सबैं बीर सथ्थी। नचै रंग भैरूं ततथ्थे ततथ्थी॥
छं०॥२०६१॥

किलं कार कारं रुधं पत्त धारं। पियै जोगिनी जोग माया डकारं॥
भरै लोह लोहं सबै दिस्सि भारी। नचै सट्ठि चव जोगिनी देत तारी॥
छं०॥२०६२॥

घटं घंट घट्टं सु पिंडं बिचारी। फिरै आदि माया सु आदं कुमारी॥
बहै बान षग्गं छुपिक्का विरंभं। परे बार पारं दुहूं अंग छिद्रं॥
छं०॥२०६३॥

भये छिन्न छिन्नं सनाहंति छिन्नं। रुधी जठ्ठ रंकै तिनं माहि भिन्नं॥
कहै चंद कब्बी 'उपम्माति[1] रुष्षं। मनो उग्गतं भान जाली मउष्षं॥
छं०॥२०६४॥

भये अंग अंगं सु रंगे निनारं। भरं उत्तरे मुगति संसार पारं॥
भयौ जुद्ध कवरुद्ध कथ्थे कथायं। लही सूर सूरं सबं मुगति पायं॥
छं०॥२०६५॥

परे पंग लष्षं उलष्षं सु सथ्थं। तुटै सस्त्र सूरं जुटै हथ्थ बथ्थं॥
छं०॥२०६६॥

(१) मो. उपंमास।

पृथ्वीराज का व्यूहवद्ध होना और गौरंग देव अजमेरपति का मोरचा रोकना ।

कवित्त ॥ उग्गि भान पायान । देव दरबार संघ बजि ॥
सु बर सूर सामंत । [1]गज्जि निक्करे सेन सजि ॥
[2]धर हरि बलि पांवार । अग्ग कीनं प्रथिराजं ॥
ता पच्छै न्रिप कन्ह । सीस मुक्की बढ़ि लाजं ॥
ता पच्छ बीर निड्डूर निडर । ता पच्छै दंपति अयन ॥
गौरंग गरुत्र अजमेरपति । रष्षि न्रपति पछैं सयन ॥छं०॥२०६७॥

पृथ्वीराज की ओर से जैतराव का बाग सम्हालना ।

पच्छ भान पायान । लोह पायान अग्गि कढ़ि ॥
धर हरि धर पांवार । कोट धारह सलष्ष चढ़ि ॥
बज्जि घाइ आहत्त । सार झरि सारह झड्डौ ॥
नभ सु साम सामंत । जानि बीरं जगि अड्डौ ॥
घन देत घत्त अवरत्त असि । उभै सेन बर बर जुटी ॥
घरी अड्ड अध [3]बजि बिषम । भारथ्थह पारथ घटी ॥ छं०॥२०६८॥

पृथ्वीराज का घिर जाना और वीर पुरुषों का पराक्रम ।

फिरि रुक्यौ प्रथिराज । परी पारस कमधज्जिय ॥
मुरि सु पंच पल भान । चढ़ी आयस सुर रज्जिय ॥
ठठुकि सेन पहु पंग । चंपि चहुआनन संके ॥
बर बिरंग बिड्डार । लखी बंभन झुकि झुक्के ॥
का कुटिल दिट्ठ कनवज्ज पति । सल्ल मंच करि झारयौ ॥
जगि पवित्र जोग मंडल्ल बर । धार तिथ्थ [4]तन पारयौ ॥
छं० ॥ २०६९ ॥

युद्ध के समय श्रोणित प्रवाह की शोभा ।

भुजंगी ॥ चढ्यौ भान घट्टी उभैता प्रमानं । कढै लोह राठौर अरु चाहुआनं ॥

(१) ए. कृ. को.गत्ति ।　　(२) मो. धर हरिचल ।
(३) मो.बरती ।　　(४) मो. नभ, ए. कृ.-नन ।

सुभौ दीन एकं बिबे पंति बीयें। करे एक मेकं तिनं लोह लीयें ॥
छं० ॥ २०७० ॥

उठै रुद्दि छिंछं भरै सार सारं। किधों मेघ बुट्टं प्रवालीन धारं ॥
ढरै रंग जावक्क हेमं पनीरं। गहै अंत गिद्धी उडंती प्रकारं ॥
मनों नभ्भ इंद्रं धनुक्कं पसारी। * * * छं० ॥ २०७१ ॥

घटक्की बरच्छी ठनंकंत घट्टं। षिजे गज्ज षेंचे चल्यौ साथ तट्टं ॥
छं० ॥ २०७२ ॥

कहै चंद कव्वी उपम्माति कम्मं। षचै इंद्र बज्जू कपी काम फम्मं॥
निकस्सी सनंनं भरै रुद्दि धारं। ढरै रंग जावक्क हेमं पनारं ॥
छं० ॥ २०७३ ॥

करै सीस इक्कं धरं कंठ रज्जी। मना नट्ट काया पलट्टीति बज्जी ॥
दुहुं दिस्सि रुंधे परें धाइ घट्टं। मनो रत्त डोरी रच्यौ नट्ट पट्टं॥
छं० ॥ २०७४ ॥

नहीं सुष्ष दुष्षं न माया न काया। तहां सेवकं सामि रंकं न राया॥
घटक्की षटक्कीज भूछिद्र कारी। फिरी फेरि चहुआन पारस्स पारी ॥
छं० ॥ २०७५ ॥

घुड़सवारों के घोड़ों की तेजी और जवानों की हस्तलाघवता।

कवित्त ॥ ठठुकि दिष्पि न्नप सेन। छच धारह जु छच तजि ॥
तत्तो होइ तिहि बेर। तत्त माया सु मुदित तजि ॥
तत्त गत्त सो हथ्थ। तेग तत्तौ उभ्भारी ॥
धात षंभ न्त्रिघात। जानि झल्लरि झल्लारी ॥
असवार सनाहत पष्षरे। कटि पट्टन तुट्टै निबर ॥
जाने कि सिषा तर गिर सिरह। बिहर बार करवत्त भर ॥
छं० ॥ २०७६ ॥

माझी बर मरदान। मान मरदा मिलि तोरन ॥
चाहुआन कमधज्ज। दिट्टि अरुहि रन जोरन ॥
दुनै बीर रस धीर। धाइ लग्गे आभुष्षं ॥
लोह वज्जि अवरत्त। जानि छुट्टै मद मुष्षं ॥

त्रिघाइ घाइ बज्जे घनं। घन निसान सद्दह दुरिय॥
रुधि भग्ग घाइ आभंग अगि। घटि बिवंग जोगा जुरिय
छं० ॥ २०७७ ॥

लोह धार बज्जंत। बज्जि षुरतार भार परि॥
सेस सीस हल धसी। फेरि मुक्की कुंडलि करि॥
करि कुंडलि अध सत्त। परे पिट्ठं परिवारं॥
[1]गौ भगि फुनि फुनि फुन्नि। फुन्नि किय चंद निनारं॥
अहि सीस [2]बीस सत कलमले। रास रत्त भेदन दलं॥
चिचकत चित्त विभम्म भुअ। तिहित बेर अहि कलकलं॥
छं० ॥ २०७८ ॥

जैचन्द के भाई वीरम राय का वर्णन।

बंधी रा जैचंद। रा विजपाल सपुत्तह॥
से रंभी उर जनम। नाम बीरम गावतह॥
सहस तीस सिंधुत। ढाल नेजा सिंदूरिय॥
सिंदूरीव सन्नाह। सेव वारुन संपूरिय॥
दिन महिष एक भुंजै भषनि। विजय द्रग्ग अग्गै त्रपह॥
जीते जुवान हिंदू तुरक। वाम अंग टोडर पगह॥ छं०॥२०७९॥

वीरमराय का चहुआन सेना के सम्मुख आकर सामंतों को प्रचारना।

सुक्रवार अष्टमिय। निंद जाने न जुग्ग परि॥
नौमि सनी टरि गइय। सामि संग्राम इंद्र जुरि॥
हय दिष्षत षावास। पाइ गहि सत्त पछारिय॥
रे समग्र मृदंग। जंग जुरि हौन जगारिय॥
आयौ निसंक सामंत जहँ। कर कसंत आलस असन॥
तित्तने सूर साहि सु समर। जनु अगस्ति दरिया ग्रसन॥
छं० ॥ २०८०॥

---

(१) मो.-गौभग्ग फनं फन फुन्न। (२) मो.-चौस।

दूहा ॥ बसु कढ्ढिय कंधह धरिग। अब बसीठ परिहार ॥
उभय पान साहिग सनर। गय न्रप पंग सु सार ॥छं०॥२०८१ ॥
रा जैचंद नरिंद दल। दरसि भग्ग बल काज ॥
में भुज पंजर भिरि गहिग। इन में को प्रथिराज ॥ छं०॥२०८२॥
माया मागति देव जगि। हवि जिम हठिय प्रगट्टि ॥
तिन कट्टारिय कर धरिग। तिन घन सेन निघट्टि ॥ छं०॥२०८३ ॥

भ्रमरावली ॥ घन सैन निघट्टिय पंग दलं। रावत्त बंध्यौ तिहि बीर बलं॥
रुधि पान स चित्त कियौ समरं। घन देषि विमान फिरें अमरं ॥
छं० ॥ २०८४ ॥
तिन पौरिस राज भये सबरं। दिसि च्यारि फवज्जति पंग करं ॥
दसमी पह फट्टति रह जुरं। इन जुद्ध समावर जोग 'हरं ॥
कविचंद अनुक्रम बात धरं। छं० ॥ २०८५॥
* * * * । * छं०॥ २०८६ ॥

दसमी रविवार के प्रभात समय की सविस्तार कथा का आरंभ।

कवित्त ॥ कढ्ढिय बर बिस्तर्यौ। धाइ लग्गौ धर राजन ॥
जहाँ भीम जुवान। तीर तुंगह भै भाजन ॥
रा रन बीर पवित्र। सु पति रष्षिय परिहारह ॥
राज काज चहुआन। स्वामि संकेत अहारह ॥
जुध भिरत तिनहि हय गय विहत। गह गह कहैति संभरिय ॥
निसि गइय एक सामंत परि। भयत पीत निस अंमरिय ॥
छं० ॥ २०८७ ॥

नवमी के रात्रि के युद्ध में दोनों दलों का थक जाना।

दूहा ॥ निसि नौमिय बित्तिय बिषम। उदित दिवस आदीत ॥
उठहि न कर पल्लव नयन। अस बड़ बित्त कवित्त ॥छं०॥२०८८॥
गहन आस गई पंग न्रप। जियन आस चहुआन ॥
सूर षंड मंडन 'रवन। उयौ सु रत्तौ भान ॥ छं० ॥ २०८९ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुरं। (२) ए. कृ. को.-बरन।

कनवज्जै भज्जै सयन । जे भर छिल्लिय सार ॥
जे धर अंगुलि झल्लरित । उद्दित आदित वार ॥ छं० ॥ २०९० ॥

कनवज्जह झलकिय किरन । बर तजि न्रपति उरन्न ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि उत्तरिग सुरन्न ॥छं०॥२०९१॥

राजत ख्रित धर केलि सह । लाभ सु कित्तिय पूर ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि 'उत्तरि सुर मूर ॥छं॥२०९२॥

संयोगिता का पृथ्वीराज की ओर और पृथ्वीराज का संयोगिता की ओर देख कर सकुचित चित्त होना ।

देषि संजोगिय पिय सु बल । श्रम जल बूंद बदन्न ॥
रति पति अहित पवित्त मुष । आलि प्रजालि मरन्न ॥छं०॥२०९३॥

चंद्रायन ॥ घुरि निसान उगि भान कला कर मुद्दयौ ।
श्रम सामंत नरिंद छिनक धर धुक्कयौ ॥
सविष पंग दल दिष्ट सरोस निहारयौ ।
अंचल अंमृत सँयोगि रेन मिस झारयौ ॥ छं०॥२०९४ ॥

भ्रमरावली ॥ फिरि देषिय राज रवन्न मुषं । अतिवंत दुषी दुष मानि सुषं ॥
भुव बंकम रंकम राज मनं । इष तंनि निहंति समोह घनं ॥
छं० ॥ २०९५ ॥

गुन कढ्ढनि कढ्ढति तात कुलं । किय खत्य महाबर बीर बरं ॥
अभिराम विराम निमष्य करं । उलरंपि न पिठ्ठन दिठ्ठ हरं ॥
छं० ॥ २०९६ ॥

इहि श्रीय सु पीय सु कीय कुलं । मुष जंपिन कंपिन काम कुलं ॥
* * * * । * छं० ॥ २०९७ ॥

चारों ओर घोर शोर होने पर भी पृथ्वीराज का आलस त्याग कर न उठना ।

दूहा ॥ सुधर बिलंबन घरिय [1]पर । रहि ठट्टिय घटि तीन ॥

(१) ए. कृ. को.-उतरिग ।　　(१) ए. कृ. को.-धर ।

उठहि न अलसित कर सु वर। कछु मन मोह प्रवीन ॥
छं० ॥ २०९८ ॥

उत रुष चंपिय रट्ठ वर। इत मुष संभरि वार ॥
चलत राइ फिरि फिरि परिय। उदित आदित वार ॥छं०॥२०९९॥

सब सामंतों का राजा की रक्षा के लिये सलाह करके कन्ह से कहना।

करि विचार सामंत सह। न्रिप तिहि रष्षत काज ॥
कहै अचल सुन ह्व रही। करहु चलन को साज ॥ छं० ॥२१००॥
तब सामँत अचलेस सौं। बार बीय हम कथ्थ ॥
अब तुम कन्ह कबिंद मिलि। कहौ चलै न्रप सथ्थ ॥छं०॥२१०१ ॥
कहै अचल उरगंत रवि। बीच सुभर अप्पान ॥
चलै राज जीवंत ग्रिह। कहिय अचल सम कान्ह ॥ छं ॥ २१०२॥

कन्ह का कवि को समझाना कि अब भी दिल्ली चलने में कुशल है।

कवित्त ॥ कहै कान्ह चहुआन। अहो बरदाइ चंद बर ॥
जुरत जुद्ध दिन बीय। भये अनभुत्त उभै भर ॥
एक ऊन पंचास। परे सामंत सूर धर ॥
पंग राव घन सेन। तुट्टि सक मौर धीर थर ॥
थक्के सु हाथ सुभ्भर नयन। उट्ठे न करइ विस्रम बिरम ॥
पहु चलिग मग्ग रष्षै सुभर। कियौ राज अदभुत्त क्रम ॥
छं० ॥ २१०३ ॥

समौ जानि कविचंद। कहै प्रथिराज राज मुनि ॥
आदि क्रम्म तें करें। तास को सकै गुनिक गुनि ॥
सेस जीह संग्रहै। पार गुन तोहि न पावै ॥
तें जु करिय पहुपंग। मिलिय आरनि थर सावै ॥
नन कियौ न को करिहै न को। जै जै जै लच्छी तरुनि ॥
ग्रिह आइ अप्प आनंद करि। बढ़ै किति सब लोग पुनि ॥
छं० ॥ २१०४ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज के घोड़े की बाग पकड़ कर दिल्ली की राह लेना ।

दूहा ॥ इह कहि सु कवि समीप गय । गहिय बग्ग हैराज ॥
चल्यौ षंचि ढिल्ली सु रह । सुभर सु मन्यौ काज ॥छं०।२१०५ ॥
प्रलय जलह जल हर चलिय । बलि बंधन बलि बार ॥
रथ चक्कां हरि करि करिय । परि प्रब्बत पथ्थार ॥ छं० ॥२१०६ ॥
उदय तरुनि नट्टिग तिमिर । सजि सामंत समूह ॥
न्रिप अग्गै बहै सु हम । चलहु स्वामि करि कूह ॥ छं०॥२१०७॥

पृथ्वीराज प्रति कविचन्द का वचन ।

कवित्त * ॥ बंस प्रलंब अरोपि । हंन घन अंदर कट्टिय ॥
वरत पुरातन बंधि । धरनि द्रिढ लग्गि न षुंटिय ॥
करि साहस चढि नट्ट । द्रुनौ देषत कोतूहल ॥
घंटा रव गल्ल करत । महिष उभौ जम संतल ॥
उत्तरन कुसल करतार कर । त्रिया लाभ तौ अलग रहि ॥
ढिल्लीव नाथ ढीलन करौ । लगौ मग्ग कविचंद कहि ॥
छं० ॥ २१०८ ॥

राजा पृथ्वीराज का चलने पर सम्मत होना ।

दूहा ॥ चलन मानि चहुआन न्रप । बज्जे पंग निसान ॥
निमि जु इंद दुहुं दल भयौ । विह्न सहित बिन भान ॥छं०२१०९॥
हय गय करि अग्गें न्रपति । षिझि चंपे प्रथिराज ॥
मो अग्गैं आजुहि रहै । टरिग दौह बिय साज ॥छं०॥२११० ॥

सामंतों का व्यूह बांधना धाराधिपति का रास्ता करना और तिरछे रूख पर चौहान का आगे बढ़ना ।

कवित्त ॥ बर द्वादस भारथ्थ । राज परि भौर वाम दिसि ॥
सह दच्छिन न्रप सथ्थ । बौर बर बही बीर असि ॥

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है ।

बर जोगिनि पुर उदै। सीस धर हर बर [1]जुद्दै ॥
मनों जैत षंभ तत्त। मेघ धारा जल बुद्दै ॥
तिरछौ तरि उप्परि न्रपति। दइ दुआइ धारह धनी ॥
जाने कि अग्गि अङ्कुर बमइ। बंस जाल फट्टै घनी ॥छं०॥२१११॥

शौचादि से निश्चित हो कर दो घड़ी दिन चढ़े जैचन्द का पसर करना।

दूहा ॥ [2]घटी उभै रबि चढ़िय बर। स्नान दान गुर चार ॥
पंग फेरि घेरिय सु घन। मर चिंटे सिर भार ॥ छं०॥२११२ ॥

वीर योद्धाओं का उत्साह।

रसावला ॥ सांमि चिंटे रनं, सूर छोहं घनं। बथ्थ मल्लं जनं, धार कुट्टे मनं॥
छं० ॥ २११३ ॥
सूर चढ्ढे मनं, लोह तत्ती तनं। सीत बित्तं जनं, विड्डु रेनं मनं ॥
छं० ॥ २११४ ॥
चित्त जोतिप्पनं, सो मनं जित्तनं। तेग बंकी भनं, बज्जि असी तनं॥
छं० ॥ २११५ ॥
सूर कीनी रनं, भारथं नंसनं। भ्रंम सासिप्पनं, जीव तुच्छे गिनं॥
छं० ॥ २११६ ॥
काल भूभ्रं ननं, जम्म छुट्टे मनं। रज्ज कोटं भटं, रुद्धि घुम्मै धटं ॥
छं० ॥ २११७ ॥
सूरं चित्तं करं, दिष्षियं तुंमरं। स्वामि चल्लै घरं, [3]जुद्ध [4]भल्लं भरं॥
छं० ॥ २११८ ॥

सामंतों की स्वामि भक्तिमय विषम वीरता।

दूहा ॥ परिग पंच पंचे सु भर। षितनि परिग षत पंच ॥
जूह जूह लै लै करिय। न्रपति न लग्गी अंच ॥ छं० ॥ २११९ ॥
समर स मुट्ठी समर परि। सामि सुमति चल तेन ॥
सामंतन रुक्यौ सु दल। लीज मुष्ष मुह जेन ॥ छं० ॥ २१२० ॥

(१) मो.-जुट्टे। (२) मो.-घरी। (३) मो.-मल्ले। (४) ए. कृ. को.-मुछ।

परिग सूर सोरह सु भर । आदित जुद्ध [1]सरीस ॥
बीर पंग फेरिय गहन । करि प्रतंग दिव ईस ॥ छं० ॥ २१२१ ॥

पंगराज का अपनी सेना को पृथ्वीराज को पकड़ लेने की आज्ञा देना ।

कहै पंगुरौ सु भर भर । आज सु दिन तुम काम ॥
गहौ चंपि चहुआन कौं । ज्यों जग रष्षै नाम ॥ छं० ॥ २१२२ ॥
दूहा गाहा सरसतिय । न्रप प्रसाद धन सथ्थ ॥
दुरजन ग्रह एते तुरत । ग्रहै न पच्छै हथ्थ ॥ छं० ॥ २१२३ ॥

पंगराज की प्रतिज्ञा सुन कर सैनिकों का कुपित होना ।

इह प्रतंग पहु पंग सुनि । भ्रित कोपिय भ्रम काज ॥
परे चंपि चहुआन पर । जानि कुलिग्गन बाज ॥ छं० ॥ २१२४ ॥
जब देषे सामंत हय । तब लग्यौ घन ताप ॥
जानै बिष ज्वाला तपति । कै प्रलै काल मनि आप ॥ छं० ॥ २१२५ ॥
जितै ध्रंम लच्छी लहै । मरन लहै सुर लोक ॥
दोऊ सु परि भ्रत सुझरै । [2]परे धाइ धर तोक ॥ छं० ॥ २१२६ ॥

पंग सेना का धावा करना तुमुल युद्ध होना और वीरसिंह राय का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ पुरे धाय बीरं रसं पुन्न दभ्भै । क्रमं पंच धक्के चहुव्वान भज्जे ॥
परयौ पंग पच्छै जुटेढ़ी पठाढौ । दिसं पुन्न मारूफ बर बंक काढ़ी॥
छं० ॥ २१२७ ॥
चहूआन सूरं असी बंक भारी । मनों पारधी बिंट बाराह पारी॥
मह माह सूरं प्रचारे सबाहं । [3]तबै बीर बीरं उपम्माति चाहं ॥
छं० ॥ २१२८ ॥
षिल्लै लाज मुक्कै चियं पीय छोरी । मुरे लज्ज बंधं दोऊ सेन जोरी
बहै षग्ग मग्गं सु बग्गं निनारे । तिरै ओध माया सरे सार पारे॥
छं० ॥ २१२९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सरीर । (२) मो.-परत । (३) ए. कृ. को.-तकै ।

बहै षग्ग तुट्टै उड़ै टूक नारे। मनो टूटही राति आकास तारे॥
सहै हथ्थ श्वानं फुरी टोप सथ्थं। किधौं हूरिजं भूलियं राह हथ्थं॥
छं० ॥ २१३० ॥

डरै कादरं चिंति मुष्षं दुरायं। मनो प्रात दीपं बिधं कब्बि गायं॥
तुछं फुट्टि संगं सनाहं न कूरं। मनौं जार कट्टै मुषंमीन[1] रूरं॥
छं० ॥ २१३१ ॥

मचै घाइ अघ्घाइ छुट्टै हवाई। मनौं [2]टौस ज्यौं डंभरू पंति लाई॥
घरी अड्ड आहत्त बज्जं विषम्मं। पञ्यौ राव नरसिंघ किल्लीव जम्मं॥
छं० ॥ २१३२ ॥

पंगदल की सर्प से और पृथ्वीराज की गरुड़ से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पुंग धार पहु पंग। राग सिंधू बज्जाइय ॥
सार मंच संधयौ। बीर आलाप चिघाइय ॥
सेस सुनिव सामंत। कंन मंडल तिहि रग्गा ॥
फन मिसि असिवर धुनिय। जीह कढ्ढी षग लग्गा ॥
गारुरी बीर कमधज्ज सर। जंच मंच हीनं गनिय ॥
मनि मध्य सेर डस्यो बिषम। सिंगि स्याल गज्जर मनिय ॥
छं० ॥ २१३३ ॥

दूहा ॥ सांमि ध्रंम रत्ते सु भर। चढे क्रोध बिष [3]झाल ॥
दभ्भर्भै कायर दूर टरि। मिले गरूर मुंछाल ॥ छं० ॥ २१३४ ॥

पंग सेना के बीच में से पृथ्वीराज के निकल जाने की प्रसंशा।

कुंडलिया * ॥ बार पारि पहु पंग दल। इम निकसिय चहुआन ॥
छाया राषिसनी ग्रसत। पिट्ठ फोरि हनुमान ॥
पिट्ठ फोरि हनुमान। गौन सै साठि कोस मुह ॥
उदधि मद्धि बिस्तारि। [4]गिलन अंतरिष वहंतह ॥
ररंकार सबद उच्चार करि। ब्रह्मंड कि भिंदि मुनि गयौ ॥
कहि चंद ध्यान धारत उभ्भर। सागर पारंगत भयौ ॥ छं० ॥ २१३५ ॥

(१) मो.-मैन। (२) ए. कृ. को. ईम। (३) ए. कृ. को.-ञ्याल।
(४) ए.-मिलन। * यह कुंडलिया मो. प्रति में नहीं है।

पुट्ठि बुट्ठि झाला हलह । चलि न सकै चहुआन ॥
सामंतनि करि कोट' अउ । यों निकसे राजान ॥ छं० ॥ २१३६ ॥
दूहा ॥ जे छत्री अड्डे अरे । ते झुझझै असियान ॥
मानों बुंद समुंद में । परै तत्त पाषान ॥ छं० ॥ २१३७ ॥

पंग सेना का पृथ्वीराज को रोकना और सामंतों का निकल चलने की चेष्टा करना ।

सुभर पंग पिष्षे परत । परत करिय द्रिग रत्त ॥
रवि उद्दित चढि सत्त घटि । तपित तेज आदित्त ॥ छं०॥ २१३८ ॥
त्रिभंगी ॥ द्रग रत्ते सूरं,पंग करूरं, बजि रन तूरं, फिरि पंती ॥
रुप्पे चहुआनं, पंग रिसानं, द्रोन समानं, गुर कंती ॥
उप बज्जिय कंती, धर रंग रत्ती, बीर समत्ती, अलि बीरं ॥
वर बेन करूरं, हुअ नहि सूरं, रोस डरूरं, छुटि तीरं॥छं०॥२१३९॥
असि कढ्ढी नीवं, ज्यों ससि बीवं, भै [2]अति भीवं, अनसंकं ।
सव ओडन नष्षे, रज रन रष्षे, अरि घर भष्षे, भरि अंकं ॥
बर बर धर मीनं, तन फल छीनं, ज्यौं जल हीनं, फिरि मीनं ॥
हुरुरो है हल्लैं, करि किन डुल्लैं, बीर सलल्लैं, तन छीनं ॥छं०॥२१४०॥
झंती बर कंती, पें उर झंती, में मत पंती, विच्छूरं ।
उप्पम कवि पूरं, जलंगं भूरं, [3]गज्ज हिलूरं, जल घूरं ॥
झुझझे सिर तुट्टं, षग आहुट्टं, उप्पम घट्टं, कविआनं ।
तुट्टे जिम तारं, षह भग झारं, हूतं[4] सबीरं, सम जानं ॥
छं० ॥ २१४१ ॥
भै बीर विरुद्धं, जटि आरुद्धं, मंति सु लद्धं, मपि सेनं ॥
[5]लुथि लुथि आहुट्टिय, बंधन कुट्टिय, किंत्ति स लुट्टिय, कवि तेनं॥
छं० ॥ २१४२ ॥

(१) ए. कृ. को.-अर । (२) ए. भित्त, को. कृ.-भति ।
(३) ए. कृ. को.-गज्जहि तूरं । (४) ए. कृ. को.-हू तसबीरं ।
(५) मो.-लुथि लोथि ।

एक पहर दिन चढ़ आने पर इधर से बलिभद्र के भाई उधर से मीरां मर्द का युद्ध करना।

कवित्त ॥ बजिग पहर इक अहर। हथ्थ थक कमान बहि ॥
हैगै नरभर डररि। अमिज थक्कए पग्ग सह ॥
बीय अरी चित लरत। कोउ मानै नन थक्कै ॥
जोगि नींद उग्यौ प्रमान। क्रूह चतुरंग अटक्कै ॥
है नंषि बंध बलिभद्र कों। पज्जूनी अग्गै सयन ॥
उत निक्करे मीर मीरां मरद। ढुंढारी सम्हौ बयन ॥
छं० ॥ २१४३ ॥

बलिभद्र के भाई का मारा जाना।

दुनें मिले मरदान। कथ्थ पै दीह न मुक्कै ॥
लज्ज मंस बिहु बीच। बिंब केसर बर बक्कै ॥
कट्टारी बर कढ्ढि। मेछ बाहिय पहु लग्गिय ॥
फुट्टि सीस बरकरी। बांम भग्गा सह अग्गिय ॥
बर मुच्छि घाइ कच ग्रह करे। कट्टारिय गहि दंत कढि ॥
तन फेरि अंग झंझर कियौ। को दिव बंध कवंध चढ़ि ॥
छं० ॥ २१४४ ॥

दो पहर तक युद्ध करके बलिभद्र का मारा जाना।

करि उप्पर बर बीर। बली बलभद्र सु धाइय ॥
दल दल मुष मुष पंग। भई द्रप्पन मुष झाइय ॥
है [1]अंठुन दल पंग। वीर अवरत्त हलाइय ॥
समर अमर कीतिग्ग। ईस नारद रिझाइय ॥
झक झोरि झोरि दल मोरि अरि। बिरह चीर उट्टाय करि ॥
सामंत पंच पंचह मिलिग। टरि न टरै भर बिप्प हर ॥
छं० ॥ २१४५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अंठुलि।

हरसिंह का हथियार करना और पंग सेना का छिन्न भिन्न होना ।

भुजंगी ॥ चँपै चाइ चौहान हरसिंघ नायौ । जिसे सैंन में सिंघ गज जूथ पायौ ॥
करै कूह गज जूह सनमुष्ष धायौ । तबै पंग दल सम्मटि चिहुं कोद छायौ ॥
छं० ॥ २१४६ ॥

पंगराज का दो मीर सरदारों को पांच हजार सेना के साथ धावा करने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ बली अली द्वै मीर । उभै बंधव वर बीरह ॥
छत्तिय हथ्थ दुसल्ल । मल्लविद्या साधक सह ॥
मग्ग मग्ग बिन रेह । जुद्ध जानें निरगम गम ॥
डंडा युद्ध छत्तीस । बट्ट पाइक पाइक सम ॥
भुज लहै कोरि उभ्भै अभय । स्वामि ध्रंम रत्तं सु रह ॥
अनहित्त पंग लज्जी अदब । दल पगार थिर दैंत गह ॥
छं० ॥ २१४७ ॥

करिय क्रपा पहुपंग । सहस पंचह दिय मीरह ॥
कुल विपत्त जुध जुत्त । लहै बर लाज अभीरह ॥
स्याम चमर पष्षर सु । स्याम गज गाह सुनित्तह ॥
झंडे स्याम सु साम । पछय पय पुलै न चित्तह ॥
अग्या सु मंगि पहु पंग पहि । आए मीर पठान पुर ॥
आदित्त जुद्ध हरि उग्ग मनि । आए आतुर सज्जि अरि ॥
छं० ॥ २१४८ ॥

मीरों का आज्ञा शिरोधार्य्य करके धावा करना ।

दूहा ॥ मंग्यौ आयस नंमि सिर । कहै पंग करि पान ॥
जीय सु षंडो पत्त पहु । गह्यो बह्यो चहुआन ॥ छं० ॥ २१४९ ॥

मीर मंडली से हरसिंह का युद्ध। पहाड़राय और हरिसिंह का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ तबै उप्परी फौज सा राज मीरं । सहस्सं च पंचं बरं बंधि नीरं ॥

किलकं किलकी हके आसुरानं । चवै दीन महमूंद महमूंद मानं ॥
छं० ॥ २१५० ॥

[1]बली मीर अली दिसा अप्प भष्षै । तन [2]अज्ज सांई निज कज्ज रष्षै ॥
करौं पिंड षंड निज स्वामि काजै । गहै चाहुआनं भरं झूझ भाजै ॥
छं० ॥ २१५१ ॥

हके मीर अप्पान लै अप्प नामं । तिन साष भष्षै [3]कही कंक कामं ॥
लही फौज आवंतसा चाहुआनं । हरं सिंघ सिंघं गज्यौ जुद्ध जानं ॥
छं० ॥ २१५२ ॥

नयौ सीस प्रथिराज रजि बीर रस्सं । फिऱ्यौ संमरे इष्ट अप्पं उकस्सं ।
चले बीर किलकार साथे सु गाजै । करं अप्प आवद्ध सावद्ध साजै ॥
छं० ॥ २१५३ ॥

मिल्यौ जुद्ध मंझी समं आइ मीरं । झरं आवधं बज्जियं धार धीरं ॥
मिले मुष्ष एकं अनेकं सु धायं । करक्कै सु सीसं परै पूर घायं ॥
छं० ॥ २१५४ ॥

परैं मीर एकं अनेकं सु षंडं । कलं कूह बज्जी रुरं मुंड रुंडं ॥
कलं भूचरं षेचरं सा करूरं । नचै जंध हीनं कमद्धं दु हूरं ॥
छं० ॥ २१५५ ॥

रमे तेक चहुआन रस रास तारं । फिरै मंडली जेम षल न्त्य कारं ॥
उभै मीर बली अली संघ लष्षै । क्रमे आतपं तप्पि जल जाम [4]झष्षे ॥
छं० ॥ २१५५६ ॥

बली आय प्राहार कीनौ जु जामं । उरं मग्गि तिष्षी निकस्सी परामं ॥
चलै सेन सम्मं हयौ षग्ग झारे । हयौ रोह मां तूं भिरें मच्छ कारे ॥
छं० ॥ २१५७ ॥

बली सीस तुट्यौ षगं षंभ थारं । मनौं देवलं इंदु तुट्टौ सु तारं ॥
अली आय [5]बामं हयौ षग्ग धारं । तुट्यौ सीस उड्यौ षगं भूमि पारं ॥
छं० ॥ २१५८ ॥

(१) मो.-चली । (२) ए. कृ. को. तनं (३) ए. कृ. को.-कहा ।
(४) ए. कृ. को.-धष्षे । (५) ए. कृ. को. बाहे ।

गह्यौ तांम[1] अल्ली उरं अप्प चंप्यौ। गयौ अंस उड्डी तिनं तांम[2] लिप्यौ॥
भग्यौ सेन मीरं भरक्कै धु धामं। सयं सत्त ताई परे पंति तामं॥
छं० ॥ २१५९॥
घनं घाइ अघ्घाय पु=यौ सु पानं।प=यौ सिंघ हरसिंघ करि जीति थानं॥
छं० ॥ २१६० ॥

नरसिंह का अकेले पंग सेना को रोकना और पृथ्वीराज का चार कोस निकल जाना।

कवित्त ॥ करि जुहार [3]नरसिंघ। नयौ चहुआन पछिल्लौ॥
बरी अनी सावरी। लष्य सौं भिर्‍यौ इकल्लौ॥
आगम काय हुअ फिरै। धरनि पुर सौं पुर पुंदहि॥
एक लष्य सौं भिरै। एक लष्यह रन रुंधहि॥
असि घाइ झाइ बज्जै [4]विषम। जै जै जै आयास भौ॥
द्रुम जंपै चंद बरद्दिया। च्यारि कोस चहुआन गौ॥छं०॥२१६१॥

नरसिंह के मरते ही पंग सेना का पुनःचौहान को आघेरना।

दूहा ॥ परत धरनि नरसिंघ कहुं। हकि गयंद दल अब्ब॥
मनहु जुद्ध जागिन पुरह। तिन मुक्यौ सब [5]अब्ब॥छं०॥२१६२॥
फुनि प्रथिराज सु पच्छ दल। बर रट्ठौर नरेस॥
[6]सिर सरोज चहुआन कै। भवर सस्त्र सम भेष॥ छं० ॥२१६३॥

इस तरफ से कनक राय बड़ गुज्जर का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ भौ आयस प्रथिराज। कनक नायौ बड़ गुज्जर॥
हम तुम दुस्सह मिलन। स्वामि दुज्जै सु अप्प घर॥
हौं रबि मंडल भेदि। जीव लगि सत्त न [7]षंडो॥
षंड षंड करि रुंड। मुंड हर हार सु मंडो॥

(१) ए. कृ. को.-अर्ला। (२) ए. कृ. को.-लेयौ।
(३) ए. कृ. को.-हरसिंह, परंतु हरसिंह के युद्ध का वर्णन पूर्व छंद में हो चुका है।
(४) ए. कृ. को.-सकल। (५) ए. कृ. को.-अब्ब। (६) मो.-सिर सराज।
(७) ए. कृ. को. छंडों।

हून बंस भग्गि जानै न को। ह्वों पति 'कंप अलुभ्भभयो ॥
हुम जंपै चंद बरद्दिया। कोस षट्ट चहुआन गौ ॥ छं० ॥ २१६४॥

वीरमराय का वल पराक्रम वर्णन।

सुअन धाय जैचंद। नाम बीरम बीरम बर ॥
गरुअ लाज गुन भार। जुद्ध जुति जान ग्यान गुर ॥
बंधव सम जै चंद। प्रीति लिष्षवै प्रेम गुन ॥
अग्गि आदर न्नप करै। गान उत्तंग अंग सन ॥
सह सत्त सत्त सेना सु तस। बरन रत्त बाना धरै ॥
जहं जहं सु राज काजह समय। तहं तहं परि अग्गें लरै ॥
छं० ॥ २१६५ ॥

दूहा ॥ ऐरावत बीरम पऱ्यौ। औ बीरम मुअ धाइ ॥
सम प्राक्रम पंगुर परषि। दियै सु अग्या ताइ ॥ छं० ॥ २१६६ ॥

उक्त मीर वंदों को मरा हुआ देख कर जैचन्द का वीरम राय को आज्ञा देना।

परे मीर देषे उभै। दिय अग्या तमि पंग ॥
गहौ जाइ चहुआन कौं। हनौ सुभर सब जंग ॥ छं० ॥ २१६७ ॥

वीरम राय का धावा करना वीरमराय और बड़ गुज्जर दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ सुने आयसं बीर पंगं नरिंदं। चल्यौ नाइ सीसं मनों जुद्ध इंदं॥
सिरं सज्जि गेनं रची फौज तीरं। कजं जुद्ध ईसं रज्यौ रस्स बीरं ॥
छं० ॥ २१६८ ॥
बजी भेरि झंकार धुंके निसानं। धरा बोम गज्जे सजे देव दानं॥
बड़ं गुज्जरं देषि आवंत फौजं। सनंमुष्ष क्रम्यौ दलं संक नौजं ॥
छं० ॥ २१६९ ॥
जपे इष्ट सा उच्चरे बीर मंत्रं। गरै बंधियं खून सम्मीर जंत्रं॥
किलक्के सु बीरं गहक्के सु धीरं। कलं कंपियं कातरं भीत भीरं॥
छं०॥२१७०॥

(१) ए. कृ. को.-पंक।

मिली जोगिनी जोग नंचै षिघाई। फिकार'त फेकी पलं पूरि भाई॥
मिल्यौ गुज्जरं मद्धि फौजं सु धायौ। हमै षग्ग षत्तं षलं [1]एक घायौ॥
छं० ॥ २१७१ ॥

परे बिंब षंडं धरं तुंड तुंडं। हकै गिद्धि जाषं परे षोनि मुंडं॥
सिरं बीर आवद्द नंचै अपारं। नचै नारदं देषि कौतिग्ग भारं॥
छं० ॥ २१७२ ॥

तनं गुज्जरं एक देषै अनेकं। मुषें मुष्ष लग्यौ प्रती एक एकं॥
भरी भूतयं बीर नच्चै अपारं। महाबीर लग्गे बरं जुद्ध भारं॥
छं० ॥ २१७३ ॥

धनं धारि उभ्भारि धायौ समुष्षं। मदं मत्त इभ्भं परे इस्स हष्षं॥
हयौ आइ बड़ गुज्जरं षग्ग धारं। कटे टट्टरं सीस फव्यौ कुठारं॥
छं० ॥ २१७४ ॥

हयौ असि भारं सु बीरम्म तामं। कटे बाहु दूनौ धरं तुट्टि ठामं॥
परे षंड बीरम्म तुट्टे विभग्गं। धमं धम्म जंप्यौ कनक्कृति लग्गं॥
छं० ॥ २१७५ ॥

करं बाम चंप्यौ निजं सीस अप्पं। करे षग्ग धायौ समं रिम्म धप्पं॥
भरी ढाहि ढंढोरि माझी कनक्के। [2]तुरे कोइ ढारं षलक्के सष्षक्के॥
छं० ॥ २१७६ ॥

बरी अच्छरा बिंद साचीनि मन्ने। तुऱ्यौ कन्नकू धार सों घाइ घन्ने॥
सयं पंच सारद्द बीरम्म सथ्थें। परे षेत षंटे कनक्क सु हथ्थें॥
छं० ॥ २१७७ ॥

बड़ गुज्जर के मारे जाने पर पृथ्वीराज का निठुर राय की तरफ देखना।

दूहा ॥ बड़ हथ्थह बड़ गुज्जरह। झुझ्झि गयौ बैकुंठ॥
भीरं [3]सघन सामित परत। षष निढ्ढुर अरि दिट्ठ॥छं०॥२१७८॥
पऱ्यौ षेत बड़ गुज्जरह। अप्प पंग दल हक्कि॥
तम्मि सनंमुष नेन करि। दिय आग्या मन तक्कि॥ छं० ॥ २१७९॥

(१) मो.-लषं। (२) ए. कृ. को.-ढरे कोइ ढारं पळं कइ सक्के। (३) मो.-सषन।

जैचन्द की तरफ से निठ्ठुर राय के छोटे भाई का धावा करना। निठ्ठुर राय का सम्मुख डटना।

कवित्त॥ बीजापुर दिग विजय। करत विजपाल नरिंदं॥
सिंधुर लिय पेसंक। च्यारि जनु रूप करिंदं।
बार सहस को पटो। एक एकह प्रति थप्पिय॥
पष्पर पूरब नाय। राव बलिभद्र सु अप्पिय॥
घन सयन अवर पच्छें करैं। क्रमिय पंग आदेस लहि॥
आवंत देषि बंधव अनुज। राव निडर पग मंडि रहि॥
छं०॥ २१८०॥

युद्ध वर्णन।

रसावला॥ कमहंति धप्पं, दिषे चष्प रुप्पं। भ्रम्यौ निठुरे यं, [1]करी पंग जेयं॥
छं०॥ २१८१॥
मुषं नैन रत्तं, मनों झाल तत्तं। परुौ बंब देनं, रुम्यौ सौम्र गेनं॥
छं०॥ २१८२॥
रुभे टोप सीसं, घनं ऋवं दीसं। सनाहं सु देही, तिनं मत्ति वेही।
छं०॥ २१८३॥
मनो नीर मद्धं, सुभै [2]लाज सुद्धं। कसे सस्त्र तोनं, गुरं जानि द्रोनं॥
छं०॥ २१८४॥
छुटे बान हथ्थं, मनों इंद्र पथ्थं। लगै ईष गज्जं, बजै जानि वज्रं॥
छं०॥ २१८५॥
मुठी दिट्ठ मंडे, लियै जीव छंडे। हने छत्रधारी, लुटै भूमि भारी॥
छं०॥ २१८६॥
छुटै अग्गि हथ्थं, जरै सस्त्र सथ्थं। रुके सेन पंगं, मनो [3]ईस गंगं॥
छं०॥ २१८७॥
दिषे पंग नेनं, मनों काल सेनं। अनी मुष्ष राजं, गजं जुथ्थ साजं॥
छं०॥ २१८८॥

---

(१) मो.-कमी। (२) ए. क को.-ज्वाल। (३) मो.-सासि।

अवै मद्द धारं, न मेनं उघारं। छुटै बाय बेयं, मनों बद्दलेयं ॥
छं० ॥ २१८९ ॥

मुषं चारि धाये, मनों आल आये। हने पीलवानं, उड़ै घास जानं॥
छं० ॥ २१९० ॥

चवै चारि ढुक्कै, पछै और रुक्कै। करैं तीर मारं, वहै लोह धारं॥
छं० ॥ २१९१ ॥

नदी श्रोन पूरं, फिरै गेन छूरं। गजै गैन काली, नचै षप्पराली॥
छं० ॥ २१९२ ॥

रुचै ईस जंगं, रसै रोस रंगं। उभै पिचिपालं, बकै विक्करालं॥
छं० ॥ २१९३ ॥

दुअं तोन षुट्टै, पछै षग्ग जुट्टै। हनै तक्कि मद्धं, परे अद्ध अद्धं॥
छं० ॥ २१९४ ॥

झरै अंग अंगं, दवं जानि दंगं। गजं सीस पानं, परै बीज जानं॥
छं० ॥ २१९५ ॥

दूहा ॥ कमध षपत अरि पंग लिषि। तमकि तमकि बर तेज ॥
जानिक अगि बन घन [1]चरन। उमड़ि बाय घन सेज॥छं०॥२१९६॥

भाई बलभद्र और निठ्ठुर राय का परस्पर द्वंद युद्ध होना और दोनों का एक साथ खेत रहना।

भुजंगी ॥ नरे निठ्ठुरं निंद नामंत रायं। बलीभद्र लष्यौ सितं गज्ज गायं॥
सहं नाम बध्यो विधानी करन्नी। छितं छच ब्रत्ती सु सामी सरन्नी॥
छं० ॥ २१९७ ॥

उभै दिट्ठ दिट्ठी मिले बाहु बाहं। नियं उक्ति नाही अरी राह राहं॥
प्रियं पीत रत्तं गैत पंगं नरिंदं। मिल्यौ षग्ग हंसंक याहं बनिंदं॥
छं० ॥ २१९८ ॥

उठी झार सस्त्रं विसस्त्रंति सीसं। रुधी धार धारंति मानंतिदीसं॥
कवीचंद केली [2]कमवज्ज रायं। सयं तात मातं वरं मिंघ जायं॥
छं० ॥ २१९९ ॥

(१) मो.-चरन। (२) ए. कृ. को.- दुराजे सुरायं।

बियं गब्भ थानं सु ग्यानं गुरझ्झं । न छुट्टै न षुट्टै न तुट्टै उरभ्भै॥
घरी ईक दीहं तिहं इंति कालं । मनों रत्त आरत्त मैं मत्त मालं॥
छं० ॥ २२०० ॥
परं अश्व अश्वंग जखंग बीयं । बिए भग्ग धारी सु धारी सु नीयं ॥
मनों विंद विंदान दुरजोध बंधं । कटे गंध वाहं जु बग्गो सु गंधं॥
छं० ॥ २२०१ ॥
भभक्कंत सोंधा तिनं अंग तासं । दुअं घट्टि पंचास कोसं प्रकासं॥
गयंनं गुंजारं करें भोंरभीरं। धर्यौ आतपं आनि रबि छांह गीरं॥
छं० ॥ २२०२ ॥
भयौ जंग में जंग आवै न बंटै । उभै सीस ईसं दृग्यारैं उभ्भंटै॥
रवी चंद नारद्द बेताल रंभा । चवट्ठी जमातं निरष्यो अचंभा ॥
छं० ॥ २२०३ ॥
कवित्त । तिमिर बघ्घ रट्ठौर । आय जब पुट्ठ बिलग्गौ ॥
गहु गहु गहु चहुआन । इह हिंदवान सु भग्गौ ॥
कर क्कस हर सिंघ । सिंघ सम सिंघ न छुट्यौ ॥
जनु कि जंत वै मुषह । सुभंष लट्ठी मुष बट्यौ ॥
घन घाय घाय (१)बिम्मिय घरिय । करिग आन सामंत सह ॥
बैकुंठ बट्ट लट्ठी बिहुन । लरन अप्प अप्पह सु रह ॥छं०॥ २२०४ ॥

जैचन्द का निठ्ठुर राय की लाश पर कमर का पिछौरा खोल कर डालना।

दूहा ॥ भभिभ्भ पेत निठ्ठुर पर्यौ । दिष्षि दुहुं दल सथ्थ ॥
कटिपट छोरि जैचंद पहुं । ढंकिय अप्पन हथ्थ ॥ २२०५ ॥

निठ्ठुरराय की मृत्यु पर पंग का पश्चात्ताप करना।

कवित्त ॥ तुं कुल रष्षन केलि । बंध बारुन बल बोहिय ॥
तैं रष्यौ चहुआन । सांमि संकट सुभ सोहिय ॥
तैं आरस अलि अल । उतंग बारधि बल बंध्यौ ॥
जहं जहं हय भर भरंत । तहां फर्यौ सिर संध्यौ ॥

(१) मो.-चिमिय ।

रंडरी ढाल ढिल्लिय नयर । मरद् मयन झुझ्यौ पुरिस ॥
निठ्ठुर निसंक उप्पर पहुर । बहुरि पंग बोल्यौ सरिस॥छं०॥२२०६॥
दूहा ॥ [1]सम रट्ठौर रठ्ठवर । निठ्ठुर झुझिंझग जाम ॥
दिनयर दल प्रथिराज कौं । राह पंग भय ताम ॥ छं० ॥२२०७॥

निठ्ठुरराय के मोरचा रोकने पर पृथ्वीराज का आठ कोस पर्य्यन्त निकल जाना ।

कवित्त धर फुट्टै षुरतार । सार तुट्टै सिर उप्पर ॥
तहां नायौ रट्ठि वर । न्त्रिपति प्रथिराज स्वामि छर ॥
षग्गह सीस हनंत । षग्ग षुप्परिय षनं षन ॥
श्रोनित बुंद परंत । पंग किन्नीय घरघघन ॥
बिरचयौ लोह बर सिंघसुअ । षंड षंड तन षंडयौ ॥
निठ्ठुर निसंक झुझ्झंत रन । अठ्ठ कोस न्त्रप छिंडयौ ॥
छं० ॥ २२०८ ॥

निठ्ठुर राय की प्रशंसा और मोक्ष ।

अट्ठ कोस अंतरिय । पंग सथ्थरिय परिय भर ॥
परि निठ्ठुर पथ्थरिय । कंस गजराज दंत धर ॥
हय हय है भारथ्थ । धवल बंबरह भिरत हुअ ॥
ब्रह्म लोक सिव लोक । लोक ससि छंडि लोक धुअ ॥
रन घरिय राव आरति अरुन । तरुन अरुन मंडल षिलिय ॥
अट्ठाइ कोस चहुआन पर । बहुरि पंग षारस झिलिय ॥
छं० ॥ २२०९ ॥

पंग सेना का पुनः पृथ्वीराज को आघेरना और कन्ह राय का अग्रसर होना ।

झिलि षारस पहुपंग । रंग रंगह घन घेरिय ॥
घन निसान गय घंट । ठनकि ठंठनि बजि भेरिय ॥

(१) ए. कृ. को.-सम रट्ठौर नरिंद वर ।

तल विताल धर धरनि। नट्टन गहनह उच्चरयौ ॥
तब कन्हा चहुआन। सघन छंछट संभरयौ ॥
पट्टन पवंग ओड़ौ उगहि। सु गुर सार भेरिय भरन ॥
छुट्टति स्वामि हंसारि हंसि। तजि धमारि बंछिय मरन ॥
छं० ॥ २२१० ॥

वीर बखरेत का पंग सेना को रोकना और उसका माराजाना।

छंछट छल रष्यनह। [1]पवँग पट्टन प्रवेस किय ॥
तब लगि हय गय भर। भरंति चहुआन चंपि लिय ॥
बलिय बीर [2]बष रेत। षग्ग षोहनि दल [3]रुक्कयौ ॥
तब लगि कँह पटनेस। झारि झंझरि झर झुक्कयौ ॥
उचित सौस तस अंमरह। समर देषि संपष्यऱ्यौ ॥
निठुर निसंक उप्पर पहर। बहुरि पंग पहु उतऱ्यौ॥छं० ॥ २२११ ॥

छग्गन राय का पंग सेना को रोकना।

दूहा ॥ चंपत अच्छरि रिंढ लगि। चषि अप्पन तन देषि ॥
तन तुरंग तिल तिल करन। भयौ कन्ह मन भेष ॥छं०॥२२१२ ॥
कवित्त ॥ सुनहु वत्त षषरैत। लेहु ओढ़ौ दल रक्कौ ॥
चहूँआर चंपंत। अंत ओटह किम चुक्कौ ॥
पहु पट्टन पल्लानि। हटकि करि हनौ गयंदह ॥
सबर बीर संग्रहौं। भीर नह परैं नरिंदह ॥
रुक्कयौ [4]छगन जैचंद दल। सिर तुट्टै असिवर कढ्यौ ॥
तब लगि सु तास दल रुक्कयौ। जब लग्गि कन्ह हेवर चढ़यौ ॥
छं० ॥ २२१३

छग्गन का पराक्रम और बड़ी बीरता से माराजाना।

हय कट्टत भू भयौ। भये भूपयन पलथ्यौ ॥
पय कट्टत कर चल्यौ। करहि सब सेन समिथ्यौ ॥
कर कट्टत सिर भिरयौ। सिरह सनमुष होय फुथ्यौ ॥

(१) ए. कृ. को.-पत्रन। (२) ए.-बसरेत (३) मो.-लुक्यौ।
(४) ए. कृ. को.-सिंघ।

सिर फुट्टत धर धऱ्यौ । धरह तिल तिल होय तुट्यौ ॥
धर तुट्टि फुट्टि कविचंद कहि । रोम रोम बिंध्यौ सरन ॥
सुर नरह नाग अस्तुति करहि । बलि बलि बलि छग्गन मरन ॥
छं० ॥ २२१४ ॥

छग्गन की पार्थ से उपमा वर्णन ।

गाथा * ॥ पंडव छग्गन षग्गं । सहस गुनं पुज्जियं समरं ॥
कौरव दल कमधज्जं । रूकै चहुआन कन्ह मुष अग्गं ॥
छं० ॥ २२१५ ॥

छग्गन का मोक्ष । पृथ्वीराज का ढाई कोस निकलजाना ।

दूहा ॥ लरि छग्गन छचो सुनहु । लियौ सु हूर विमान ॥
तिन भ्रूभ्रत निरमै गयौ । अढी कोस चहुआन ॥ छं० ॥ २२१६ ॥

कन्ह का रणोद्यत होना, कन्ह के सिर की कमल से और पंग दल की भ्रमर से उपमा वर्णन ।

चढत कन्ह सामंत हय । जय जय करहि सु देव ॥
मनहु कमल कलिमल भ्रमर । कुहर पंग दल सेव ॥ छं० ॥ २२१७ ॥

कन्ह के तलवार की प्रशंसा कन्ह की हस्तलाघवता और उसके तलवार के युद्ध का वाक दृश्य वर्णन ।

भुजंगी ॥ भये आमुहे सामुहे सेन थट्टं । कसे सीस टोपं समाहे सु भट्टं ॥
जबै व्रंद सा द्वंद को कोप जान्यौ । तबै जंगली राव है वर पलान्यौ ॥
छं० ॥ २२१८ ॥
पयानो कियो दिग्गपालं सु कित्ती । सुअं बीर नर सिंह सा हूर पत्ती ॥
नराचो कढी कन्ह कै हथ्थ सूरी । महा लोह लंबी लसै लोह पूरी ॥
छं० ॥ २२१९ ॥
किधों काल कन्या किधों काल नग्गी । किधों धूम केतं किधो ज्वाल (१)जग्गी ॥
लषे सत्रु सेना सुअं भंग सोचै । मनो लोह संघार की मींच लोचै ॥
छं० ॥ २२२० ॥

* यह गाथा मो. प्रति में नहीं है ।　　　　(१) मो.-लग्गी ।

गिराये गुरं षेत घन घाय घोरैं। महा बाहु, मैं मत्त मैं मत्त मोरैं ॥
मच्यौ मार मारं विभै सार बज्जै। कपै कायरं नारि सा सूर गज्जै ॥
छं० ॥ २२२१ ॥

परी जिरह सन्नाह तें बाहु षंडी। मनों टूक करि कंचुकी नाग छंडी॥
परे अंग अंगं धरं सीस न्यारे। मनों गरुर ने षंडि कै व्याल डारै॥
छं० ॥ २२२२॥

घनं घाय लग्गे धुकै धींग धाये। मनों नालि तें कंज नीचें नवाये॥
लगे सेल सामंत घूमंत ठड्डै। मनों रंग मज्जीठ में बोरि कड्डे ॥
छं० ॥ २२२३ ॥

उड़ै अग्गि यों दंत दंती सनेनं। गुढ़ी पुच्छ उड्डैं मनों भाल रेनं॥
कहूं दौरि कै अग्गि बाहं उषारें। कहू लाष मायंक के बाक फारें॥
छं० ॥ २२२४ ॥

कहूं वा पषारे कहूं चोट षंडी। कहूं बीर बीराधि ज्यों मोद मंडी॥
कहूं नागिनी सी नवावै न राजी। मनों पिंड कारंड मैं पट्ठि पाजी ॥
छं० ॥ २२२५ ॥

कहूं मुंड रुंडं अरुंडं सुपेली। कहूं श्रोन के कुंड में मुंड मेली॥
कहुं श्रोन के सार में कंठ मेलै। मनों सिंध की धार सिंदूर ढोलै॥
छं० ॥ २२२६ ॥

झरी तेग तब बीर जमदड्ढ कड्ढी। गढी गाढ मारी किधों मुट्ठि गड्ढी ।
किधों सत्रु के प्रान की गैल नामी। किधों पानि मैं लोह की जेब जामी॥
छं० ॥ २२२७ ॥

जबै सत्रु के लोल कों धाव घालै। मनो काल की जीभ जाहाल हालै ॥
किधों छेद छत्ती निरत्ति निकस्सै। किधों भेदि देही दुआरं दरस्सै ॥
छं० ॥ २२२८ ॥

कहूं ऐंचि तारीन सों अंत ल्यावै। कहूं सत्रु के प्रान को ताकि आवै॥
कहूं चंपि दुसासनं भीम मारे। कहुं मुष्टिक चंपि कीचक प्रहारै ॥
छं० ॥ २२२९ ॥

लगे सेल सामंत लग्गे न जानैं। परै श्रोन कै पंक में सीस सानै ॥
* * * * * * छं० ॥ २२३० ॥

दूहा ॥ ऐ ऐ कन्ह निवत्त कर। धर धर तुट्टिय धार ॥
पहर एक पर हथ्थरे। सिर सिर बुट्टिय सार ॥ छं० ॥ २२३१ ॥

पट्टी छूटते ही कन्ह का अद्वितीय पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ पट्टै पल छुट्टंत। कन्ह धाराहर वज्यौ ॥
जनुकि मेघ मंडलिय। बीर बिज्जुलि गहि गज्यौ ॥
हय गय नर तुट्टंत। बिरह तुट्टिय तारायन ॥
तुट्टिय षोहनि पंग। राय श्रोनिय भारायन ॥
हल हलिय नाग नागिनि पुरत। नागिन सिर बुक्यौ रुहिर ॥
आवहि न संग सिंगार मन। मननि सीस मुक्यौ सु धर ॥
छं० ॥ २२३२ ॥

कन्ह का युद्ध करना। राजा का दस कोस निकल जाना।

भुजंगी ॥ जितं सार धारं जु सारंग तुट्टौ। मनों आवनं मेछसं सीस उट्ठौ॥
फटी फौज आवाज सा पंग राई। लगी जानि म्हद्दै धरै बघ्घ धाई॥
छं० ॥ २२३३ ॥

बजी हक्क हुंकार भंकार भेरी। भरी रोससेना फिरी लज्ज घेरी॥
धजा बीर बैरष्ष साबं बरैसा। लगै सीस सामंतसा अंमरेसा ॥
छं० ॥ २२३४ ॥

उड़ै गिद्ध आवद्ध तुट्टै उतंगा। फिनक्कै सु ताजी चिकै हस्ति चंगा॥
भभक्कै सु धायं सु रायं हवाई। मनो मारुतं मत्त सामंत थाई॥
छं० ॥ २२३५ ॥

फिरी चक्क चहुआन की हक्क बज्जी। मनों प्रौढ़ भर्ता न ऊढ़ा सु लज्जी॥
इसी कन्ह चहुआन करि केलि रत्ती। फिरै जोगिनी जोग उच्चार मत्ती॥
छं० ॥ २२३६ ॥

दहं कोहसा स्वामि आराम छुट्टौ। पछै पंग रा सेन आवन उट्ठौ ॥
* * * । * * छं०॥ २२३७ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि सेन पहुपंग। आस ढिल्ली ढिल्ली तन ॥
चिंति कन्ह चहुआन। पट्ट छुट्यो सुभयौ बन ॥

(१) ए. कृ. को. पंसिकलां। (२) ए. कृ. को.-उच्चार भेली।

निपथ अप्प है जनिय। पंग जंपै जीवन गहु ॥
सु पृथ सूर सामंत। जीह जीयत सु बैन लहु ॥
आहत्त जात धंधो तिनं। सो धंधौ जुरि भंजयौ ॥
बज्जियन जीव रुंध्यौ न्निपति। मुकति सथ्थ है बज्जयौ ॥
छं० ॥ २२३८ ॥

कन्ह का कोप ।

पद्धरी ॥ कलहंत कन्ह कुप्पौ कराल। फरकंत मुंछ चष चढ़ि कपाल॥
चिंती सु चिंत देवी प्रचंड। कह काहति कंक कर सूल मंड ॥
छं० ॥ २२३९ ॥

गुररंत सिंघ आसन अरोह। वामंग बाह षप्पर सु सोह ॥
इहि भंति प्रसन सजि देवि दंद। तहं पढ़त छंद अनेक चंद॥
छं० ॥ २२४० ॥

रन रंग रहसि उठ्ठी पयंत। बरदाइ बदत बिरदन अनंत ॥
पहु प्रगट बिरद जिन नरनि नाह। हंतन हनंत आजानबाह ॥
छं० ॥ २२४१ ॥

षोलंत नयन जिहि समर रंग। भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग ॥
भज्जनह राय संकर पयान। पूनी न षग्ग षंडल पयान ॥
छं० ॥ २२४२ ॥

देषंत सेन न्रप पंग रुक्कि। उथ्थान झग्ग जनु सिंघ हुक्कि ॥
गहि संग नंग न्निम्मलिय हथ्थ। सोहंत बज्र जनु तात पथ्थ ॥
छं० ॥ २२४३ ॥

षलभलिय सेन न्रप पंग राइ। उथ्थान तपत जनु लग्गि लाइ ॥
धर परत धरनि है छिनत सून। बाहंत गुरज सिर करत चून ॥
छं० ॥ २२४४ ॥

तरफरत तड़ित सम तेज तेग। सम सिलह सहित तुट्टत अछेग ॥
बरि अंग अंग तुटि तुच्छ तुच्छ। जन सुकत नीर सर तरफि मच्छ॥
छं० ॥ २२४५ ॥

घन घाय घुम्मि इक रहत थक्कि। बासंत षेलि मतवार जक्कि ॥

है कटे च्यारि चहुआन अंग । पंचमह साजि है समर रंग ॥
छं० ॥ २२४६ ॥

चार घोड़े मारे जाने पर कन्ह का पांचवे पट्टन नामक घोड़े पर सवार होना । पट्टन की वीरता । कन्ह का पंचत्व को प्राप्त होना ।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन । तुरिय पट्टन पल्लान्यौ ॥
हिंसि किनकि बर उठ्यौ । मरन अप्पन पहिचान्यौ ॥
उहि कर असिवर लह्यौ । गहिब गज कुंभ उपट्टै ॥
मारै लतानि वह घाव । षुंदि अरि दंतन कट्टै ॥
वह नर निसंक है वर सु धर । पिष्षहु चित्त कवित्तयौ ॥
वर मुंड माल हर संट्टयौ । वह रवि [1]स्थलै जुत्तयौ ॥ छं० ॥ २२४७ ॥

दूहा ॥ पट्टन पवंग पालानि पति । चढ्यो कन्ह चहुआन ॥
कहर कूह कोप्यो रनह । रह्यौ पंचि रथ भान ॥ छं० ॥ २२४८ ॥

मोतीदाम ॥ कुप्पो कर कन्ह सु कंक कराल । बजे पग हथ्थ दुअं असराल ॥
मनो रस बीर बलो बिकराल । कुटै असि गड्डुरि कूटत पाल ॥
छं० ॥ २२४९ ॥
फटै सिर सारनि मार विषंड । मनो जगनाथ सु बंटिय हंड ॥
तुटै सिर जाय रहै उत सेन । अजा सुत हंति सिवा बल दैन ॥
छं० ॥ २२५० ॥
परें सब सूर धरप्पर सिंभ । मनों कटि रिम्म महा गुर गिंभ ॥
* * * * । * छं० ॥ २२५१ ॥

कन्ह के रुंड का तीस हजार सैनिकों को संहारना ।

दूहा ॥ निकस्यो न्रप प्रथिराज पहु । रह्यौ कन्ह दल रोकि ॥
हय हय हय म्रतलोक महि । जय जय चवि सुरलोक ॥ छं० ॥ २२५२ ॥
लरत सीस तुट्यौ सु हर । धर उठ्यौ करि मार ॥
परो तीन लों सीस बिन । कट्टे तीस हजार ॥ छं० ॥ २२५३ ॥

---

(१) मो. वह रवि रथ लै जुत्तयौ ।

कन्ह का तलवार से युद्ध करना ।

चोटक ॥ बिन सीस इमी तरवारि बहै । निघटै जन सावन घास महै ॥
धर सीस निरास हुअंत इसे । सुभ राजनु राह रुकंत जिसे ॥
छं० ॥ २२५४ ॥

धर नाचत उट्ठि कमंध धरैं । भगलं जनु आपस ष्याल करैं ॥
बिव षंड बिहंड सु तुंड तुटै । दुअ फार करारनि सीस फटै ॥
छं० ॥ २२५५ ॥

हरदास कमद्धज आय अस्यौ । तिन को तन घावन सों जकर्‍यौ ॥
बल वाम इसो न रहैं एकस्यौ । मनों नाहर पेटक में निकस्यौ ॥
छं० ॥ २२५६ ॥

कि मनो गजराज छुट्यौ जकस्यौ । कविचंद कहै परलो जु कर्‍यौ ॥
असि दौरि दई सु जनेउ उतारि । परयौ हरदास मिथी पुर पारि ॥
छं० ॥ २२५७ ॥

बिफुर्‍यौ रन में कर कन्ह सजें । बिन मावत छुट्टि कि मत्त गजें ॥
हहरें हलकै किलकै किलकी । भहरें भरि पत्र उमा भिलकी ॥
छं० ॥ २२५८ ॥

तिन मैं रुधि धारि चलै भिलकी । तिन उप्परि पंति फिरै अलिकी ॥
सु उभ्भावत हथ्थ चुरी षलकी । सु पियें रुधि धार चलै ललकी ॥
छं० ॥ २२५९ ॥

गहरें गवरांपति साल गठैं । बहरें बर बावन बीर बढैं ॥
घहरें धर घायल घुम्मि इसे । जहरें जनु षाइ ढरंत जिसे ॥
छं० ॥ २२६० ॥

कहरें नर कन्ह सु केलि करी । षहरें तरवार सु तुट्टि परी ॥
वह नागिनि सो सुध व्है निकरी । दल षंग भयान लगी अकरी ॥
छं० ॥ २२६१ ॥

तलवार टूटने पर कटार से युद्ध करना ।

दूहा ॥ जब तुट्टी तरवार कर । तब कड्ढी जम दड्ढ ॥
इक कटारी दुहुन उर । पंच सहस भर बड्ढ ॥ छं० ॥ २२६२ ॥

कटार के विषम युद्ध का वर्णन जिससे पंग सेना के पांच सहस्त्र सिपाही मारे गए।

त्रिभंगी ॥ कर कढ़ि कटारी जम दढ्ढारी काल करारी जिय भारी ॥
चंपै चर नारी बारों पारी निकसि निनारी उर भारी ॥
रस सोभत सारी ढेढ करारी लंब लँबारी लंबारी ॥
उपजै सुर आरी बज्जि घरियारी अति अमियारी आहारी ॥
छं० ॥ २२६३ ॥

लग्गै इक आरी छोड़ [1]दुआरी आनि जियारी जिम्भारी ॥
लपकै हियलारी बारह बारी भूषी भारी भाहारी ॥
जनु नागिनि कारी कोप करारी अति आकारी सा कारी ॥
भभकै रुधि भारी भभक भरारी भर भर बारी तन ढारी ॥
छं० ॥ २२६४ ॥

गिरि तें झरकारी झिरना झारी झिरै झरारी झर कारी ॥
बबकै बबकारी बीर बरारी नारद तारी दै चारी ॥
मचि कूह करारी अति उम्भारी अगिनित पारी धर [2]ढारी ॥
* * * * ॥ छं० ॥ २२६५ ॥

दूहा ॥ काल कूट कीनो विषम। पंच सहस भर बढ्ढ ॥
कहर कन्ह किन्नो सु कर। तब तुट्टिय जमदढ्ढ ॥ छं० ॥ २२६६ ॥

कटार के टूट जाने पर मल्ल युद्ध करना।

पद्धरी ॥ तुट्टी सु हथ्थ जमदढ्ढ जोर। बढ्यौ जु अप्प बल अंग और ॥
गहि पाइ भुम्मि पटकै जु फेरि। धोबी कि बस्त्र सिल पिट्ट सेर॥
छं० ॥ २२६७ ॥

दुअ हथ्थ दोन नर ग्रहै मुंड। छोड़ मध्य चूर जनु तुंब कुंड ॥
गहि हथ्थ हथ्थ मुर रे सु तोरि। गज सुंड साप तोरे मरोरि ॥
छं० ॥ २२६८ ॥

भरि रोस हथ्थ पटकंत मुंड। भिरडंत आनि औकल सु षंड ॥

(१) ए. कृ. को.-दुयारी, दुपारी। (२) ए. कृ. को.-भारी।

गहि पाइ दोइ डारंत चीर। कट्ठी सु जानि फारंत भीर ॥
छं० ॥ २२६९ ॥

गहि सीस मौर भंजै सु ग्रीव। फल मोरि मालि तोरै सु तीव ॥
हाकंत मत्त दैलत्त घाइ। डारंत तेव करि हाइ हाइ॥छं०॥२२७०॥
इहि विधि सु कन्ह रिनकेलि किन्न। परि अंग अंग होइ छिन्न भिन्न॥
छं० ॥ २२७१ ॥

चाहुआन का दस कोस निकल जाना।

कवित्त ॥ चाहुआन सुजानं। भूमि सर सेज्या सुतौ ॥
देषि बिअच्छरि बर। समूह बरनह मानूता ॥
जनु परि त्रिय परहंस। हंस आलिंगन मुकयौ ॥
भर भारी कन्हह। हनत अवमान न चुक्कयौ ॥
धर गिरत धरनि फुनि फुनि उठत। भारथ सम [1]जिन बर कियौ ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कोस दसह भूपति गयौ॥ छं० ॥२२७२॥

कन्ह राय की वीरता का प्रभुत्व। कन्ह का अक्षय मोक्ष पाना।

जिम जिम तन जरजर्यौ। विहसि वर धायौ तिम तिम ॥
जिम जिम अंत रुलंत। लष्य दल तिन गनि तिम तिम ॥
जिम जिम करिवर परत। उठत जिम सीस महित बर ॥
जिम जिम रुधिर झरंत। सघन घन बरषत सद्धर ॥
जिम जिम सु षग्ग बज्ज्यौ उरह। तिम तिम सुर नर मुनि [2]मन्यौ॥
जिम जिम सु चाव धरनौ पर्यौ। तिम तिम संकर सिर धुन्यौ॥
छं० ॥ २२७३ ॥

गह गह गह उच्चार। देव देवासुर भज्जिय ॥
रह रह रह उच्चार। नाग नागिनि मन लज्जिय ॥
बह बह बह उच्चार। सु रह असुरन धुनि सज्जिय ॥
चह चह चहतासंत। तुट्टि पायन पर तज्जिय ॥
मुह मुहह मुच्छ कर कन्ह तुअ। चमर छत्र पह, पंग लिय॥

---

(१) ए. कृ. को.-जिहि। (२) ए. कृ. को.-गन्यौ।

सिर बंध कंध असिवर ढरिग । पहर एक पट्ट न दिय ॥
छं० ॥ २२७४ ॥

पहर एक पर प्रहर । टोप भमि बर बर बज्जिय ॥
बषर पषर जिन मार । पार बट्टन तुटि तज्जिय ॥
रोम रोम बर बिद्ध । सिद्ध किन्नर लिन्निय बर ॥
अस्त बस्त बज्जी । कपाट दह्वीच छीर हर ॥
रुधि मंस हंस हरिबंस नर । दिव दिवंग मिटि अम्मिलित ॥
किन्नर कबंध घटि तंति तिन । सुबर पंग दिष्षिय [2]षिलत ॥
छं० ॥ २२७५ ॥

कन्ह के अतुल पराक्रम की सुकीर्ति ।

भुजंगी ॥ परे धाय चहुआन कन्हा करूरं । भयं पारथं बीर भारथ्थ भूरं ॥
बढे सार बज्जे न भज्जै न बग्गं । नहीं नीर तीरं हरं भार लग्गं ॥
छं० ॥ २२७६ ॥

हते लज्ज भारे सु भारथ्थ नीरं । बड़े सूर अग्गं न दीसै सरीरं ॥
तिनं समं भारं समै नाहि हथ्थं । झरै सब्ब सस्त्रं परं बीर बथ्थं ॥
छं० ॥ २२७७ ॥

झमक्कंत झारे प्रहारंत सारं । मनों कोपियं इंद्र बुट्ठे अंगारं ॥
जिती भोमि [1]चष्षे षिजै पंग इंदं । लरे लोह दीनं सरेहं गुविंदं ॥
छं० ॥ २२७८ ॥

लगै लोह लोहं पलट्टैति तत्ती । रमं सामि अप्पं न भौ सार छत्ती ॥
तुटे अस्त बस्तं भयं छीन भंती । असव्वार अस्वं न ढुंढै निरत्ती ॥
छं० ॥ २२७९ ॥

परे संघरे सूर मारंग पाजं । नरी रंग बज्जै कलं प्रान बाजं ॥
इसी कन्ह चहुआन करि केलि रत्ती । फिरै जोगिनी जोग उच्चार मत्ती ॥
छं० ॥ २२८० ॥

टरै विप्प हूरं दसें दीन बारं । भयं अस्वमेधं सहं धम्मसारं ॥
छं० ॥ २२८१ ॥

(१) ए. छ. को.-लिषत । (२) मो. बषे ।

कन्ह द्वारा नष्ट पंग सेना के सिपाहियों की संख्या।

दूहा ॥ * एक लष्ष सित्तर सहस। कट्टि किये अरि नन्ह ॥
दोय दीन भष्षै सु इम। धनि धनि ग्वष्प सु कन्ह ॥
छं० ॥२२८२॥

धरनि कन्ह परतह प्रगट। उट्ठौ पंग नृप हक्कि ॥
मनों अकाल संकरह हँसि। गहियं तुट्टि निधि रंक ॥छं०॥२२८३॥

अल्हन कुमार का पंग सेना के साम्हने होना।

तब झुकि अल्हन षग्ग गहि। भयौ अप्प बल कोट ॥
सिर अप्पौ कर स्वामि कों। हनो गयंदन जोट ॥ छं० ॥ २२८४ ॥

अल्हन कुमार का अपना सिर को काट कर पृथ्वीराज के हाथ पर रख कर धड़ का युद्ध करना।

कवित्त ॥ करिय पैज अल्हन। कुमार रुट्ठौ षग पुल्लै ॥
झरतु धार तन चार। भार असिवर नन डुल्लै ॥
रोहन रन मुंडयौ। बीर बर कारन उट्ठौ ॥
ज्यों अषाढ घन घोर। मार धारह निर बुट्ठौ ॥
पंगुरा सेन उप्पर उभरि। उभै भयन गज मुष्ष दिय ॥
उच्चरे देवि सिव जोगिनिय। इह अचिज्ज में राज किय॥छं०॥२२८५॥

अल्हन कुमार का अतुल पराक्रममय युद्ध वर्णन। वीरया राय का मारा जाना उसके भाई का अल्हन के धड़ को शान्त करना।

पद्धरी ॥ मह माइ चित चिंतीम आल। जंप्यौ सु मंच देवी कराल ॥
आश्रम्म देवि किय निज्ज धाम। कट्टया सीस निज हथ्थ ताम ॥
छं० ॥ २२८६ ॥

मुक्कयो सीस निज अग्ग राज। हुंकार देवि किय निज्ज गाज ॥
धायौ सु धरह बिन सीस धार। संग्रह्यौ बांह बामै कटार ॥
छं० ॥ २२८७ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

उच्छयौ षग्ग बर दच्छ पानि । संमुहौ धीर धायौ परानि ॥
कौतिग्ग सब्ब देषंत सूर । दिष्यौ न दिट्ठ कारन करूर ॥
छं० ॥ २२८८॥

माभी पयट्ठ सा सेन पंग । बज्जे करूर बज्जंत जंग ॥
कौतिग्ग सूर देषंत देव । नारद्द रुद्र रम हंस एव ॥छं०॥२२८९॥
षेचर रहंस चर भूअ चार । थक्के सु देषि प्राक्रम करार ॥
महमाइ सुधर उप्पर बयट्ठ । अरि भार सार मंडिय पयट्ठ ॥
छं० ॥ २२९० ॥

धर परै धार तुट्टै सु यार । हल्लहले पंग सेना सु भार ॥
दष्षिनिय राय बीरया नाथ । गज चल्यौ जुद्ध सब्बह समाथ ॥
छं० ॥ २२९१ ॥

सूरमा धारह ढहन्न बीर । चंपयौ गज्ज सम्हौ सुधीर ॥
मुष लग्गि आय सम अल्ह जाम । असि भाक हयौ मुष इभ्भ ताम॥
छं० ॥२२९२ ॥

सम अंपि जार तुट्टौ सुदंत । कटि मूल पर्यौ पादप सुमंत ॥
उट्ठयौ हक्कि बीरया नाथ । आयेव अल्ह सम लग्गि बाथ ॥
छं० ॥ २२९३ ॥

चंपयौ उअर अल्हन ताम । नष्षयौ धरनि गय उड्डि उसास ॥
बीरया नाथ लघु बंध धाइ । गज चल्यौ पंग लग्गौ सु दाय ॥
छं० ॥ २२९४ ॥

बिंटयौ अब्ब सेना सु धीर । आबद्ध मुक्कि सब सेन बीर ॥
चंपयौ आय गुरु गज्ज जाम । संग्रह्यौ दंत दंती सु ताम ॥
छं० ॥ २२९५ ॥

गय हयौ सीस कट्टार सार । महमाइ हँसिय दीनौ हुंकार॥
भग्गै सु गज्ज कीनौ चिकार । ढाहयौ सबै मिलि सूर सार ॥
छं० ॥ २२९६ ॥

अल्हन कुमार के रुंड का शान्त होना और उसका मोक्ष पाना ।

कवित्त ॥ सिर तुट्टै रुंध्यौ गयंद । कढ्यौ कट्टारौ ॥
तहां सुमरिय महमाइ । देवि दीनौ हुंकारौ ॥

अमिय सद्द आयास। लयौ अच्छरिय उछंगह॥
तहां सु भइ परतछ्यि। अरित अरि कहत कहंगह॥
अल्हन कुमार विभ्रम सुभ्यौ। रन कि विमानह मनु मन्यौ॥
तिहि दरसि तिलोचन गंग धर। तिम संकर सिर धर धुन्यौ॥
छं०॥ २२९७॥

दूहा॥ सघन घाय विहृयो सु तन। धरनि ढल्यौ परिहार॥
परे बहुत्तरि सुभर रन। सङ्ग अल्हन सार॥ छं०॥ २२९८॥

अल्हन कुमार के मारे जाने पर अचलेस चौहान का हथियार धरना।

धुनित ईस सिर अल्हनह। धनि धनि कहि प्रथिराज॥
सुनि कुप्यौ अचलेस भर। मुहि बल देषिव राज॥ छं०॥ २२९९॥
इह चरित्त नट्टिय सु चिर। करिय राज परिहार॥
अद्भुत क्रम देषहु न्रपति। करौं षेत सर सार॥ छं०॥२३००॥
पऱ्यौ अल्ह सामंत धर। गही पंग दल अब्ब॥
सुभर रज्जि कमधज्ज दल। सुमन राज गुर ग्रब्ब॥ छं०॥२३०१॥

पृथ्वीराज का अचलेस को आज्ञा देना।

कवित्त॥ तब जंपै प्रथिराज। सुनौ अचलेस संभरिय॥
इह सु सूर आचरन। नही सामंत संभरिय॥
मेंन सूर धरि कंध। राह रुंधेत गयौ धन॥
इह अचंभ आचरन। देव दानव दैतानन॥
सुनि दानव परहरि पर। अपर जुद्ध संधि पंगुर दलह॥
संकही सामि संकट परै। सकल कित्ति कित्ती चलह॥ २३०२॥

अचलेस का अग्रसर होना।

सुनत बेंन प्रथिराज। अचल नायौ मरंन सिर॥
है नच्यौ सु तुरंग। बीर कंपे तुरंगधर॥
जुद्ध सलिलह परै। लोह लहरी धर तुट्टै॥
जल विथ्थरि कमधज्ज। घाय लग्गो आहुट्टै॥

अचलेस अग्गि जग्गंत भर। प्रलै अग्नि बैनेच जिम ॥
चहुआन अग्ग उभ्भौ भयौ। राम अग्ग हनमंत जिम॥छं॥२३०३॥

अचलेस का बड़ी वीरता से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै हक्कियं सेन पंगं नरिंदं। दियौ आयसं जानि कल गज्जि इंदं॥
उठी फौज पंगं करै क्रूह सब्बं। बगे बग्ग कढ्ढी गजे बीर गब्बं॥
छं० ॥ २३०४ ॥

करी अचलेसं जु स्वामित्त पज्जं। करौं षंड षंडं पलं तुझ्झ कज्जं॥
नयौ सीस चहुआन अचलेस तामं। मिल्यौ आय सैना रती कंक कामं॥
छं० ॥ २३०५ ॥

जपे मंत्र द्रुग्गा करे ध्यान अंबी। सुने आय आसीस सा देवि लुंबी॥
बलं अबलं रूप अद्भुत्त पिष्यो। भयौ मोह सब्बै घटी रुद्र दिष्यौ॥
छं० ॥ २३०६ ॥

विरम्मे धुरम्मे षु बज्जे निसानं। मिले रीठि मत्ती सिरं चाहुआनं॥
दिसं भेष लग्गी रयं रत्त भुम्मी। पयं पात जानं सयं गत्त उम्मी॥
छं० ॥ २३०७ ॥

उछंगं उछारंत अच्छी निरष्षै। दलं दंग पंगं कुरंगं परष्षै॥
कुला केलि सामंत तत्तं पतंगं। परे जुद्ध मत्ते सरित्ता सु गंगं॥
छं० ॥ २३०८ ॥

रहं भान थानं रह्यौ थक्कि रथ्थं। टगं लग्गियं भूच षेचं सु रथ्थं॥
गही पंग सेना भरं षग्ग पानं। मनो हक्कि गोपाल गोधन्न थानं॥
छं० ॥ २३०९ ॥

भरक्के धरक्के भरक्के ढरक्के। परे गज्ज बाजं सु कंधं करक्के॥
करे नाम सब्बं परे षग्ग धीरं। करी जूह मझ्झे गजेकं कठीरं॥
छं० ॥ २३१० ॥

पयंसं सरक्कै धरक्कै धरन्नी। परे विछि षंडं सवं मुष्ष रन्नी॥
किलक्कारियं देवि सथ्थं सु नंचै। परै षग्ग पानं करै पैज संचै॥
छं० ॥ २३११ ॥

कवित्त ॥ करि विपैज अचलेस । सु छल चहुआन षग्गगहि[1] ॥
अरि दल बल संहस्यौ । पूरि धर भरित रुधिर दहि[2] ॥
मच्छति हैवर तिरहि । कच्छ गज कुंभ बिराजहि ॥
उअर हंस उड़ि चलहि । हंस मुष कमलति राजहि ॥
चवसट्ठि सद्द जै जै करहि । छत्रपत्ति परि संचरिय ॥
बोहिथ्थ बीर बाहर तनै । दिल्लीपति चढ़ि उत्तरिय॥छं०॥२३१२॥

दूहा ॥ सुनत घाव बिड्यौ सघन । ढस्यौ अचल चहुआन ॥
भयौ मोह कमधज्ज दल । परें पंच सें थान ॥ छं० ॥ २३१३ ॥

विझराज का अग्रसर होना।

अचल अचेत सु षेत हुअ । परिग पंग बहुराय ॥
पट्टन छर अरु पट्ट छर । उठे बिंझ बिरुझाय ॥ छं० ॥ २३१४ ॥
पस्यौ अचल पिष्यौ अग्गिय । करिय कोप पहुपंग ॥
अप्प बग्ग कढ्ढिय बिरचि । [3]हनू हनौ चवि जंग ॥ २३१५ ॥

पंग सेना का विषम आतंक वर्णन।

लघुनराज ॥ कढ्ढी सु बग्ग पंगयं । तमक्कि तोन संगयं ॥
बजे निसान नद्दयं । ठनंकि घंट मद्दयं ॥ छं० ॥ २३१६ ॥
रनक्कि भेरि भेरियं । नद्दे भरन्न फेरियं ॥
षरक्कि तोन [4]पष्षरं । गहक्कि भार सुब्भरं ॥ छं० ॥ २३१७ ॥
धरक्कि धाम सुड्डरं । किनक्कि सीस से सुरं ॥
भरं सु राज पग्गयं । लहंति जुत्ति जंगयं ॥ छं० ॥ २३१८ ॥
कुलं अरेह सब्बसं । अरप्पि सांइ अप्पसं ॥
अमग्ग बट्ट भंगयं । जुरे अनेक जंगयं ॥ छं० ॥ २३१९ ॥
रते सु ध्रंम्म सामयं । करन्न उंच कामयं ॥
पंती सु नेह न्रिम्मलं । चले सु स्वामि अच्चलं ॥ छं०॥२३२०॥
मरन्न तिन्न मातयं । गरूअ गुन्न गातयं ॥
तपे सु आय आइयं । नयौ सु सीस साइयं ॥ छं०॥२३२१॥

(१) मो. कहे। (२) ए.-रहि
(३) ए. कृ. कां. हनो। (४) मो.-पप्परं।

दियौ सु पंग आयसं । गहन्न सब्ब रायसं ॥
गहौ बहौ सबैं मिलौ । सकै न जाइ ज्यौं दिलौ ॥ छं० ॥ २३२२॥
सुनें सु बच्च पंगयं । कढे सु षग्ग गज्जयं ॥
* * * * * * छं०॥२३२३ ॥

पृथ्वीराज का विझराज सौलंकी को आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ दल आवत पहु पंग । दिष्षि चहुआन सब्ब सजि ॥
बींझराज चालुक्क । दियौ आयेस अप्प गजि ॥
अहो धीर चालुक्क । सहि अनभंग षग्ग धरि ॥
सनमुष मजि षल जूह । तास भर सु भर अंत करि ॥
उच्चर्यौ ब्रह्म चालुक तहं । अहो राज प्रथिराज सुनि ॥
पथ्थ धरंनि घन स्वर भर । करौं पंग दल [1]दंति रिन ॥
छं० ॥ २३२४ ॥

विझराज पर पंगसेना के छः सरदारों का धावा करना । विझराज का सब को मार कर मारा जाना ।

भुजंगी ॥ तब नम्मि सीसं न्त्रपं बिंझ राजं । चल्यौ रिम्म सम्हं घनं जेम गाजं॥
जपे मंच अंबीय मा इष्ट सारं । मन बच्च क्रम्मं धरे ध्यान धारं ॥
छं० ॥ २३२५ ॥
दियौ आय अप्पं दरस्सं सु अंबी । चढी जानि सिंघं सु आवद्ध लुंबी॥
सथै सब्ब देवी षगं पप्प रत्ती । मतं झूझ मत्ती झलक्कंत कत्ती ॥
छं० ॥ २३२६ ॥
सबै भूचरं षेचरं षग्ग हक्कै । नचै काल ईसं सु डक्कं तु हक्कै ॥
अगें भूत प्रेतं फिरै भूह कारं । करं जोगिनी पच जंपै जै कारं॥
छं० ॥ २३२७ ॥
चलै अग्ग गिद्धी समं सिद्धिसाजं । सिरं सूर कौतिग्ग देषै विराजं॥
रजे देव जानं अधं आय लिष्षै । नचै बीर कौतिग्ग नारद दिष्षै॥
छं० ॥ २३२८ ॥

(१) ए. कृ. को.-पंति ।

लष्यौ पंग सेना सु विंभं करारं। भयं भीत भीरं सजे सूर सारं॥
मिल्यौ घाव चालुक्क सा सेन मभ्झं। बनं अंबुजं इभ्भ ज्यौं जानि लुभ्झं
छं० ॥ २३२९ ॥

परे पुंडीरकं घनं सेन सारं। किनक्कै सुता जीभ जै दंत भारं॥
धरं मुंड पूरं चलै श्रोन पूरं। पलं कीच मच्च्यौ सवं कूक रूरं॥
छं० ॥ २३३० ॥

समं सीस कट्टै तिनं सीस तुट्टै। मिलै रिन्न बट्ट तिनं आव घट्टै॥
तबै यप्परी पीठ अप्पै अंबाई। अरी हंकि ढाहै धरं घाइ घाई॥
छं० ॥ २३३१ ॥

सिरं इट्ट आवद्ध नष्षै अपारं। भरक्कंत सेना भगी पंग भारं॥
दिष्यौ पंग दिष्टी मधी सेना पंती। क्रम्यौ सिंघ जेमं मदं देषि दींत॥
छं० ॥ २३३२ ॥

दिष्यौ सेन दिष्टी करी हंतिकारं। क्रमे षट्ट राजा करे षग्ग धारं॥
क्रम्यौ तोमरं देषि सो क्रिरनरायं। क्रम्यौ रुद्रसिंघं सु कंठेरि तायं॥
छं० ॥ २३३३ ॥

जयंसिंघ देवं सु जादब्ब बंसी। न्निपं भीम देवं अयौ बंभ अंसी॥
क्रम्यौ सांषुलाराय सो देविदासं। न्निपं बीरभद्रं सु बग्घेल तासं॥
छं० ॥ २३३४ ॥

बजे आय अड्डु रसं राज बीरं। मिल्यौ पंग सम्मीप सो बिंभ धीरं॥
हयौ झाक सिंगीक बाह्ह कमंधं। पर्यौ अस्व फुट्टी परे सिंगि उद्धं॥
छं० ॥ २३३५ ॥

न्निपं चंद्रसेनं स मूरिज्ज बंसी। नरंसिंघ रायं सुनै षड्ड अंसी॥
दुअौ आय षंच्यौ भरं पंगतामं। मिले आय अड्डौ घटं न्निप्प ठामं॥
छं० ॥ २३३६ ॥

हयो किस्न राजं हयं बिंभ राजं। पल्लयौ भोमि उच्चयौ सु चालुक्क गाजं॥
तिनें जुद्धमंतौ महंतं करारं। महा झाक बज्जी समं सार सारं॥
छं० ॥ २३३७ ॥

तिनं तार आवद्ध बज्जै षिघाई। हयौ किस्नराजं जिनैं अस्व ढाई॥

असी रुद्रसिंघं हयौ बिंझ रायं। सिरं ताम तुट्यो पऱ्यो भूमि भायं॥
छं० ॥ २३३८ ॥

बिना सीस सों संग्रह्यौ रुद्रसिंघं। फिरक्यौ सु फेऱ्यौ पछाऱ्यौ परिंघं॥
गयौ आसु उड्डी तनं तम्मि मंध्यौ। बिना सीस धायो षिया जुद्ध भुध्यौ॥
छं० ॥ २३३९ ॥

जयं जंपियं देवि सो पुहप नष्षै। टगं टग्ग लग्गी सबं सेन अष्षै॥
घटी दून सारद्ध बिन सीस झुझ्झयौ। घनं घाय अघघाय अंतं अलुझ्झयौ॥
छं० ॥ २३४० ॥

पऱ्यौ विंझराजं रष्यौ रूप जानं। बऱ्यौ सांइ चालुक्क सो बंभ थानं॥
इनं देषि पंगं दलं हाय मानी। अहो बीर चालुक्क कित्ती बषानी॥
छं० ॥ २३४१ ॥

सबै छच छची न को हद्द रष्यौ। भयौ चंद कित्तीतहां सूर सष्यौ॥
* * * * ॥ * छं० ॥ २३४२ ॥

विंझराज द्वारा पंग सेना के सहस्र सिपाहियों का मारा जाना।

दूहा ॥ सहस एक परिपंग दल। धन धन जंपै धीर॥
जैं जै सुर बहै सयन। धनि धनि बिंझा बीर॥ छं०॥२३४३॥

विंझराज की वीरता और सुकीर्ति।

कवित्त ॥ परत अचल चहुआन। पच्छ गुज्जर रषि लाजं॥
भिन्न भाग सामंत। सार न्नप जल तन भाजं॥
रूप रूप रष्यनह। दैन टट्टी बच्छारं॥
अरि रुक्की बसि सार। कीव तन भंग प्रहारं॥
तन तुट्टि सिरह पलचर ग्रस्यौ। बलि बिंटौह बिराधि जिम॥
इम विटि पंति अच्छरि परी। ससि पारस रति सरद जिम॥
छं० ॥ २३४४ ॥

कलिन काल्यौ असियन मिल्यौ। भरहरि नहि भग्गौ॥
अजसुन लयौ जस बनि भयौ। अमग्ग न लग्गौ॥
पहुन लयौ [1]जियन गयौ। अपजस नह सुनयौ॥

(१) को. कृ.-जियतन।

और न ज्यों दवरि न गयो । गाइंत न गहयौ ॥
गयौ न चलि मंदिर दिसह । मरन जानि भ्रुभयौ अनिय ॥
बिंझ दिय दाग तिलकह मिसह । बह बह बह भग्गल धनिय ॥
छं० ॥ २३४५ ॥

दूहा ॥ परत देषि चालुक्क धर । करिग पंग दल कूह ॥
जिम सु देव इंद्रह परसि । रहे बीटि अनजूह ॥छं०॥२३४६ ॥

विंझराज के मरने पर पंग सेना में से सारंगदेव जाट का अग्रसर होना ।

कवित्त ॥ परत बींझ चालुक्क । गहकि ग पंग सेन दल ॥
जट्टराव सारंगदेव । आयौ तपित बल ॥
सहस तीन असवार । धार धारा रस मथ्थं ॥
न्रिमल नेह स्वामित्त । सिंघ रन बहे सु हथ्थं ॥
नाइयौ सीस नंमि पंग कह । दईय सीष पहुंच कर ॥
उप्पारि बग्ग निज सेन सम । भला प्रसंसिय अप्प भर ॥
छं० ॥ २३४७ ॥

फिरिय चंपि चहुआन । पंग आयस धाय सु गसि ॥
गह्यौ गह्यौ उच्चारि । पंग संकर संकर रस ॥
देव सोन पद्धरी । लुथ्थि लुथ्थिय आहुट्टिय ॥
मरन जानि पावार । सलष संकर रस जुट्टिय ॥
बाला सु वृद्ध जोवन पनह । देवल पन जिहि न्रिब्बयौ ॥
भयौ ओट मंडि ढिल्लिय न्रिपति । सुबर बीर अड्डौ भयौ ॥
छं० २३४८ ॥

पृथ्वीराज की तरफ से सलष प्रमार का शास्त्र उठाना ।

दूहा ॥ भयौ सलष पंम्मार जब । बज्जि दुहूं दल लाग ॥
हसहि सूर सामंत मुष । मुरि कायर अभ्भाग ॥ छं०॥२३४९ ॥

पंग सेना में से जैसिंह का सलख से भिड़ना और मारा जाना ।

चोटक ॥ गहि बग्ग फिर्‍यौ पति धार भरं । हय राज धरक्कत पाय धरं ॥

समरे निज इष्ट सु बीर बलं। धरि संगि उरंगिनि काल षलं॥
छं० ॥ २३५० ॥

हहकारिय सीस असीस सजं। रस आवरि अप्प सु बीर गजं॥
जपि मंचह मंझि पलझिमलियं। मिलि देव अयास किलंकि लियं॥
छं० ॥ २३५१ ॥

दिषि रूप सलष्य सुपंच सयं। हहकारि सुरारिय जट्ट रयं॥
बजि आवध झाक सु छाक सुरं। कटि सीस धरद्धर ढारि धरं॥
छं० ॥ २३५२ ॥

मचि बीर सुदेवि किलक्क लियं। हकि सेनह जट्ट हला बलियं॥
जयसिंघ सु आय सनंमुषयं। सम आय सलष्य मिल्यौ रुषयं॥
छं० ॥ २३५३ ॥

बजि आवध झाक करूर सुरं। हय तुट्टि उभै भर श्रोनि ढरं॥
दुअ हक्कि उठे भर बीर बरं। मिलि आवध सावध बंछि भरं॥
छं० ॥ २३५४ ॥

असि झारि सलष्य सु षग्ग झरं। जयसिंघ बिषडंस हूअ परं॥
जय सिंघ पर्यौ सब सेन लषं। गहि आवध ताहि सलष्य धषं॥
छं० ॥ २३५५ ॥

मिलि रीठ करार सुधार घरं। मुष लग्गिय भग्गिय भीर भरं॥
हहकारिय धीर दुहथ्थ कियं। पति धार धर्यौ लषि जंपिलियं॥
छं० ॥ २३५६ ॥

हल हल्लिय सेन जटं भजियं। सय तीन परे बिन हंस नियं॥
भर भग्गिय देषि सु पंग न्रपं। हहकारिय हक्किय सेन अपं॥
छं० ॥ २३५७ ॥

सब सेन हलक्किय पंग भरं। ग्रह कोपिय आंनि करूर नरं॥
* * * । * * छं०॥२३५८॥

सारंगराय जाट और सलख का युद्ध और सारंगराय का मारा जाना।

कवित्त ॥ तब सु जट्ट सारंग। सुमन समसेर समाहिय॥
विरचि पांन करि रीस। सीस सष्यां पर बाहिय॥

टोप कट्टि बिय टूक। फुट्टि तिम बिचि सिर फट्यो ॥
सुमन षांन कम्मांन। बांन लग्गत सिर थट्यो ॥
रिझयौ सूर सुर असुर ह्वै। बर बर कहि करिवर धर्यो ॥
दुअ हथ्थ मथ्थ दई जहकै। धर बिन सिर धरनी ढर्यो ॥
छं० ॥ २३५९ ॥

सलख का सिर कटना।

गाथा ॥ असि बर सिर बिरहीयं। बांनं संधांन मट्टीयं तीरं ॥
प्राहार भल्लि ढरीयं। सूरा सलहंत वाह वाह धानुष्यं ॥
छं० ॥ २३६० ॥

कवित्त ॥ सिर ढरंत धर धुक्कि। झुक्कि कड्डी कट्टारिय ॥
बिना कंध आकंध। सुद्ध छोड़ किद्ध प्रहारिय।
लग्गि सु धर फुटि पार। सुरिम सलंष करि बाह्यौ ॥
षग्ग ग्राह्यौ षिझि षेत। घाव अद्धें अध बाह्यौ ॥
वाहंत घाव धर धर मिल्यौ। पराक्रम्म पम्मार किय ॥
धनि उभय सेन अस्तुति करय। प्रथीराज सों जाबु दिय ॥
छं० ॥ २३६१ ॥

राह रूप कमधज्ज। गज्जि लग्गयौ आकासह ॥
धार तिथ्थ उर जांनि। न्हान पम्मार फिर्यौ तह ॥
रुधिर मद्ध जब करिय। जीव तनु तिलनि पंड अस ॥
जुरित सीस असि गहिय। पांनि सोभियहि केस कुस ॥
करि न्रपति सार न्रप पंग दल। अब्र,अ पति जप सब्र किय ॥
उग्रह्यौ ग्रहनु प्रथिराज रवि। सलष अलष भुज दांन दिय ॥
छं० ॥ २३६२ ॥

दूहा ॥ दियौ दान पम्मार बलि। अरि सारंग समषेल ॥
मरन जांनि मन मझ्झ रत। लरि लष्यन बघेल ॥छं०॥२३६३ ॥

पंग सेना में से प्रतापसिंह का पसर करना।

कवित्त ॥ बंधव पति कनवज्ज। सिंघ परताप समथ्थह ॥
सुत मातुल जैचंद। ब्रह्म चालुक्क सु दत्तह ॥

(१) ए. मों जाबादिय। (२) ए.-सन।

तन उतंग गरु अत्त। गात दीरघ हथ्थ भर॥
सहस घट्ट सेना सुभट्ट। कुल वट्ट जुड जुर॥
कट्टिय सु बग्ग न्रिप नाइ सिर। जनु बद्दल बड्डी अनिय॥
जंप्यौ सु अप्प सेना सरस। गहौ राज सुम्भर हनिय॥छं०॥२३६४॥

पृथ्वीराज की तरफ से लष्षन बघेल का लोहा लेना। प्रतापसिंह का मारा जाना।

छंद नाराच॥ दिषेव सांमि रिम्म सों बघेल सीस नम्मयं।
करे सु वाज सुड भ्राज नम्म पाय सम्मयं॥
बचे सु लोल फुल्लि अंग अप्प ईस गज्जियं।
करों सु षंड अप्प रिम्म मांइ षेत रज्जियं॥ छं०॥ २३६५॥
करे कृपांन अस्समांन धाय संप रद्दलं।
चिते सु कांम स्वांमि तांम गज्ज औ करंकलं॥
हनूअ मंच जंपि जंच धारि धीर षग्गयं।
सुचिंति इष्ट आइ तिष्ट हक्क हक्क जग्गयं॥छं०॥ २३६६॥
मिल्यो सु धाइ षेत ताइ धारयं करारय।
करंत हक्क धक्क डक्क भार धार धारयं॥
परंत षंड सुंड तुंड बाजि दंत बिज्जलं।
उडंत सीस षग्ग दीस दिष्षि राज दुद्दलं॥ छं०॥ २३६७॥
नचै कमंध वीर बंध देवियं किल्लकिल्लं।
करंत घाय एक तेक बिल्लि षंड विट्ठलं॥
रुलंत गिद्ध नच्चि सिद्ध पंषि संप हक्कियं॥
षेलंति षेच भूचरौर गोमयं गहक्कियं॥ छं०॥ २३६८॥
बरंति बिंद अच्छरी भरं सुचित्त चिंतयं।
करै अचिज्ज कौतिगं सुरं सु जुड मंतियं॥
धरंत षग्ग धाप यों प्रतप्प लष्षि लष्षनं।
हयो बघेल षग्गधार तुट्टि षग्ग तष्षनं॥ छं०॥ २३६९॥
ग्रहौ सु हक्कि सं बघेलतं हन्यो कटारियं॥
करे सु छिन्न भिन्नयं प्रताप भूमि पारियं॥

करंत हक्क धार षग्ग षग्ग धारि नट्टरे ॥
हने सु राय पंग सेन स्रोमियं परं परे ॥ छं० ॥ २३७० ॥
करी अरूह मज्ज सिंघ लष्यनं गहक्कियं।
ढरंत धार पंग भार भज्जि हक्क हक्कियं ॥
मघन्न घाय बिद्धि ताय मुच्छि लष्यनं ढरं।
पऱ्यौ प्रताप पंग भाय पंच सौ परप्परं ॥ छं० ॥ २३७१ ॥

लष्षन बघेल का वीरता के साथ खेत रहना।

कवित्त ॥ जीति समर लष्यन बघेल। अरि हनिग षग्ग भर ॥
तिधर तुट्टि धरनहि धुकंत। निबरंत अद्ध धर ॥
तहँ गिद्धारव हरिग। अंत गहि अंतह लग्गिग ॥
तरनि तेज रस बसह। पवन पवनां घन बज्जिग ॥
तिहि नाद ईस मथ्यौ धुन्यौ। अमिय बुंद ससि उल्लस्यौ ॥
बिडरयौ धवल संकिय गवरि। टरिय गंग संकर हस्यो ॥
छं० ॥ २३७२ ॥

दूहा ॥ सात कमल ससि उप्परह। कन्ह चंद गोयंद ॥
निडुर सलष बरसिंह नर। साष भरै सुर इंद ॥ छं० ॥२३७३ ॥
चौपाई ॥ [1]पारस फिरि सेनं प्रथिराजं। है गै दल चतुरंगी साजं ॥
सो ओपम कविराजह ओपी। ज्यों इंद्र पुरी बलि धूरत कोपी ॥
छं० ॥ २३७४ ॥

लष्षन बघेल की वीरता।

कवित्त ॥ दल सु पंग नृप चंपि। राज बिंध्यौ चतुरंगी ॥
तह लष्यन बघ्घेल। षेत संभरि अनभंगी ॥
राज कमाननि षंचि। षग्ग षोलिय षिजि जुट्टिय ॥
कै बड़वानल लपट। बीच सप्पर तें छुट्टिय ॥
करि भंग अग्गि अरि जुग्गि जुरि। मोरि सुहम मूरत्त मन ॥
हय मत्त अंत तिन एक किय। परिन समझि ढूढंत घन ॥
छं० ॥ २३७५ ॥

(१) ए. कृ. को.-परि पारस सेनं प्रथिराजं।

पहार राय तोमर का अग्रसर होना ।

दूहा परत बघेल सु मेल किय । रन रट्ठौर सु भार ॥
कनवज ढिल्लिय कंकरह । तोंवर तिह पहार ॥ छं० ॥ २३७६ ॥
कवित्त ॥ द्वादस दिन पच्छलौ । घटी पल बीह समग्गल ॥
सविता वासर सेत । दसमि दह पंच विजय पल ॥
मिलिय चंद निज नारि । रारि सज्ज्यौ सु रुद्र रस ॥
रा असोक साहनी । सहस सेना सु अट्ठ तस ॥
स्वामित्त ध्रम्म रत्तौ सु रह । करै प्रीति रा पंग तस ॥
लघ्यो सु जाइ चहुआन दिग । कम्यौ फौज बंधिय उकसि ॥
छं० ॥ २३७७ ॥

जैचन्द का असोक राय को सहायक देकर सहदेव को धावा करने की आज्ञा देना ।

पंग देषि साहनी । जात जंगल पहु उप्पर ॥
मनहु सिंघ पर सिंघ । बीर आवरिय स्वामि छर ॥
तब राधा सहदेव । देषि दिसि वाम समग्गल ॥
चषरत्ता हवि जान । अप्प उड्डर जादव कुल ॥
सिर नाइ आइ अघधा सरकि । दिय अग्या पहु पंग तमि ॥
संग्रहौ जाइ चहुआन कौं । रा असोक साहाय क्रमि॥छं०॥२३७८॥
दूहा ॥ नाइ सीस मिलि निज सयन । दिय अग्या बर पंग ॥
बंधि अनिय द्वादस सहस । बाजे बज्ज जंग ॥ छं० ॥ २३७९ ॥

सहदेव और असोक राय का पसर करना ।

सजिय अप्प सहदेब दल । अनिय सु राय असोक ॥
मिल्यौ जाइ मध्ये सु भर । अप्प चिंति उधलोक ॥ छं०॥२३८०॥
रा असोक सहदेव रा । मिलि उभ्भय दल येक ॥
सहस बीस दल भर जुरिग । चलें सु तत्त तेक ॥ छं०॥२३८१॥
प्रथीराज बांई दिसा । [1]आवत षल दल देषि ॥
गहिय बग्ग पाहार सम । तपि दिय आयस तेष ॥छं०॥२३८२ ॥

(१) मो.-आवत देख दिलेस ।

पृथ्वीराज को तोमर प्रहार को आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ दल सु पंग रट्ठिवर । जाम चंपिय दिल्लिय भर ॥
तब जंपिय प्रथिराज । पंड वंसह पाहर नर ॥
हरि हथ्थां हरि गहिहि । बांम रष्षै इहि बीरह ॥
सेस सीस कंपियै । डट्ठ डुल्लिय भुवि भीरह ॥
कविचंद एह आंपुन्न सुनु । बीर मंच उद्दर भन्यौ ॥
ठठुक्यौ सेन जयचंद दल । जए तोंअर टट्टर धन्यौ॥ छं० ॥२३८३॥

नाइ सीस प्रथिराज । अप्प कस्स्यौ हय हंसह ॥
तारापति सम तेज । षिचि वाहन हरि वंसह ॥
[1]हंस हंस आपेप । इष्ट मंचं उच्चारिय ॥
चल्यौ जंपि मुष राम । स्वामि भ्रम्मह संभारिय ॥
[2]जोगनी जूह दुअ हुअ । बीर जूह अग्गै सु नचि ॥
निरषंत अमर नारद निगह । अच्छरि रथ सीसह सु रचि ॥
छं० ॥ २३८४ ॥

पहारराय तोमर का युद्ध करना। असोक राय का मारा जाना ।

पद्धरी ॥ उप्पारि बग्ग तोमर पहार । गज्जयौ सूर सज्जे सु सार ॥
उद्दंत रूप अरि बीस दिट्ठ । सौ एक रूप अभिलयंत जिट्ठ ॥
छं० ॥ २३८५ ॥

साहस्स तेग बाहंत ताम । दिष्षे सु षेत पल स्वामि काम ॥
धारा सुधार बाहंत बीर । गज्जयौ मभ्भ्क मनु करि कंठीर ॥
॥ छं० २३८६ ॥

तुट्टंत सीस उड्डंत रिष्ट । अब संक बुद्धि मनु उपल वृष्टि ॥
तुट्टंति बाह [2]उड़ि सघन घाय । उड्डंत चिल्ह मनु पंष पाइ ॥
छं० ॥२३८७॥

धर धर धरद्दर परै भार । कट कट्ट षग्ग बज्जै करार ॥

(१) ए.-हंस हेस आयप्प हुअ । (२) मो. मनुं ।

तुट्टै विषग्ग उड्डै अकास । चमकंत तड़ित मनु मेघभास ॥
छं० ॥ २३८८ ॥

परसंत पूर श्रोनं प्रवाह । गहरंत कंठ सट्टी सुबाह ॥
आइयौ राय अस्सोक गज्जि । दो हथ्थ करारी संग सज्जि ॥
छं० ॥ २३८९ ॥

बेहथ्थ हयौ तोमर पहार । भिट्टयौ न अंग तुट्टौ सु सार ॥
संग्रह्यौ कंठ तोमर पहार । पच्चारि सीस उप्पर उभारि ॥
छं० ॥ २३९० ॥

करि षंड षंड नंष्यौ धराउ । बिन अंस उड्यो [1]जरनी निहाउ ॥
रिन मझ्झ पर्यौ अस्साक जानि । ओहथ्यौ पेंड पंचह परांनि ॥
छं० ॥ २३९१ ॥

कवित्त ॥ धरिय भार पाहार । पग दल बल ढंढोर्यौ ॥
[2]हय गय नर नर पतिय ताम । बंबर झंझोर्यौ ॥
छत्र पत्र मारुत महंत । अरि बांन उड़ाइय ॥
सार मार संभार चंद । जिम [3]मुष मुष सांइय ॥
आनंद केलि कलहंत किय । इय हिलोल दल दुम्भरिय ॥
तों अर चिबालमारह सुभर । सिरसुबर अभ्झर झरिय ॥
छं० ॥ २३९२॥

पहार राय तोमर और सहदेव का युद्ध । दोनों का मारा जाना ।

भुजंगी । तबै राइ सहदेव देवंग वीरं । धरे धाइयौ संग से हथ्थ धीरं ॥
हयौ राइ पहार सों कंठ मन्नी । परे फुट्टि उड्डी उकस्सी सु अन्नी॥
छं० ॥ २३९३ ॥

ग्रह्यौ सेल संगै सहदेवि तामं । [4]चल्यौ बथ्थ हथ्थे उड्यौ हंस धामं॥
ढरे दून कल्लं बरकूं अचेतं । दुनै सूर जुझ्झै उभै स्वामि हेतं ॥
छं० ॥ २३९४ ॥

(१) ए. कृ. को.-धरनी ।　(२) ए. कृ. को.-हय गय नर पेतिय पताप ।
(३) ए. कृ. को. सुष ।　(४) ए. कृ. को.-चप्यौ ।

परंतं पहारं उठी श्रोन धारं । उठे बीर मत्ते सु रत्ते करारं ॥
सहस्सं सु एकं सयं दून बीरं । करै असि उतंग सा गात धीरं ॥
छं० ॥ २३९५ ॥

पंग नेत बंधे किलक्कार उट्ठे । नच्चै आम बीरंत रत्ते सु रूट्ठे ॥
धरक्कै सु गोमं धरक्कै धरन्नी । भरक्कंत सेना सु भग्गै परन्नी ॥
छं० ॥ २३९६ ॥

ग्रहै गज्ज दंतं फिरक्कंत उड्डै । पियै श्रोन धारं गजं पात गुड्डैं ॥
भयो पंग सेनं सनेहंति कारं । फिरै जोगिनी सद्द मद्दी फिकारं ॥
छं० ॥ २३९७ ॥

भगी सेन रायं भरक्कै सु पंग । धरी एक बित्ती भरं बित्ति जंगं ॥
उडै बीर अस्सं सु आकास मंगै । पहुं राउ पाहार गौ मुत्ति संगै ॥
छं० ॥ २३९८ ॥

दूहा ॥ गरजै दल जैचंद गुर । धुर भग्गौढिल्लीस ॥
वासर जीजै वेढि थिय । चंद चंद रवि रीस ॥ छं० ॥ २३९९ ॥

जंघार भीम का आड़े आना ।

तब जंघारो भीम भर । स्वामि सु अग्गे आइ ॥
गहि असिवर उभझन उससि । कमध कमड्डा धाइ ॥ छं० ॥२४००॥

कवित्त ॥ रा कमधज्ज नरिंद । अड्ड पोहनिय तुरंगयि ॥
तिन मंहि अड्डमि जक्क । जौन नग मुत्ति सुरंगिय ॥
तिन छुट्टत हल बलत । साहि सामंत राज चढ़ि ॥
ते थल थक्कवि रहित । चहूआन सु राजन रढ़ि ॥
सिथि सिथिल गंग थल बल अबल । परसि प्रांन[1]मुक्किन रहिय ॥
जुरि जोग मग्ग सोरों समर चवत जुड्ड चंदह कहिय ॥
छं० ॥ २४०१ ॥

पंग सेना में से पंचाइन का अग्रसर होना ।

कुंडलिया ॥ सिलहदार पंचाइनौ । करि जुहार पग धार ॥
पंग समुद मझ्झहि परिय । वजि धुंम्मरि ग्रह पार ॥

(१) ए.कृ. को.-मुक्किय ।

वजि धुम्मिरि गह पार । सार जुथ परिय उदक मथ्यि ॥
ज्यों बड़वानल [1]लपट्ट । मथ्थि उट्ठंत नरं नथ्यि ॥
सार झार तन झरिग । सीस तुथ्यौ धरनी लहि ॥
जोगिनि पुर आवास। मिलन [2]हं हं हय सीलहि ॥ छं० ॥ २४०० ॥

जंघार भीम और पंचाइन का युद्ध ।

कवित्त ॥ दहन पंथ सो दुष्ट । देव दाहिन देवं फिरि ॥
घात वज्र निग्घत्ति । हक्कि षट्आन मझिझ परि ॥
सुबर बंध कमधज्ज । धाक बज्जे इक्के रव ॥
हष जुद्धं हर हरी । जुद्ध वज्जी जुझ्झस रव ॥
मिलि मार धार विषमह विमल । कमल सीस नच्चै कि जल ॥
सिव लोक सेत नन मीन धन । सुर मुर कंदल बत्त फल ॥
छं० ॥ २४०१ ॥

पृथ्वीराज का सोंरों तक पहुंचना ।

दूहा ॥ पुर सोरों गंगह उदक । जोग मग्ग तिथ वित्त ॥
अद्भुत रस असिवर भयौ । बंजन बरन कवित्त ॥
छं० ॥ २४०२ ॥

किस सामंत के युद्ध में पृथ्वीराज कितने कोस गए ।

कबित्त ॥ बेद कोस हरसिंघ । उभै चियत्त बड़ गुज्जर ॥
काम वान हर नयन । निडर निड्डुर भुमि [3]सुभ्भर ॥
छग्गान पट्ट पलानि । कन्ह षंचिय द्रग पालह ॥
अलह बाल द्वादसह । अचल विग्घा गनि कालह ॥
शृंगार बिंझ मलषह सुकथ। लषन पहारति पंचचय[4] ॥
इत्तने सूर सथ झुझझ तह । सोरों पुर प्रथिराज अय ॥
छं० ॥ २४०३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पलट ।　　(२) ए. कृ. को. हंत ।
(३) ए. कृ. को.-सुद्धर ।　　(४) मां.-सय ।

अपनी सीमा निकल जाने पर पंग का आगे न बढना और महादेव का दस हजार सेना लेकर आक्रमण करना।

पर्‍यौ पेषि पाहार। राज कमधज्ज कोप किय॥
पहु सोरों प्रथिराज। निकट दिष्ष्यौ सुचिंति हिय॥
गयौ राज जंगलिय। नाथ कनवज्ज मन्नि मन॥
जग्य जोंग बिग्गार। लहिय जै पुनि हरिय तिन॥
आइयौ राइ महदेव तब। नाय सीस बोल्यौ बयन॥
संग्रहौं राज प्रथिराज को। सह्रौं पहु जंगल सयन॥
छं० ॥ २४०४ ॥

इम कसि सुत सामंत। देव सजि चल्यौ सेन बर॥
लोल नाम पम्मार। प्रिथक परसंसि अप्प भर॥
जपि वाया जगनाथ। थान उच्चारिय धीरह॥
अनी बंधि दस सहस। अप्प सज्जै पर पीरह॥
ठननंकि घंट भेरिय सबद। पूरि निसान दिसांन सुर॥
महदेव चल्यौ प्रथिराज पर। मिलिय जुद्ध मनु देव दुर॥
छं० ॥ २४०५ ॥

महादेवराव और कचराराय का द्वंद युद्ध। दोनों का मारा जाना।

पद्धरी॥ आवंत देषि महदेव सेंन। उप्पारि सीस भर सज्जि गंन॥
मातुलह सयन संयोगि बंध। बर लहन धीर भर जुद्ध नंध॥
छं० ॥ २४०६ ॥

कचराराय चालुक्क धीर। आवंत देषि दल गज्जि बीर॥
सिरनाइ राज प्रथिराज ताम। बल कलिय बदन उरकंक काम॥
छं० ॥ २४०७ ॥

इक वार पहिल लग्गो सु घाय। जित्तए सुभर तिन पंग राइ॥
संजोगि नेंग दिय कंठ माल। पहिराइ कंठ बज्जी भुआल॥
छं० ॥ २४०८ ॥

गज्जियो भीम जिम सुमन भीम । पेषेव जूह मनुहरि करीम ॥
कस्सियो तंग बज्जी सु नेत । संकलपि सीस प्रथिराज हेत ॥
छं० ॥ २४०९ ॥

आयौ समुष्ष रिम्मह समथ्थ । चिभाग संग किय सीघ्र हथ्थ ॥
उच्चरिय मंच भैरव कराल । उच्चरिय ध्यान चिपुराइ बाल ॥
छं० ॥ २४१० ॥

किल किलिय किन्न भैरवह जाम । हुंकार देवि दीनो सु ताम ॥
परदल पयठ्ठ उप्पारि बग्ग । षुल्लिय कपाट भर स्वर्ग मग्ग ॥
छं० ॥ २४११ ॥

बाहंत षग्ग भर सीघ्र हथ्थ । कुर सेन मद्धि मनु मिलिय पथ्थ ॥
बाहंत षग्ग आयुध अपार । धर धार धरनि मधि भरनि भार ॥
छं० ॥ २४१२ ॥

किलकार बीर चालुक्क सथ्थ । नाचंत भूत भैरव सु तथ्थ ॥
मुष मुष्ष लग्गि चालुक्क [1]धाय । बिबि पंड धरै धर तुट्टि धाय ॥
छं० ॥ २४१३ ॥

कौतिग्ग रास देषंत देव । नारद बिनोद नंचीय एव ॥
बर बरै इच्छ अच्छरिय ताम । पलचर पल पूरै रुहिर काम ॥
छं० ॥ २४१४ ॥

रस रुद्र भयौ भर जुद्ध बीर । पूजंत सब्ब चालुक्क धीर ॥
चालुक्क तेक रस रमै [2] रास । चमकंत षग्ग कर बिज्जु भास ॥
छं० ॥ २४१५ ॥

महदेव सेन हल हलत देषि । ग्रह राह जेम दल ग्रसत [3]पेषि ॥
घन पूरि घाव चालुक्क अंग । बर तत्त सुमत्तन वधिय रंग ॥
छं० ॥ २४१६ ॥

धाइयौ ताम महदेव तम्म । चालुक्क इयौ संगौ उरम्म ॥
दुअ लग्गि बीर मिलि विषम घाव । आवद्ध तुट्टि दुअ बीर ताव ॥
छं० ॥ २४१७ ॥

---

(१) मो.-थाइ । (२) मो. राहु । (३) मो.- देषि ।

लग्गे सु बध्ध समवय सरूप। दुअ अठ्ठ बरष दुअ भ्रम्म भूप॥
लग्गे सु कंठ असि उठ्ठि ताम। दुअ झुज्झि भूप दुअ सामि काम॥
छं०॥२४१८॥

दुअ चले मुक्ति मारग्ग सग्ग। विम्मान जानि विचि विचित्र लग्ग॥
अच्छरिय उंच रंधैं सु नेव। जय जय चवंत नंषि कुसुम देव॥
छं०॥२४१९॥

भेदे सु उरध मंडलह दून। बर मुक्ति गत्ति प्रम्मं सु ऊन॥
[1]दुअ ढरे गंग मह जल प्रवाह। उप्रमे ताम गुन बंध थाह॥
छं०॥२४२०॥

लीलराय प्रमार और उदय सिंह का परस्पर घोर युद्ध करना और दोनों का मारा जाना।

कवित्त॥ लीलराइ पम्मार। राइ महदेव सु सेवं॥
महस तीन थट सुभट। आय उप्पर बर केवं॥
मार मार उच्चार। सार गज्जे मुष सारह॥
तेन मुष्ष जगदेव। धार बज्जिय पति धारह॥
धर व्योम सीस सजि सामि भ्रम। झर उझार दुझझरति झर॥
मानों कि बघघ गड्डुर विचह। झपट लपट लेयंत झर॥
छं०॥२४२१॥

बेली भुजंग॥ भुरं झार झट्टं बजे घट्ट घट्टं। लगे पंग भट्टं अगी झल्ल पट्टं॥
भगे थट्ट जानं दहं बट्ट मानं। परे गज्ज बानं भरं थान थानं॥
छं०॥२४२२॥

तबै लील देवं अयौ देव मुष्षं। दुऔ बीर बाहं दुऔ सामि रुष्षं॥
उदै दीन पुत्तं उदैसिंघ देवं। इतै राव बंभं उत देव सेवं॥
छं०॥२४२३॥

दुअं गात उच्चं सिरं उंच धारे। मनो सेन कोटं मझारं मुनारे॥
करं नंषि [2]भ्रंमं षगं दाय हथ्थं। उझारै सु मध्धं दुअं टोप [3]कथ्थं॥
छं०॥२४२४॥

(१) ए. कृ. को.-दुअठंर गंमा मझी। (२) मो.-भ्रमं, को.-चर्म। (३) मो.-कटूटं।

फटै उत्तमंगं टहंनं सुरंगं । गिरं जानि चल्लं रतं धार गंगं॥
घरी एक धारं अपारंति बग्गै । षगं सार तुट्टै जमंदड्ढ लग्गै ॥
छं० ॥ २४२५ ॥
हये ऊर ऊरं उनंके उनाही । ढरे दोइ कलेवरं गंग माहीं ॥
सिरं सुम्मनं देव ब्रष्षा विराजै । पछै सूर धारं बरं रंभ [1]छाजै ॥
छं० ॥ २४२६ ॥
तिनं सीस देवी दियौ सामि काजै। बरं तास कित्ती जगम्मै विराजै॥
जमं ठौर ठेलै गयौ ब्रह्म थानं। जिनै जित्तयौ लोक परलोक मानं॥
छं० ॥ २४२७ ॥

कचराराय के मारे जाने पर पंग दल का कोप करके धावा करना ।

कवित्त ॥ गरजे दल जै चंद । सीस पहु देन नरेसर ॥
समर सूर सामंत । सु पुनि झुझझे नर सुब्बर ॥
पन्यौ भार पम्मार । अंग एकै आचग्गर ॥
वासुर तीजै वेढि । कलह बेथक्कि बाहि करि ॥
जगि देवन दानव देव जगि । पार सार उरवार पनि ॥
थंभयौ कटक षाहनि बिकट । [2]देव सु एवं बहियनि ॥छं०॥२४२८॥
दूहा ॥ कौन सहस मे तीन सय । सूर धीर संग्राम ॥
बधि पम्मारह बीर बर । दम गै अस्सव ताम ॥ छं० ॥ २४२९ ॥
कवित्त ॥ दुहुं पष्षां गंभीर । दुहुं पष्षां छच पत्त ॥
दुहु पष्षै राजान । दुहुं पष्षै रावत्त ॥
दुहु वाहां दुज्जरह । मात मातुल सुप लष्षै ॥
कंठमाल सुभ कंठ । नाग [3]साजों गह रष्षै ॥
संकठह स्वामि बंकट विकट । चिघट रुक्कि कमधज्ज दल ॥
अदित वार दसमिय दिवस । गरुअ गंग भ्रंमुंग जल ॥
छं० ॥ २४३० ॥

---

(१) मो.-साजै । (२) ए. कृ. को.- देव सुए पग जंद्धय ।
(३) ए. कृ. को. नाग सों जोग सुरष्षै

कचराराय का स्वर्गवास ।

संगराय भानेंज । राय कचरा अरि कच्चर ॥
गरुअ ध्रंम स्वामित्त । सार संमुह रन अच्चर ॥
पट्टन सिर अरु पट्ट । गंग घट्टह [1]घन नष्यौ ॥
जै जै जै जपि सद्द । नद्द त्रिभुअनपति भष्यौ ॥
पष्परत पत्तिय बज्जिय बिहर । उग्रराय रट्ठौर धर ॥
चालुक चलंत सुभ स्वरगमन । ब्रह्म अरघ दीनौ सु धर ॥
छं० ॥ २४३१ ॥

कचराराय का पराक्रम ।

दूहा ॥ परें पंच सें पंग भर । परि चालुक्क सु तप्प ॥
बिलष बदन प्रथिराज भय । बंछिय मरन सु अप्प ॥छं०॥२४३२॥
निसि नौमिय वित्तिय लरत । दसमिय पहु रिति च्यार ॥
पंगपहुमि प्रथिराज भिरि । अथ्थिग आदित वार ॥ छं०॥२४३३॥

सब सामंतों के मरने पर पृथ्वीराज का स्वयं कमान खींचना ।

कवित्त ॥ घरिय सत्त आदित्त । देव दसमिय दिन रोहिनि ॥
रुक्यौ तथ्थ प्रथिराज । पंग सथ्थह अध षोहनि ॥
पंच अग्ग च्यालीस । सत्त सामंत सु रत्तिय ॥
पंच अग्ग पंचास । मझि सथ्थह सेवक तिय ॥
वामंग तुरंगम राज तजि । तोन सज्जि सिंगिनि सु कर ॥
बंद्देव चंद संदेह नह । जीवराज अचरिज्ज नर ॥छं०॥२४३४ ॥

जैचंद का बराबर बढ़ते आना और जंघारे भीम का मोरचा रोकना ।

दूहा ॥ [2]गंग पुट्ठि अग्गै विहर । ब्रत बंकौ जल किंदु ॥
उठ्यौ छत्र न्रप पंग पर । मनु हेमं दंड पर इंदु ॥छं०॥२४३५ ॥
गरजे दल जैचंद गुर । धुर भग्गे दिल्लेस ॥

---

(१) ए. कृ. को.-घट । (२) मो.-मंग ।

बासुर तीज बैठितं । चंद चंद रवि रेस ॥ छं० ॥ २४३६ ॥
तब जंघारो भीम भर । स्वामि सु अग्गै आय ॥
गहि असिवर ओड़न उकसि । [1]कमध कमङ्का धाय॥छं०॥२४३७॥

कवित्त ॥ जंघारौ रा भीम । स्वामि अग्गै भयौ ओड़न ॥
दुहुं बाहां सामंत । दुहूं द्वादस दस को दन ॥
पच्छ सथ्थ संजोगि । कलह कंतिय कोतूहल ॥
महन रंभ मोहनिय । सुरां अमृत तहूलह ॥
दुहुं राय जुद्ध दुंदज भयौ । चाह,आन रट्टौर भर ॥
धरि च्यारि श्रोन असिवर झल्यौ । मनहु धुम्म अग्गा सु झर ॥
छं० ॥ २४३८ ॥

जंघारे भीम का तलवार और कटार लेकर युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ झरं झार झारंति झारंति झारं । ढरं ढार ढारंति ढारंति ढारं॥
तुटै कंध कामंध संधं उसंधं । बहै संगि षग्गं रतं रंभ रंभं ॥
छं० ॥ २४३९ ॥

चवं सूर सेलं सरं सार सारं । लगै कोन अंगं विभंगं विहारं॥
चलै श्रोन सारं [2]विरंतं सुधारं । मनौं वारि रुद्धं अनंतं प्रनारं॥
छं० ॥ २४४० ॥

बजै घट्ट घट्टं सबद्दं सबद्दं । नको हारि मन्नै नको भेटि हद्दं ॥
तुटै षग्ग लग्गै गहे हथ्थ बथ्थं । मनौं मल्ल जूझंत वेजानि वथ्थं॥
छं० ॥ २४४१ ॥

बढी श्रोन धारा रनं पूर पूरं । चढ़ी सक्ति ऊभी कमद्धंति सूरं ॥
जयंतं जयंतं चवंसट्ठि सद्दं । असी तार झारं नचे नेम नद्दं ॥
छं०॥ २४४२ ॥

बजै जंगलीसं विडारं विडारं । करं धारि झारं सकत्ती करारं ॥
करी फुट्टि सन्नाह प्रगटंत अच्छी । मुषं भीमरा कंध काढंत मच्छी॥
छं० ॥ २४४३ ॥

(१) मो.-कमधज कमधां धाय । (२) ए. कृ. को.-चिरत ।

धरे बारडं सिंह आघाय घायं । [1]बरं बार सुष्षं अगंमन्न धायं ॥
जिते सेन बिग्घा कटे षग्ग हक्कं । परे कातरं सं भयानंक टक्कं ॥
छं० ॥ २४४४ ॥

लषं चंपियं सीस बहुआन धायं । गनो सिंघ क्रम्यौ मदं दंति पायं ॥
लघं लाघ बंकौ न बाहंत बंकं । मनों चक्र भेदंत सीसं निसंकं ॥
छं० ॥ २४४५ ॥

कटे टट्टरं टूव सन्नाह वट्टं । बहै षग्ग झट्टं मनो बीज छट्टं ॥
मधे श्रोन फेफं सु डिंभं फरक्कं । मनो मभ्झ नाराज छुट्टंत झक्कं ॥
छं० ॥ २४४६ ॥

त्रिपं पोषि धारा धरै धाय धायं । उठै दंग बग्गं मनों लष्षरायं ॥
चवै पंग आनं गहन्नं गहन्नं । जगन्माल क्रम्यौ सुन्यौ मीस धुन्नं ॥
छं० ॥ २४४७ ॥

[2]करन्नाटिया राय रुद्दंतिरायं । रवै वाम दच्छिन्न राजंग सायं ॥
बहै बिंझ मालं करीवार सथ्थं । दुअं लग्गि झाकं मनो कोपि पथ्थं ॥
छं० ॥ २४४८ ॥

कलेवार गड्डें परे छेदि बंभं । मनों भ्रंग पंछी सु उड्डंत संभं ॥
[3]नरं हक्क बज्जी सु रज्जी सकत्ती । रची पुष्प विष्टं पहं देवि पत्ती ॥
छं० ॥ २४४९ ॥

असी झाक बज्जंत रज्जंत सूरं । भयं चक्क जुड्डं भयं देव दूरं ॥
दलं दून धारों ढरै षंड षंडं । बरं संग्रहै ईस सीसंति रुंडं ॥
छं० ॥ २४५० ॥

थनं थोर सू राग सूरं बरंती । रचे माल कंठं कुसम्मं हरंती ॥
सजै सेन [4]आवन्न बन्नं विमानं । वरं रोहि तथ्थं क्रमं अप्पथानं ॥
छं० ॥ २४५१ ॥

जयं सद्द बद्दं पलं श्रोन चारं । थक्यौ सूर नारद्द नच्यौ विहारं ॥
घनं घाइ अघघाइ सामंत सूरं । धरे मंडलं सब्ब सामुच्छि जूरं ॥
छं० ॥ २४५२ ॥

---

(२) ए. कृ. को.-मार । (१) मो.-करैं लाटिया (३) ए. कृ. को. भरं, झरं ।
(४) ए. कृ. को.-कावन्न ।

दह पंच पंग परे सूर सारं। भर राज सामंत इथ्थें हजारं॥
भयं अद्भुतं रसं बीर बीरं। घटी दून जुद्धं बिहानं बिहारं॥
छं० ॥ २४५२ ॥

तब जंघारौ जोगी जुगिंद। कत्ती कट्टारौ॥
असि विभूति घसि अंग। पवन अरि भूषन हारौ॥
सेन पंग मन मथन। [1]ब्रम्म षग गयँद प्रहानं॥
[2]पलति मुंड उरहार। सिंगि सद बद्दन ब्रिषानं॥
आसन सु दिट्ठ पग दिट्ठ बर। सिरह चंद अंम्रत अमर॥
मंडली राम रावन भिरत। नभौ बीर इत्तौ समर॥छं०॥२४५३॥

जंघारे भीम का मारा जाना।

घरिय च्यार रवि रत्त। पंग दल बल आहुट्यौ॥
तब जंघारौ भीम। ध्रंम स्वामित तन तुट्यौ॥
सगर गौर सिर मौर। रेह रष्षिय अजमेरिय॥
उड़त हंस आकास। दिट्ठ घन अच्छरि घेरिय॥
जंघार सूर अवधूत मन। असि विभूति अंगह घसिय॥
पुच्छयो सु जान त्रिभुवन सकल। को सु लोक लोकैं वसिय॥
छं० ॥ २४५४ ॥

पंगदल की समुद्र से उपमा वर्णन।

भय समुंद जैचंद। उतरि जै जै क्यौं पारह॥
अद्भुत दल असमान। अब्ब बुड्डहि करिवारह॥
तहां बोहिथ हर ब्रह्म। भार सब सिर पर पधर्यौ॥
उड्डरि उह्न कुमार। धनि जु जननी जिहि जनयौ॥
नन करहि अवर करिहै नको। गौर बंस अस बुझझयौ॥
सो साहिब सेन निबाहि करि। तब अप्पन फिरि झुज्झयौ॥
छं० ॥ २४५५ ॥

बर छंड्यौ दुहु राय। बरुन छंड्यौ बर बारर॥
सिर थक्यौ सहि. सार। बरुन थक्यौ गहि सारर॥

(१) मो.-ब्रह्म। (२) ए. कृ. को. लपत। (३) ए.-सिरमार।

रव थक्यौ रव रवन। रवन थक्यौ मुष मारह ॥
धर थक्यौ धरं परत। मनुन थक्यौ उच्चारह ॥
पायौ न पार पौरुष पिसुन। स्वामिनि सह अच्छरि अप्पो ॥
जिम जिम सु सिंह सम्मीर सिव। तिम तिम सिव सिव सिव तप्पो॥
छं० ॥ २४५६ ॥

पृथ्वीराज का शर संधान कर जैचन्द का छत्र उड़ा देना।

एक अंग तिय सकल। [1]विकल उच्चरिय राज मुष ॥
भ्रकुटि अंक बंकुरिय। अंसु तिहि लिषिय मझि रुष ॥
बिय विमान उप्पारि। देव डुल्लिय मिलि चल्लिय ॥
भ्रम भ्रमंकि आयास। पत्ति अच्छरि [2]अलि मिल्लिय ॥
एक चवै कवि कमल असि। मुकति भ्रंक करि करिय न्रप ॥
तन राज काज जाजह भिरिग। सु मति सोह भइ देव वपि ॥
छं० ॥ २४५७ ॥

चार घड़ी दिन रहे दोनों तरफ शान्ति होना।

घरिय च्यारि दिन रह्यौ। घरिय दुअ वित्तक वित्तौ ॥
नको जीय भय मुक्यौ। नको हार्यौ न को जित्तौ ॥
पंच सहस सें पंच। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
[3]लिषे अंक बिन कंक। न को भज्झयो बिन [4]षुट्टिय ॥
दो घरिय मोह मारुत बज्यौ। करन अंभ बरष्यो निमिष ॥
[5]तिरिगत्त राज तामस बुझ्यौ। दिपिय पंग संजोगि मुष ॥
छं० ॥ २४५८ ॥

जैचन्द का मंत्रियों का मत मान कर शान्त हो जाना।

[6]मुरझानौ जैचंद चरन। चंप्यो द्रुम बर तर।
उतरि सेन सब पर्यौ। राव कह्यौ हरवं कर ॥
लेहु लेहु न्रप करय। चवन चहुआन बुलायौ ॥

(१) ए.-विकल। (२) मो.-अरि मोल्लय।
(३) ए. कृ. को.-षिले। (४) मो.-कुट्टिय। ए.-नको जित्यौ न विषुट्टिय।
(५) ए. कृ. को.-तिहि लगना। (६) ए. कृ. को.-मुरझानों।

सूर वीर मंत्री प्रधान। मिलि कै समुझायौ ॥
उत परे सथ्थ इत को गनै। असुगुन भय राजन गिस्यौ ॥
घर हुंत पलान्यौ अमत करि। सीस धुनत नर वै फिर्यौ ॥
छं० ॥ २४५९ ॥

दूहा ॥ नयन नंषि करि [1]कनक नह। प्रेम समुद्दह बाल ॥
प्रथम सु पिय ओड़न उरह। मनु भुलवति मुद्ध मराल ॥
छं० ॥ २४६० ॥

जैचन्द का पश्चात्ताप करते हुए कन्नौज को लौट जाना।

कुंडलिया ॥ दिष्षि पंग संजोगि मुष। दुष किन्नौ दल सोग ॥
जग्य जर्यौ राजन सघन। अवरन हुति संजोग ॥
अवरन अहुति संजोगि। किति अग्गी जल लग्गी ॥
ज्यों पल पट आदर्यो। लीय पुचिय छल मग्गी ॥
मुष जीवन अरु लाज। मनहि संकलपि सिलष्षौ ॥
[2]निबल एम संकलै। आस लग्गी मय दिष्षौ ॥ छं० ॥ २४६१ ॥

दूहा ॥ इह कहि परदच्छिन फिरिग। नमसकार सब कीन ॥
दान प्रतिष्ठा तू अबर। मै दिल्ली पुर दीन ॥ २४६२ ॥
चढि चहुआन दिल्ली रुषह। उड़ी दुहुं दल षेह ॥
छंडि आस चहुआन पहु। गयौ पंग फिरि ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६३ ॥

जैचन्द का शोक और दुःख से व्याकुल होना और मंत्रियों को उसे समझाना।

कवित्त ॥ चौ अग्गानी सट्ठि। भ्रुकि प्रापीय मुगति रस ॥
छिति छत्री षिति छित्ति। व्रत्त आवर्रति सूर वस ॥
चौ अग्गानी पंच। राज षावास परिग्गह।
अनी पंच मिलि बीर। पंग जंपियत गहग्गह ॥

---

(१) मो.-कनवज्ज रह।　　(२) ए. कृ. को.-निबल।

संमूह जुद्ध भारथ्थ मिलि। पंचतत्त मंचह [1]सरिस ॥
तन छोह छेह एकादसी। चंद बत्त बर [2]तच्चरिसु ॥
छं० ॥ २४६४ ॥

फिर्‌यौ राज कमधज्ज। मुक्कि जीवत चहुआनह ॥
जानि सँजोगि समंध। मग्ग कनवज्ज सु प्रानह ॥
फिरे संग राजान। मानि मत्तौ बर बीरह ॥
मनों पल छंडे सिंह। कोप उर केर सु धीरह ॥
निज चलत मग्ग जैचंद पहु। परे सुभर रिन अप्प पर ॥
किय प्रथुक बन्ह कारन न्रिपति। दीय दाघ जल गंग थर ॥
छं० ॥ २४६५ ॥

समझायौ तिन राइ। पाय लगि बात कहिय जब ॥
जिके सूर सामंत। करौ गौनह न कोइ अब ॥
फिर्‌यौ न्रपति पहुपंग। सयन हुअ तह घर आयौ ॥
रय ढिल्ली सुरतान। जान आवतह न पायौ ॥
आयौ सु सयन चहुआन कौ। ग्राम ग्राम मंडप छयौ ॥
आयौ नरिंद प्रथिराज जिति। भुअन तीन आनंद भयौ ॥
छं० ॥ २४६६ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली में आना और प्रजा वर्ग का बधाई देना।

दूहा ॥ चली षबर दिल्ली नयर। एकादसि दिन छेह ॥
के रवि मंडल संचरिग। के मिलि मंगल ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६७॥

कुंडलिया ॥ बद्धाइय दिल्लिय नयर। अवर सेन जुध मग्ग ॥
घाय घुमत झोरिन घले। श्रवन सुनंतह अग्गि ॥
श्रवन सुनंतह अग्गि। उठी कंचन गिरि अच्छी ॥
कै बड़वानल लपट। निकरि लालन धत गच्छौ ॥
कै नाग लोक सुंदरी। सुनि न भारथ कथ्थाई ॥
कै मिलन पीय अंतरह। मिलन आवंग बधाई ॥ छं० ॥२४६८॥

(१) ए. कृ. को.-सरिग। (२) ए. कृ. को. उच्चरिय।

जैचन्द का पृथ्वीराज के घायलों को उठवा कर तैंतीस डोलियों में दिल्ली पहुँचाना ।

पद्धरी ॥ परि सकल सूर अघघाइ घाइ । उच्चाइ चंद न्रपराइ थाइ ॥
धरि लियौ बीर चालुक्क भीम । बग्गरी देव अरि चंपि सीम ॥
छं० ॥ २४६९ ॥

पम्मार जैत षीची प्रसंग । भारथ्थ राव भारा अभंग ॥
जामानि राव पाहार पुंज । लोहान पान आजान हुंज ॥
छं० ॥ २४७० ॥

गुज्जरह राव रंघरिय राव । परिहार मह्न नाहर सु जाव ॥
जंगलह राव दहिया दुबाह । बंकटह सु पह बधनौर याह ॥
छं० ॥ २४७१ ॥

जद्दवह जाज रावत्त राज ।बर बलिय भद्र भर स्वामि काज ॥
देवरह देव कन्हरहराव । ढंढरिय टाक चाटा दुभाव ॥
छं० ॥ २४७२ ॥

औहठी स पहुपह कर प्रहास । कमधज्ज राज आरज्ज तास ॥
देवतिय हरिय बलिदेव सथ्थ । परिहार पीय संग्राम पथ्थ ॥
छं० ॥ २४७३ ॥

अघघाय घाय वर सिंह बीर । हाहुलिय राव हंसह हमीर ॥
चहुआन जाम पंचान मार । लष्षन उचाय पहु पत्ति धार ॥
छं० ॥ २४७४ ॥

भट्टी चलेस गोहिल्ल चाच । सम विजय राज वघेल साच ॥
गुज्जरह चंद्र सेनह सु बीर । ते जल्ल डोड पामार धीर ॥
छं० ॥ २४७५॥

सोढह सलथ्थ उच सच साल । संग्राम सिंह कढ्ढिय दुजार ॥
परिहार दत्त तारन तरन्न । कमधज्ज काल रय सिंघ कन्न ॥
छं० २४७६ ॥

सेंगरह साइ भोलन्न तास । साइरहदेव मुष मल्ह नास ॥

अघघाय घाय धर धरह ढाइ। लष्षीन मीच जिय कंक साइ॥
छं० ॥ २४७७ ॥

डोलिय सु मझि संजोग सार। पट कुटिय मझि मनु बसिय मार॥
उप्पारि सेव वरदाइ ईस। डोलिय सु सज्जि बर तेर तीस॥
छं० ॥ २४७८ ॥

संक्रम्यौ सेन दिल्ली सु मग्ग। बंधाय धाय चिय पुरनि अग्ग॥
छं० ॥ २४७९ ॥

दूहा ॥ सघन घाय सामंत रिन। उप्पारिग कबि ईस॥
मध्य अमोलिक सुंदरिय। डोला तेरह तीस॥ छं० ॥२४८०॥
[1]हमकि हसम हय गय परिग। बाहिर जुग्गिनि नैर॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग। बाल हद्ध जु अबेर॥ छं०॥२४८१॥
इक घर सिंधु असंचरिग। इक घर [2]पन्नर मार॥
तेरसि अंबक बज्जि बहु। राज घरह गुर वार॥छं०॥२४८२॥

जैचन्द का बहुत सा दहेज देकर अपने पुरोहित को दिल्ली भेजना।

पुर कनवज्ज कमंध गय। अरि उर गंट्टिय अथ्थ॥
कहै चंद प्रोहित्त प्रति। तुम दिल्लिय पुर जथ्थ॥२४८३॥
विधि बिचिच संजोगि कौ। करहु देव विधि व्याह॥
हसम हयग्गय सब्ब विधि। जाय समप्पौ ताह॥२४८४॥
नग अनेक विधि बिधि विचिच। और गनै कोइ गेउ॥
विजै करत विजपाल [3]निज। लिय सु वस्तु दिव देउ॥
छं० ॥ २४८५ ॥

पंगराज के पुरोहित का दिल्ली आना और पृथ्वीराज की ओर से उसे सादर डेरा दिया जाना।

मुरिल्ल ॥ पुर ढिल्ली आयौ प्रोहित्तह। मंन्यौ मन चह आन सुहित्तह॥
दिय थानक आसन उत्तिम ग्रह। बर प्रजंक भोजन भल भष्षह॥
छं० २४८६ ॥

(१) मो.-हलाकि। (२) ए. कृ. को.-बंदन। (३) ए. कृ. को.-नृप।

दिल्लिय पति दिल्लिय संपत्तौ। फिरि पहुपंग राइ ग्रह जत्तौ ॥
जिम राजन संजोगि सु रत्तौ। सुह दुह करन चंद महि मत्तौ॥
छं० ॥ २४८७ ॥

दिल्ली में संयोगिता के व्याह की तैयारियां।

कवित्त ॥ कनक कलस सिर धरहि। चवहिं मंगल अनेक त्रिय ॥
पाँटबर बहु द्रव्य। सज्जि सब सगुन राज लिय ॥
ढरहि चौर गज गाह। इक्क आरती उतारहि ॥
इक्क छोरि करि केस। रेन चरनन को झारहि ॥
इम जंपहि चंद बरद्दिया। मुकताहल पुज्जंत भुत्र ॥
घर आइ जित्ति दिल्लिय न्रपति। सकल लोक आनंद हुआ ॥
छं० ॥ २४८८ ॥

दोनों ओर के प्रोहितों का शाकोच्चार करना।

एक अग्ग तिय सकल। विकल उच्चरिन राजमुष ॥
भ्रिगुटि अग्र बंकुरि प्रमान। तहाँ लषित सझझ रुष ॥
बीय विवान उच्चरिय। देवि डुल्लिय मिलि चल्लिय ॥
अभ्रम भ्रम किय आइ। सपत अच्छरी सु मिल्लिय ॥
संजोग जोग रचि व्याह मन। गुरु जन सुत अरु निगम घन ॥
प्रोहित्त पंग अरु ब्रह्म रिषि। ग्रसत सुष्य बर दुष्य सन ॥
छं ॥ २४८९ ॥

विवाह समय के तिथि नक्षत्रादि का वर्णन।

महा नछित्र रोहिनी। मेष भुग्गवै अरक बर ॥
भद्र यह परवासु। तिथ्य तेरसि सु दीह गुर ॥
इंद्र नाम वर जोग। राज अष्टमि रवि सिज्जौ॥
चंद चंद सातमो। बुद्ध सत्तम गुर तिज्जौ ॥
गुर राह सन्नि सुरकेत नव। न्रप वर बर मंगल जनम ॥
तहिनह मुक्ति चहुआन कों। [1]छुट्टि पंग पारस घनम॥छं० ॥२४९०॥

(१) ए. कृ. को. घट्टि।

पंग और पृथ्वीराज दोनों की सुकीर्ति।

पंग राइ उग्रह्यौ। दान है गै भर नर लिय॥
धाराहर वर तिथ्य। जपह चहुआन बीर किय॥
एक गुनै तिहि वेर। दिये पाइल लष गुन्निय॥
चौसट्टां कै सट्ट। लच्छि संजोगि सु दिन्निय॥
ज्यौं भयौ सोइ भारथ्थ गति। सोइ बित्यौ बित्तक जुरि॥
द्वादसवि पंच सूरहति मुक्कि। आरन्निय पहु पंग फिरि॥
छं०॥ २४९१॥

दूहा॥ दिव मंडन तारक सकल। सर मंडन कमलान॥
रन मंडन नर भर सु भर। महि मंडन महिलान॥ छं०॥२४९२॥
महिलन मंडन न्त्रिपति ग्रह। कनक कंति ललनानि॥
ता उप्पर संजोगि नग। धरि राजन बलवान॥ छं०॥ २४९३॥
राजन तन सइ प्रिय बदन। काम गनंतिन भोग
सरै न पल लेतें पलनि। न्त्रपति नयन संजोग॥ छं०॥ २४९४॥

पृथ्वीराज का मृत सामंत पुत्रों को अभिषेक करना और जागीरें देना।

पद्धरी॥ वैसाष मास पंचमिय सूर। उपरात पष्य पुष्यह समूर॥
संतिय सु छित्ति प्रथिराज राज। किन्नौ सनान महुरत्त आज॥
छं०॥ २४९५॥
मंगल अनेक किन्नौ अचार। बाजे बिचित्र बज्जत अपार॥
विधि सु विप्र पुज्जे सु मंत। दिय दान भूरि अन्नेक जंत॥
छं०॥ २४९६॥
गुन गंठि कब्बि आये सु चंड। दिय अनंत द्रव्य बीजौउ षंड॥
अच्छाय कीय सब नयर मंत। शृंगारि सहर वाने अनंत॥
छं०॥ २४९७॥
बह्याम आय सब देस थान। सनमान सीम पति आय जान॥
बर महल ताम प्रथिराज दीन। सामंत सब्ब तं न्हान कीन॥
छं०॥ २४९८॥

सामंत सब्ब बोले सु आय। आदरह सब्ब दीनौ सु राय॥
कमधज्ज वीर चंद्रह सुबोलि। निड्डुरह सुतन सुभ तेज तोलि॥
छं०॥ २४९९॥

दीनौ सु तिलक प्रथिराज हथ्थ। बड्डारि ग्राम दिय बीस तथ्थ॥
हय पांच गज्ज दीनौ सु एक। थप्पौ सु ठाम समपित्त तेक॥
छं०॥ २५००॥

ईसरह दास कन्हह स पुत्त। चहुआन क्रम्म बड़ करन जुत्त॥
दह पंच ग्राम दीने बधाय। हय अट्ठ गज्ज इक दीन ताय॥
छं०॥ २५०१॥

बोलाय धीर पुंडीर ताम। सनमानि पित्त दीने सु ग्राम॥
जिन जिन सु पित्त रिन परे षेत। तेय तेय थप्पि सामंत हेत॥
छं०॥ २५०२॥

सामंत सिंह गहिलौत बोलि। गोयंद राज सुअ गरुअ तोलि॥
द्वादस्स ग्राम दीने बधाय। हय पंच दीन पितु ठाम ठाय॥
छं०॥ २५०३॥

सामंत अवर उब्बरे जेह। दिय दून दून ग्रामह सु तेह॥
सनमानि सब्ब सामंत सूर। दिय अनत दान द्रब्यान पूर॥
छं०॥ २५०४॥

आदरह राज गौ उट्ठि ताम। संजोगि प्रीति कारन्न काम॥
* * * ॐ * ॥ * छं०॥२५०५॥

व्याह होकर दंपति का अंदर महल में जाना और पृथाकुमारी का अपने नेग करना॥

दूहा॥ गौ अंदर प्रथिराज जब। भंडि महूरत ब्याह॥
आय प्रिया कहि बंध सम। करहु सु मंगल राह॥ छं०॥२५०६॥

भुजंगी॥ रच्यौ मंगलं मास बैसाष राजं। तिथी पंचमी सूर सा पुष्य साजं॥
असित्तं सपुष्यं सुभ्रयौ जोग इंदं। कला पूरनं जोग सा छत्र विंदं॥
छं०॥ २५०७॥

लगन्न सु गोधन्न सा अष्ष केयं। पर्यौ सत्त मै पंच थानं रवेयं ॥
पर्यौ नग्ग थानं कला षिट्ठ चंदं। तनं ताम सज्यौ निजं उच्च मंदं॥
छं० ॥ २५०८ ॥

तबै आय प्रोहित्त श्रीकंठ नामं। दई आन सो वस्तु अनेक नामं॥
रच्यो तोरनं रंन मै उच्च थानं। लहै मोल अनेक नालभ्यमानं॥
छं० ॥ २५०९ ॥

गजं गज्ज अट्ठोतरं सौ सिंगारे। तिनं गात उत्तंग ऐराव तारे ॥
सहस्सं स पंच हयं तुंगगातं। तिनं नग्ग सा कत्ति साहेम जातं॥
छं० ॥ २५१० ॥

घटं जात रूपं जरे नग्ग उच्चे। गनै कौन मानं तिनं जानि रुच्चे॥
जरे जंबु नद्दं बरं भाज नेयं। गनै कौन प्रामन्न सा संष तेयं ॥
छं० ॥ २५११ ॥

जरे पट्ट पट्टं अनेकं प्रकारं। अभूत अनेक सा वस्तु भारं ॥
प्रिहं तिथ्य अनेक जे पंग राजं। सबै पट्टई सोइ संजोग साजं॥
छं० ॥ २५१२ ॥

करे साजि संजोगि निड्डुरं सु ग्रेहं। मुषं जोति इंदं कला पूरि तेहं॥
* * * ॥ * छं० ॥ २५१३ ॥

विवाह के समय संयोगिता का शृंगार और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज ॥ प्रथम्म केलि मज्जनं। बने निरत्त रंजनं ॥
सु स्निग्ध केस पायसं। सु बंधि बेन बासयं ॥ छं० ॥ २५१४ ॥
कुसम्म गुंथि आदियं। सु सीस फूल सादियं ॥
तिलक्क द्रप्पनं करी। श्रवन्न मंडनं धरी ॥ छं० ॥ २५१५ ॥
सु रेष कज्जलं दुनं। धनुष्ष सा गुनं मनं ॥
सु नासिका न मुत्तियं। तमोर मुष्ष दुत्तियं ॥ छं० ॥ २५१६॥
सुहार कंठ मालयं। नगोदरं विसालयं ॥
अनाघ हेम पासयं। सु पानि मध्य भासयं ॥ छं० ॥ २५१७॥
कलस्स पानि कंकनं। मनो कि काम अंकनं ॥

रस ॥

.हि आसु मिसि ॥ छं० ॥ २५४२ ॥

नारि घन ॥

माधुर मज्झि मन ॥

ति दून दस ॥

बीनति दासि दस ॥ छं० ॥ २५४३ ॥

प्रमादहि मंद गति ॥

निरूपहि सरद रति ॥

क्रत संकित देव सुर ॥

बिराजित राजहि बार बर ॥ छं० ॥ २५४४ ॥

इन विधि विलसि बिलास असार सु सार किय ॥
टै सुष जोग संजोगि प्रिथी प्रथिराज प्रिय ॥
ज्यों रति संगम मारन जानैं रयन दिन ।
केतकि कुसुम लुभाय रह्यौ मनु भ्रमर मन ॥छं० ॥ २५४५ ॥

सखिपरिहास और दंपतिविलास ।

था ॥ अंबा अंबोह पत्ती । कंतौ कंताय दिट्ठ मा दिट्ठौ ॥
महिला मरम सु मिट्ठौ । पतौ कंताइ इच्छि सिछांइ ॥
छं० ॥ २५४६ ॥

॥ भजै न राज संजोगि सम । अति सुच्छम तन जानि ॥
तब सु सषी पंगानि बर । रची बुद्धि अप्पान ॥ छं० ॥ २५४७ ॥
मधि अंगन नव दल सु तरु । पच मौर घन उट्टि ॥
इक मंजर पर भ्रमर भ्रमि । बास आस रस बिट्ट ॥ छं० ॥२५४८॥
भार भ्रमर मंजरिन मिग । तुटत जानि उटि पंषि ॥
कछु अंतर राजन सुनहि । बोलि बयन दिषि अंषि ॥छं०॥२५४९॥
रस घुट्टत लुट्टत मयन । नन डुलि मंजरि याह ॥
भार भगत कथ्थह सुनी । अलियल मंजरि याह ॥ छं०॥ २५५०॥

(१) ए. कृ. को.-माठुर । (२) ए. कृ. को.-नवध्धुर ।
(३) ए. कृ. को. सिंच्छ, सिछि ।

संजोगि लष्षि सुक्कम सुत
निरषत द्रग संजोगि । गयौ
उदय सूर उठि राज । काज वि
आप पंग प्रोहित्त । दीन सब ब
जे पठई जैचंद । व्याह संजोगि सु
परवेस बिंद कारन न्त्रपति । आए
पंषे सु प्रथ्थ स्रृंगार करि । दीनौ बिधि

व्याह हो जाने पर पृथ्वीराज का प्रोहि पीछे बिदा करना ।

दूहा ॥ हेम हयग्गय अंबरह । दासि सहस सत दीन ॥
प्रोहित पंग सु ब्रह्म रिषि । व्याहु बिद्धि बहु कीन ॥छं०॥२५३८
कवित्त ॥ करिय सु कारन व्याह । दीय दानह विप्रां कवि ॥
प्रोहित पंग नरिंद । तास आदर किन्नौ तबि ॥
ता पच्छै दुअ पष्ष । राषि प्रोहित प्रथिराजह ॥
सत सारद हय सु बर । पंचगज दीन सु राजह ॥
कोटेक द्रव्य दीनौ न्त्रपति । जुगल जुगल हय सध्थ दिय ॥
चहुआन चिंति रा पंग सम । बढ़ी प्रीति आनंद जिय ॥
छं० ॥ २५३८ ॥
दूहा ॥ दयौ द्रव्य संजोगि घन । चलि प्रोहित पुर पंग ॥
प्रथम राज सुअ इंद सम । विविध विविध बढि रंग॥छं॥२५३९ ॥
सुभह रम्य मंडिग न्त्रपति । दिपति दीप दिव लोक ॥
मुकुर मउष अंमृत झरहि । करहिति मनह असोक ॥छं०॥२५४०॥
वय वसंत छिति संकिय । भ्रम सामंत सु जीव ॥
ग्रीषम गड्डि सु पिम्म पह । अम्रत सुधारस पीव ॥छं०॥२५४१ ॥

सुख सौनारे की ऋतु से उपमा वर्णन ।

चंद्रायना ॥ अगर धुम्म मुष गौषह उनयो मेघ जनु ॥
तहय मोर मल्हार निरत्तहि मत्त घन ॥

...ाय आय नग मुत्ति भूप ॥
...ज । दिन्ने सु दत्त वाजिच वाजि ॥
छं० ॥ २५२८ ॥
...म । मत्तौ सु हास रस रास ताम ॥
...सरूप । प्रोषनह काज किय ताम भूप ॥
छं० ॥ २५२९ ॥
...इह अनूप । चौरीस ताम सज्जी सजूप ॥
...मानिक्क रोह । वासनह छादि सम विषम सोह ॥
छं० ॥ २५३० ॥
...इ आसनह ताम । किय विप्र सब्ब सुर मुष्य काम ॥
गावंत चक्क माननि सुभेव । आवरिय भोम भ्रामरिय तेव ॥
छं० ॥ २५३१ ॥
कमधज्ज बीर चंद्रह सु आय । तिहि तब्यौ विवह प्रथिराज राय ॥
नैवेद [1]ताम धन गय तुषार । सम प्रान मुत्ति माला दुसार ॥
छं० ॥ २५३२ ॥
कंसार जाम आहरै राज । वानी [2]अयास सुरताम साज ॥
चब बरस अवर सुर मास जोग । सम सचहु साज्व संजोग भोग ॥
छं० २५३३ ॥
संभरिय बानि आयाम भूप । मन्यौ सु काल बल मनिय कूप ॥
बीवाह सेष सब करिय काज । निसि वास धाम पत्तौ सु राज ॥
छं० ॥ २५३४ ॥

सुहाग रात्रि वर्णन ।

कवित्त ॥ निसावास चहुआन । धाम वर राज सँपत्तौ ॥
सुष सेज्या निसि मध्य । रहसि क्रीड़ा रस रत्तौ ॥
मिलिय सषिय सब नेह । वीस दस अगविय अष्पनि ॥
तिन प्रेरित संजोगि । आनि सम राज ततष्षिन ॥
संग्रहिय पानि संजोगि न्रप । अरोहिय निज तलप वर ॥

(१) ए. कृ. को.-धाम । (२) मो.-अकास ।

बलै सु गाढ़ मुद्रिका । कटी॰
सु कट्टि मेषला भरं । सरीर न॰
तले न रत्त जावकं । सतत्त हंस॰
सु बीर चारु सो रसं । सिंगार म॰
सुगंध ब्रंन छन्नयौ । अभूषनंति भि॰
सु चारु कन्नि भुन्नयौ । नषं सिषंत ड॰

साटक ॥ लज्जमान कटाच्छ लोकन कला, अलप॰
रत्ती रित्त, भया सु प्रेम सरसा, गै हंस बु॰
धीरज्जं च छिमाय चित्त हरनं, गुह्य स्थलं म॰
सीलं नील सनात नीत तनया, षट दून आभूषन॰ ॥

पृथ्वीराज का शृंगार होना ।

दूहा ॥ करि सिंगार प्रथिराज पहु । बंधि मुकट सुभ सीस ॥
मनों रतन कर उप्परै । उयौ बाल हरि दीस ॥ छं॰ ॥ २५२३ ॥

विवाह समय के सुख सारे ।

पद्धरी ॥ सिंगार सकल किय राज जाम । उच्चार बेद किय विप्र ताम ॥
बाजिच बज्जि मंगल अनेव । मानंनि उचारि सागुन्न गेव ॥
छं॰ ॥ २५२४ ॥

जय जया सद्द सद्दं समूह । सामंत सूर सब मिल्लिय जूह ॥
¹बढ्ढाय आव चवरुअ सुहाग । आनंत स्वजन गति उद्द भाग ॥
छं॰ ॥ २५२५ ॥

गुरु राम बेद मंचह उचार । अन्नेक विप्र पढि बेद सार ॥
हय रोहि हंस जंगल नरेस । जय जया सद्द जंप्यौ सु देस ॥
छं॰ ॥ २५२६ ॥

उछरंत द्रव्य अन्नेक मग्ग । गुन तवन एक अन्नेक लग्ग ॥
निद्धरह ग्रह तारनह जाम । यट्ठौ नरेस सम इंद्र ताम ॥
छं॰ ॥ २५२७ ॥

---

(१) ए. वढ्ढाय ।

गाथा ॥ अप्पह आरुहि षंग । मम डरई मत्त देषि झीनंगं ॥
पत्तली षग्ग धारा । हय गय कुंभस्थलं हनई ॥ छं० ॥ २५५१ ॥
जं केहरि नन झीनं । तं गज मत्त जूथयं दलए ॥
नव रमनी रमि राजं । एक पलं जम्म सुष्यांइ ॥ छं० ॥ २५५२ ॥
दूहा । अलिय अलिय-एकत मिलिय । रस सरवर संजोगि ॥
सो कविचंद त्रय बरस रस । पुह प्रगटित रति भोग ॥छं०॥२५५३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके कनवज्ज संयोगिता प्रातिष्ठा पूरन राजा जैचंद दल चूरन सामंत जुद्ध दिल्ली आगनन नाम एकसठवों प्रस्ताव संपूरणम्॥६१॥